हिन्दी मासिक

जिनवाणी

श्री नमस्कार महामन्त्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

वर्ष 59 अंक 5

मई ,2002 वैशाख, 2059

अलंकारों के सौंदर्य शिल्प!

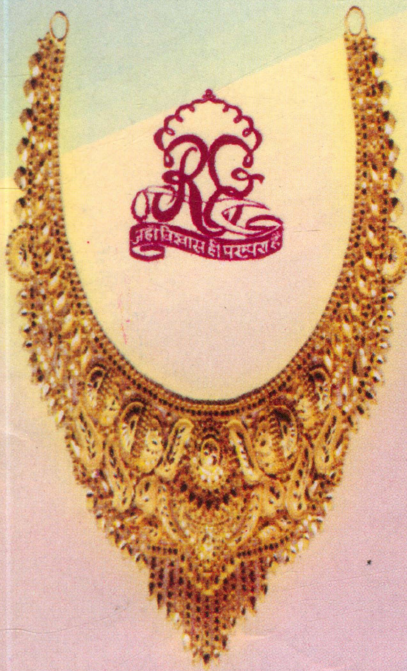

देश के सुविख्यात स्वर्ण आभूषण प्रतिष्ठान
" रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स"
जलगाँव के यहाँ।
सोने - चांदी के यह सुंदर अलंकार शिल्प!

अलंकारों के सैंकडो विविधतम नये नमूने,एक से बढकर एक आकर्षक कलात्मक कारीगरी से सजे अनगिनत डिजाईन्स।

कुंदन-जडाव, मीनाकाम, ऑक्साईड पॉलीश, छिलाई व कास्टीग काम की उच्चतम श्रेणी।

हीरों के आभूषणों की नई विशाल मालिका।

चांदी में बने नये मनमोहक वैभवशाली बर्तन हाजिर स्टॉक में उपलब्ध हैं।

गहनों की 'वापसी विश्वसनीयता' स्पष्ट रूपसे बिल पर और अलंकारों पर भी।

व्यापारियों के लिए सोने गहने एवं चांदी पात्रों की होलसेल बिक्री सेवा शुरू है।

रतनलाल सी.बाफना,ज्वेलर्स

पारस महल
चांदी बर्तन शोरुम
'शुद्ध आहार शाकाहार'

सुभाष चौक जलगाँव
दूरभाष : २२३९०३, २२५९०३,
२२२६२९, २२२६३०

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरुम
डायमंड शोरुम
(रविवार अवकाश)

चेतावनी : हमारी कहीं भी शाखा एवं एजंट नहीं!

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

- **प्रकाशक**
  प्रकाशचन्द डागा
  मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
  दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
  जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 565997
- **संस्थापक**
  श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़
- **सम्पादक**
  डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.
- **सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र**
  3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
  जोधपुर- 342005(राज.)
  फोन नं. 0291-747981
- **सम्पादक मण्डल**
  डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.
- **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
  रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
  डाक पंजीयन सं. RJ2803/02
- **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

किलिन्नगाए मेहावी,
पंकेण व रएण वा।
घिंसु वा परितावेण,
सायं नो परिदेवए ॥
-उत्तराध्ययन सूत्र 2.36

पंक, धूल या ग्रीष्म ताप से,
गीले तन पर मल जमा करे।
परिताप-खिन्न मेधावी मुनि,
साताहित न विलाप करे ॥36॥

मई 2002
वीर निर्वाण सं. 2528
वैशाख, 2059

वर्ष : 59 **अंक** : 5

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन : 562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन / निबन्ध

महावीर को जानें ही नहीं, मानें भी	: महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा.	4
पौषध-व्रत	: न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा	7
महामंत्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्म्य(6)	: श्री जशकरण डागा	11
कैसे बनता है साबूदाना?	: श्री महेश शर्मा	13

विचार / तथ्य

स्तुतिप्रधान से भावना प्रधान प्रार्थना	: सौ. कमला सिंघवी	14
नैतिक जीवन विकास-संकल्प सूत्र	: प्रो. रतन जैन	15
अनमोल विचार	: श्री त्रिलोकचन्द जैन	18
जैन कौन? जो....	: श्री हीरालाल खाब्या	20

कथा / कविता / प्रसंग

यदि चाहो कष्टों से मुक्ति	: मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	6
गुणग्राहकता : सफलता का आधार	: श्री नितेश जैन (नागोता)	6
अहिंसा का ज्ञान	: श्री दिलीप धींग 'जैन'	10
संसार-चक्र	: श्री प्रकाशचन्द जैन 'दास'	16
षट् द्रव्य : अष्टक	: डॉ. महेन्द्र सागर प्रचण्डिया	17
बांधना भी हिंसा	: श्री लालचन्द्र जैन	18

स्तम्भ / अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
साहित्य-समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	19
पाठक-प्रतिक्रिया	: संकलित	21
समाचार-संकलन	: संकलित	23
संक्षिप्त समाचार	: संकलित	39
बधाई	: संकलित	42
श्रद्धांजलि	: संकलित	44
राजनैतिक / राष्ट्रीय समाचार	: संकलित	54
साभार–प्राप्ति–स्वीकार	: संकलित	56

सम्पादकीय

समष्टि पर महावीर का उपकार

डॉ. धर्मचन्द जैन

भगवान महावीर का २६००वाँ जन्म-कल्याणक वर्ष व्यतीत हो गया। इस एक वर्ष में हमने भगवान महावीर के नाम का स्मरण करते हुए जुलूस, सांस्कृतिक कार्यक्रम, संगोष्ठियों का आयोजन किया। अहिंसा स्तम्भ, अहिंसा उद्यान जैसे स्थायी कार्यों की योजनाएँ भी बनाई गई। देश, राज्य, जिला, नगर एवं ग्राम स्तर पर कई कार्यक्रम हुए।

भगवान महावीर को स्मरण करना या उनकी स्तुति करना तभी सार्थक होगा जब हम उनकी शिक्षाओं का उपयोग करें। यह हमने कितना किया, इस पर तनिक दृष्टिपात/ आत्मावलोकन करने की आवश्यकता है। भगवान की शिक्षाओं का उपयोग दो प्रकार से सम्भव है— १. प्रचार-प्रसार के द्वारा २. जीवन में उन्हें स्थान देने/ आचरण के माध्यम से। इन दोनों कार्यों का महत्त्व है। भगवान महावीर की शिक्षाओं से विश्व को परिचित कराने के लिए प्रचार-प्रसार की उपयोगिता है। यह कार्य इस वर्ष में जिस स्तर पर अपेक्षित था, उसका कुछ अंश ही हो पाया है। किन्तु इसके साथ जो दूसरा पक्ष अधिक आवश्यक है, वह कितना हुआ, इस पर वैयक्तिक गहन विचार आवश्यक है। प्रचार-प्रसार से भी अधिक कठिन अपने को बदलना है। ईमानदारी से यदि भगवान महावीर की शिक्षाओं को व्यक्ति एवं समाज/समूह के स्तर पर अपनाया जाय तो उनकी उपयोगिता बढ़ जाती है।

भगवान की शिक्षाएँ व्यक्ति के आत्म-कल्याण के लिए तो उपयोगी हैं ही, किन्तु साथ ही विश्व के वास्तविक कल्याण के लिए भी उनकी उपादेयता है। भगवान महावीर ने जो अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, पुरुषार्थवाद, संयम, तप, आत्मवाद, रत्नत्रय, कर्मवाद और अनेकान्तवाद का उपदेश दिया वह न केवल मानवजाति के लिए, अपितु समस्त प्राणिजगत् के अस्तित्व, सहयोग, समन्वय एवं शान्ति के लिए भी आवश्यक है।

वर्तमान की समस्याएँ तीन भागों में विभक्त हो सकती हैं—१. व्यक्तिगत २. सामूहिक और ३. प्राकृतिक। दुःख, तनाव, निराशा, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, क्रोध आदि की समस्याएँ व्यक्तिगत हैं। पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएँ सामूहिक हैं, जिनमें कलह, हिंसा, लूटपाट, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, पर्यावरण प्रदूषण आदि समस्याएँ सम्मिलित हैं। अनावृष्टि, अतिवृष्टि, भूकम्प जैसी समस्याएँ प्राकृतिक हैं। मानव यदि भगवान महावीर की शिक्षाओं को जीवन में अपनाए तो वह इनमें से बहुत सी समस्याओं पर नियन्त्रण कर सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं। यही महावीर का मानव जाति एवं प्राणिसमूह पर उपकार है।

महावीर को जानें ही नहीं, मानें भी

व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा.

चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के २६०१वें जन्म-कल्याणक दिवस पर जोधपुर के सरदार चिल्ड्रन स्कूल के प्रांगण में आयोजित सामूहिक-साधना कार्यक्रम में उपस्थित जन-समूह को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी द्वारा फरमाया गया संक्षिप्त उद्बोधन। इस उद्बोधन का आशुलेखन श्री नौरतनजी मेहता, जोधपुर ने किया है। –**सम्पादक**

जगत के जहर को जिन्होंने अमृत बनाया था, राग की दुनियां में जिन्होंने विराग का दीप जलाया था, कोटि–कोटि जनता को जिन्होंने समता का पाठ पढ़ाया था, आज उन्हीं भगवान महावीर का जन्म कल्याणक दिवस है।

२६००वर्ष पूर्व भगवान महावीर का जन्म संसार से मुक्त होने के लिए तथा भक्तजनों को सद्बोध देने के लिए हुआ था। भगवान का जीवन गंगा की वह पवित्र धारा है जो पतित को पावन और मृत को अमृत बना देती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आज हमारे पास भगवान महावीर के शब्द तो हैं, लेकिन महावीर का सत्य नहीं, चित्र तो है लेकिन महावीर का चारित्र नहीं, उपदेश तो हैं– उपयोग नहीं। प्रश्न हो सकता है ऐसा क्यों?

हम महावीर को जानते हैं पर मानते नहीं। मानना महत्त्वपूर्ण है। जानना तो मात्र दिमाग की कसरत है। महावीर के बारे में लोग बहुत कुछ जानते हैं। जैसे भगवान का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को वैशाली के राजा सिद्धार्थ के यहां महारानी त्रिशलादेवी की कुक्षि से हुआ। भगवान का जन्म ही नहीं, दीक्षा दिवस भी जानते हैं कि मिगसर बदी दशमी के दिन महावीर स्वामी ने दीक्षा ली। वैशाख शुक्ला दशमी के दिन जृम्भक गांव के बाहर ऋजुबालिका नदी के तट पर शालवृक्ष के नीचे उकडू आसन में और बेले के तप के साथ भगवान ने केवलज्ञान–केवलदर्शन प्राप्त किया। भगवान का चाहे जन्म हो, दीक्षा हो, कैवल्य हो, यह सब जानना हुआ। भगवान का जीवन ही नहीं, उनके सिद्धान्त जानने वाले भी लोग हैं।

आज भगवान महावीर को मात्र जिह्वा पर नहीं, जीवन में बैठाने की जरूरत है। अगर आपको–अपने जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना है तो भगवान महावीर को मन में बैठाना होगा। जिस दिन हम भगवान को अपने दिल में बसा लेंगे उस दिन हमारा दिल दायरा न रहकर दरिया बन जायेगा। अभी हमारा दिल बहुत छोटा है। हम दो हमारे दो ही समा पाते हैं।

आज विश्व को महावीर के सिद्धान्त 'जीओ और जीने दो' की

आवश्यकता है। महावीर को मन्दिर में या तस्वीर में बैठाने की बजाय उन्हें अपने आचार—विचार में लाना चाहिए। तभी विश्व में बढ़ती हिंसा, बढ़ता आतंक और बढ़ती समस्याएँ हल होंगी। समस्याओं का समाधान अणुबम में नहीं, अणुव्रतों में है। महावीर का दर्शन जैनियों के लिए ही नहीं, अपितु समग्र विश्व के प्राणियों के लिए है।

कई लोग कहते हैं जैनी महावीर को पकड़ कर बैठे हैं। कुछ हैं जो कह देते हैं महावीर का युग बैलगाड़ी का युग था। आज तो हम प्लेन के युग में हैं। आज ई—मेल और इण्टरनेट का युग है। आज के इस वैज्ञानिक युग में कई लोग सोचते हैं, महावीर आज के संदर्भ में आउट—ऑफ—डेट हो गये। ऐसा कहने वाले भ्रान्ति में हैं। महावीर न कभी आउट—ऑफ—डेट हुए हैं और न होंगे। वे और उनका सिद्धान्त तो आज भी अप—टू—डेट है। उनके उपदेश ओल्ड नहीं, गोल्ड हैं। उस महापुरुष ने शाश्वत जीवन मूल्यों की स्थापना की। आज जन-जीवन में दुःख, अभाव और अशान्ति है। ऐसे समय में प्रभु महावीर के उपदेश और भी अधिक प्रासंगिक हैं।

भगवान ने आत्मिक सुख और शान्ति के लिए एक सूत्र दिया 'आत्मा ही कर्त्ता है।' भगवान महावीर ने इस विषय में जितना सूक्ष्म और वैज्ञानिक विश्लेषण दिया वह किसी अन्य धर्म में नहीं मिलता। यह बात विज्ञान अब कहता है, पर भगवान ने बहुत पहले कह दिया— एक बूँद पानी में असंख्य जीव हैं। पानी स्वयं जीव है। भगवान महावीर सुपर साइन्टिस्ट थे। जैन धर्म पूर्ण वैज्ञानिक धर्म है।

भगवान महावीर के जीवन के संदर्भ में बहुत कुछ कहा जा सकता है। मेरी एक जिह्वा ही नहीं, असंख्य जिह्वाएँ मिलकर भी भगवान के गुणगान करे, तब भी उनके गुणों का बखान संभव नहीं। आज हम भगवान महावीर का जन्म कल्याणक मना रहे हैं। मैं तो कहूँगी भगवान का जन्म-कल्याणक हम जैसों को जगाने के लिए अलार्म हैं।

हम महावीर जन्म-कल्याण का मात्र आयोजन करके ही न रह जायें। प्रभात फेरी निकाल ली, जुलूस निकाल दिया, झांकियाँ सजा ली, भजन संध्या का आयोजन कर लिया और हमने यहां समूह में आकर एक सामायिक भी कर ली, इतने मात्र से हमारा दायित्व पूरा नहीं होता। इस गौरवशाली पावन—पुनीत दिवस की फलश्रुति जन-जीवन में इस तरह उभरे कि बढ़ती हुई हिंसा, व्यसन और फैशन दूर हों, अन्याय—अभाव दूर हों और इसके लिए सामूहिक प्रयास होने चाहिये। हम पहले स्वयं जगें और फिर जन—जन में महावीर प्रभु के सिद्धान्त प्रचारित करें यही उनके प्रति आत्मिक आस्था की अभिव्यक्ति होगी और यही जीवन का अर्घ्य होगा, इन्हीं शब्दों के साथ.......

यदि चाहो कष्टों से मुक्ति

(तर्ज- जिह्वा पर हो नाम तुम्हारा.....)

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

यदि चाहो कष्टों से मुक्ति, कष्टों का मानो उपकार।
कष्टों से क्या घबराना, ये जीवन के सच्चे उपहार।टेर।।

आर्तध्यान से कर्मबंध है, मिलती नहीं समाधि है
कर्मों के कारण ही आधि, व्याधि और उपाधि है
कर्म उदय में अविचल मन हो, सच्चे सुख का है उपचार।।१ ।।

दोष न दें कष्टों में पर को, जो बोया सो पाना है
पत्थर की ठोकर से पत्थर में, क्या दोष बताना है
जागृत रहे कर्मबंध से तो, यात्रा अपनी है सुखकार।।२ ।।

जहर मिला परदेशी को, पर नहीं किया रानी पर रोष
खंदकजी की खाल उतारी, नहीं निकाला पर में दोष
गजसुकुमाल मुनि ने माना, सोमिल का सच्चा सहकार।।३ ।।

दु:ख से दु:खी बनेंगे तो, नहीं मिलती दु:खों से मुक्ति
भागो ना, समता से भोगो, यही समाधि की युक्ति
घर आए मेहमान यदि तो, नहीं करना रोते सत्कार।।४ ।।

हंसते-हंसते सहना है और सहते-सहते हंसना है।
धूप-छांव सम सुख-दु:ख से, निर्लिप्त सदा ही रहना है।
'गौतम' प्रभु से फरमाते हैं, समभावों को लो स्वीकार।।५ ।।

संकलन–सुमतिचन्द मेहता, पीपाड़ शहर

गुणग्राहकता : सफलता का आधार

संसार में सबसे अधिक सरल हैं,
दूसरों की निंदा-ईर्ष्या, विकथा।
सबसे अधिक कठिन हैं,
निष्पक्ष होकर कहना स्वयं की आत्मकथा।
अवगुणों को देखकर
अवगुणी बनने में क्या सार?
गुणों को कीजिए जीवन में धारण,
गुणग्राहकता ही है सफलता का आधार............

–प्राणिमित्र नितेश नागोता जैन, भवानी मण्डी

पौषध-व्रत

न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा

श्रावक पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रतों का पालन करता है। अणुव्रत और गुणव्रत जीवन में एक बार ग्रहण किये जाते हैं, किन्तु शिक्षाव्रत पुन: पुन: ग्रहण किये जाते हैं जो कुछ समय के लिये होते हैं। श्रावक का तीसरा शिक्षाव्रत "पौषधोपवास" है। इसे प्रतिपूर्ण पौषध भी कहते हैं। पौषधोपवास का अर्थ धर्मस्थान में रहकर उपवास रखना है। पौषध का एक दूसरा अर्थ पोषण भी है क्योंकि पौषध-व्रत से आत्मा को पोषण प्राप्त होता है। पौषधोपवास का अर्थ आत्मा के साथ निवास करना भी होता है। श्रावक सभी प्रवृत्तियों को छोड़कर पौषध में आत्मा का पोषण एवं विकास करने वाले गुणों के साथ रहता है। एक विद्वान के शब्दों में "दोषों से आच्छादित या दोषों में बसी हुई आत्मा को गुणों के साथ जोड़ना और शोधक प्रक्रिया से आत्मा का विशुद्धीकरण करना पौषधोपवास है।" गृहस्थ में रहने वाले श्रावक के लिये पौषध आत्मा की विशिष्ट साधना है। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के अनुसार "पौषध का अर्थ है—आत्मिक गुणों का पोषण करने वाली क्रिया। जिस-जिस क्रिया से आत्मा अपने स्वाभाविक गुणों का विकास करने में समर्थ बने, विभाव परिणति से दूर हो और आत्म-स्वरूप के सन्निकट आए, वही पौषध है।"

पौषध चार प्रकार का होता है— **1. आहार त्याग पौषध**— चारों प्रकार के आहार का त्याग करना **2. शरीर संस्कार त्याग पौषध**— स्नान, मंजन, उबटन, पुष्पमाला और आभूषण आदि का त्याग करना **3. ब्रह्मचर्य पौषध** — मैथुन सेवन का त्याग और सभी इन्द्रियों के वैषयिक सुख का त्याग कर ज्ञान ध्यानादि में रमण करना और **4. अव्यापार पौषध**— आजीविका तथा संसार संबंधी सभी सावद्य योगों का त्याग करना। चार प्रकार के पौषध करने से मन को शांति मिलती है और आत्मा में हलकापन आता है। (ठाणांग सूत्र ४.३)

सामायिक की तरह पौषध के समय स्वाध्याय, श्रवण, वाचन, पृच्छा, अनुप्रेक्षा, स्तुति, स्मरण, ध्यान, प्रतिक्रमण और अनित्यादि भावनाओं का चिन्तन करना चाहिए। पौषध का सारा समय आत्मा को धर्म में लगाकर पूरा करना चाहिए।

जो श्रावक प्रतिपूर्ण पौषध नहीं कर सकें वे देश—पौषध (दशम पौषध) कर सकते हैं। देश पौषध की विधि— १. आहार आदि का देश में (अंशत:) त्याग करना। तिविहार उपवास, आयंबिल, एकाशन आदि करके देश आहार पौषध करना २. हाथ, पाँव, मुँह आदि धोकर या तेल, साबुन आदि लगाकर

शेष शरीर-सत्कार का त्याग करना ३. मन और दृष्टिक्षेप आदि की छूट रखकर देश ब्रह्मचर्य पौषध करना। ४. व्यापार, गृहकार्य आदि की सलाह देने रूप सावद्य व्यापार की छूट रखकर शेष सावद्य व्यापार का त्याग करना।

द्रव्य पौषध— आसन, पुस्तक आदि उपयोगी साधनों को रखकर शेष वस्तुओं का त्याग करना।

क्षेत्र पौषध— स्थानक, उपाश्रय, उच्चार—प्रस्रवण भूमि की मर्यादा रख कर शेष क्षेत्र का त्याग करना।

काल पौषध—यह कम से कम चार प्रहर का, मध्यम चार प्रहर से अधिक का, उत्कृष्ट उपवास के साथ आठ प्रहर या छठ भक्त के साथ सोलह प्रहर तथा अष्टम भक्त के साथ चौबीस प्रहर का होता है। आठ प्रहर से कम वाला पौषध काल से देश पौषध है।

भाव पौषध— राग, द्वेष अर्थात् आर्त्त-रौद्र ध्यान को त्यागकर धर्म-ध्यान में लीन रहना भाव पौषध है।

यहाँ पर यह लिखना आवश्यक समझता हूँ कि भगवती सूत्र १२.१ में दर्ज शंख-पुष्कली प्रकरण के अनुसार भोजन करके पौषध करने से देश पौषध की परिपाटी सिद्ध होती है। देश पौषध करने वाला श्रावक सावद्य व्यापार किसी अंश में खुला रखता है और सर्व पौषध में एक करण एक योग आदि से प्रत्याख्यान करता हो तो उसको सामायिक करना अपेक्षित है। दो करण तीन योग के सर्व पौषध में सामायिक का ही समावेश है।

रत्नकरण्ड श्रावकाचार में यह विधान है कि प्रत्येक मास की दो अष्टमी और दो चतुर्दशी में अपनी शक्ति न छिपा कर सावधानी पूर्वक पौषधोपवास करने वाला पौषध नियम विधायी श्रावक कहलाता है—

"पर्वदिनेषु चतुर्ष्वपि, मासे—मासे स्वशक्तिमनिगूहः।
पौषध नियमविधायी, प्रणधिपरः प्रोषधानशनः।।

पौषध दूषित न हो, इसके लिए पौषध के पूर्व दिन निम्न दोषों से बचना आवश्यक है— १. पौषध के पूर्व दिन ठूँस—ठूँस कर भोजन नहीं करना चाहिए २. पौषध लेने के पहले नख—केश आदि की सफाई नहीं करनी चाहिए। ३. पौषध करना है इसके लिए वस्त्रादि धोना, धुलवाना नहीं चाहिए ४. पौषध के वास्ते शरीर की स्नान वगैरह से सुश्रूषा नहीं करनी चाहिए ५. पौषध के निमित्त आभूषण नहीं पहनने चाहिए।

इन दोषों से बचकर पौषध किया जायेगा तो वह निर्दोष पौषध होगा।

पौषध में लगने वाले दोषों का विवरण देना वांछनीय है—

१. अविरत मनुष्य से अपनी सेवा करवाना
२. शरीर का मैल उतारना
३. बिना पूंजे खाज खुजालना

४. दिन में और प्रहर रात जाने के पूर्व नींद लेना तथा रात्रि के पिछले प्रहर उठकर धर्म-जागरण नहीं करना
५. बिना पूंजे परठना
६. निन्दा अथवा हंसी ठट्ठा करना
७. सांसारिक विषयों की चर्चा करना
८. स्वयं उठना और दूसरों को उठाना
९. क्लेश करना
१०. अयतना से बोलना
११. स्त्री के अंगोपांग देखना अथवा मोहक दृश्य देखना, मोहक राग सुनना, सुगन्ध सूंघना आदि और
१२. सांसारिक संबंध से किसी को पुकारना।

ऊपर बताये गये बारह दोष पौषध लेने के बाद लगते हैं।

पौषध व्रत के पाँच अतिचार हैं जिनको टालना आवश्यक है। वे निम्न हैं—

1. अप्रत्यवेक्षित–दुष्प्रत्यवेक्षित शय्यासंस्तारक— पौषध हेतु उपयुक्त शय्या, बिस्तर आदि का भली प्रकार निरीक्षण नहीं करना। बिछौने, ओढ़ने तथा आसनादि की ध्यानपूर्वक प्रतिलेखना नहीं करना। ठीक तरह से देखभाल न करने से जीव-जन्तुओं के कुचल जाने की संभावना रहती है। इसलिए बिस्तर पर लेटने के पूर्व और सोने के पहले उसे सावधानी पूर्वक देख लेना श्रावक का कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्य की उपेक्षा करने से पौषध व्रत दूषित होता है।

2. अप्रमार्जित-दुष्प्रमार्जित शय्या संस्तारक— पौषध के लिए बिछौने आदि तथा भूमि आदि का प्रमार्जन नहीं करना और करना तो उपेक्षा पूर्वक करना। उपर्युक्त शय्या आदि को अच्छी तरह साफ किये बिना उपयोग करना।

3. अप्रतिलेखित-दुष्प्रतिलेखित उच्चार-प्रस्रवण भूमि— मलमूत्र त्यागने के स्थान का निरीक्षण नहीं करना अथवा अच्छी तरह से न करना। भूमि में रंध्र, छिद्र, दरार या बिल आदि न हो तथा छोटे—मोटे जीव-जन्तु न हों, जीव-जन्तु भूमि के भीतर आश्रय लेकर स्थित होते हैं, उन्हें किसी प्रकार की बाधा न पहुँचे। इस बात का पौषध व्रती को ध्यान रखना चाहिए।

4. अप्रमार्जित–दुष्प्रमार्जित उच्चार-प्रस्रवण भूमि— मलमूत्र परठने के पूर्व उस स्थान को नहीं पूंजना अथवा अच्छी तरह न पूंजना।

5. पौषधोपवास का सम्यक् अपालन (पौषधोपवास सम्यगननुपालनता)— पौषधोपवास का सम्यक् रीति से पालन न करना। निष्क्रिय होकर प्रमाद में समय व्यतीत करना अथवा निरर्थक बातें करना पौषध-व्रत का सम्यक् पालन नहीं है। निद्रा आदि प्रमाद में समय नष्ट करना, यह भी अतिचार है।

उपर्युक्त पाँचों अतिचारों को सावधानी पूर्वक टालना चाहिए। सभी

दोषों से बचना आवश्यक है। पौषध की पूर्ति पर पारने की चपलता नहीं करनी चाहिए। समय पूरा होने के पश्चात् कुछ समय बीतने पर विधिपूर्वक अतिचारों और अन्य दोषों की आलोचना करने के पूर्व पौषध नहीं पारना चाहिए।

पौषध में रहा हुआ श्रावक संसार के आरंभ, परिग्रह तथा अठारह पापों के बोझ से हल्का होकर आत्मीय सुख का अनुभव करता है। पूर्वाचार्यों के अनुसार जो श्रावक सच्ची भावना से शुद्ध प्रतिपूर्ण पौषध का पालन कर विषय-कषाय की गर्मी को शान्त करता है, वह संबोध प्रकरण श्रावकाधिकार गा. १३४ के अनुसार सत्ताईस अरब, सतहत्तर करोड़, सतहत्तर लाख, सतहत्तर हजार, सात सौ सतहत्तर पल्योपम और एक पल्योपम का सप्तनवमांश (२७७७७७७७७७७ ७/९) परिमाण देव भव के आयुष्य का बन्ध करता है।

पौषध व्रत का फल बताते हुए कहा गया है—

"पोसहो य सुहे भावे, असुहाइ खवेइ णत्थि संदेहो।
छिंदेइ नरयतिरियगइं, पोसहविहिअप्पमत्तेणं।।

अर्थात् पौषध करने वाला अप्रमत्त रह कर शुभ भाव से विधिपूर्वक पौषध करे तो उसके सकल दुःख नष्ट हो जाते हैं अर्थात् सद्गति का भाजन बन जाता है।

इस लेख को समाप्त करने के पहले पौषध करने वाले श्रावकों के लिये यह लिखना आवश्यक है कि इस व्रत के समय प्रतिक्षण आत्मा के प्रति सजगता रखें और इसकी आराधना आन्तरिक श्रद्धा और प्रीति के साथ विवेकमुक्त होकर करें। ऐसा करने से आनन्द की अनुभूति होगी, जिससे साधना करने के लिये बार—बार उत्साह बढ़ेगा और लक्ष्य की प्राप्ति हो सकेगी।

—पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय
पूर्व अध्यक्ष, राज्य आयोग, उपभोक्ता संरक्षण, राजस्थान
संरक्षक, अ.भा. जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

अहिंसा का ज्ञान

श्री दिलीप धींग

मिल जाए छोर गर अध्यात्म औ' विज्ञान के।
खूल जाए द्वार अभिनव ज्ञान औ' विज्ञान के।
मिटेगा अज्ञानतम और प्रलय के बादल छटेंगे।
मनुष्य ही हो एक तो क्यों राष्ट्र आपस में बटेंगे?
यह अहिंसा का ज्ञान जब विज्ञान की यात्रा करेगा।
और जब विज्ञान भी इस ज्ञान की यात्रा करेगा।
तब विश्व में होगी परस्पर विश्वसनीयता।
मैत्री समस्त प्राणियों में, प्रकृति—प्रियता।।

— बम्बोरा— 313706, जिला— उदयपुर (राज.)

क्रमशः (6)

महामंत्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्म्य

श्री जशकरण डागा

महामंत्र माहात्म्य का वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक रहस्य

प्राणिमात्र के कल्याण की मंगल-भावना से नित्य अनेक महात्मा, साधक, भक्त आदि 'णमोकार' का अंतरात्मा से उच्चारण करते हैं, जिससे प्रस्फुटित प्रशस्त भाव तरंगों का प्रभाव न केवल श्रोताओं पर वरन् लोक में रहे समग्र प्राणियों पर अप्रत्यक्ष रूप से होता है। इस प्रभाव का वैज्ञानिक आधार जानने हेतु सर्वप्रथम मंत्र के तीन पक्ष जानने योग्य हैं, यथा— १. मंत्र संरचना २. मंत्र प्रसारकर्ता ३. मंत्रोत्पन्न तरंग ग्रहणकर्ता। मंत्र संयोजन के संबंध में कहा गया है—

"अमंत्रमक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधम्।
अयोग्यः पुरुषो नास्ति, योजकस्तत्र दुर्लभः।।"

अर्थात् कोई अक्षर मंत्रविहीन नहीं है, कोई मूल वृक्ष औषधिविहीन नहीं है और कोई व्यक्ति योग्यताविहीन नहीं है। वस्तुतः इनकी उपयोगी योजना बनाकर लाभ प्राप्त करने वाला संयोजक दुर्लभ है। शब्दों के संयोजन से ही ऐसे अनेक मंत्र ग्रथित हैं जिनसे वशीकरण, मारण, उच्चाटन, संतापन, नीरोगत्व आदि की सिद्धि होती है। सर्प का विष हटाना, पेट का वायु गोला ठीक करना, बाह्य बाधाओं को दूर करना आदि भी मंत्र सिद्धि से प्रत्यक्ष देखे जाते हैं। यह सब योजित मंत्रों को सिद्ध किए गए साधक द्वारा प्रसारित तरंगों के आघात से उसी प्रकार सम्पन्न होता है जिस प्रकार टी.वी. के रिमोट कन्ट्रोल की अगोचर तरंगों के आघात से टी.वी. का चैनल, रंग, आवाज आदि बदल दिए जाते हैं। जब सामान्य जड़ अक्षरों से सम्पन्न शब्दों से संयोजित साधारण मंत्र के द्वारा भी हजारों मनुष्य सम्मोहित होते देखे जाते हैं तो फिर जिसका संयोजन, लोक के सारभूत तत्त्वों से हुआ हो, जो अनादि शाश्वत हो, चौदह पूर्व (समग्र ज्ञान) का सार जिसमें निहित हो, उसका अचिन्त्य अनुत्तर फल क्यों न होगा?

यद्यपि निश्चय नयापेक्षा से एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कुछ भी कर्ता-धर्ता नहीं है, तथापि जिस प्रकार विद्युत के धनात्मक (Positive) और ऋणात्मक (Negative) जड़ प्रवाह के तार अपने स्वभाव में रहते हैं तब तक कुछ नहीं होता है। किन्तु वे जब परस्पर मिलते हैं तो बल्ब जल उठते हैं, कारखाने चलने लगते हैं और विस्फोट हो जाते हैं। बस इसी प्रकार से पुद्गल

(जड़) और आत्मा (चेतन) अपनी वैभाविक शक्ति से परस्पर जुड़कर अजब-गजब के काम कर बैठते हैं। इसी के परिणामस्वरूप यह आत्मा नरक से स्वर्ग तक चौरासी लाख योनियों में, पाप-पुण्य अर्जित कर परिभ्रमण करता रहता है।

जिस प्रकार जीव के साथ बद्ध अशुभ जड़ कर्मों को दूर करने में उनका उद्वर्तन, अपवर्तन, उपशमन, उदीरणा, निर्जरा आदि करने के लिए शुभ भावयुक्त परमाणुओं की सक्रियता की आवश्यकता रहती है तथा जिस प्रकार मैले कपड़े से मैल निवारणार्थ साबुन की उपयोगिता रहती है, ठीक इसी प्रकार ऐसे शुभ भावयुक्त परमाणुओं को सक्रिय करने हेतु महामंत्र णमोकार की उपयोगिता अनुत्तर है। त्रियोग साधनापूर्वक इस महामंत्र के जाप से उत्पन्न कम्पन अपने प्रशान्तभाव स्वरूप के साथ ध्वनि तरंगों पर आरोहित हो, क्षणमात्र समय में सम्पूर्ण लोक में अपना प्रभाव व उद्देश्य प्रसारित कर देते हैं। यही कारण है कि निश्चित समय पर सिद्ध साधक णमोकार या मंगल पाठ (चत्तारि मंगलं) बोलकर हजारों किलोमीटर दूर रहे रोगियों को रोग से मुक्त कर देते हैं।

जिस प्रकार चन्द्रमा की अगोचर तरंगें निश्चित कोण पर, विशाल समुद्र को भी उद्वेलित कर देती हैं, इलेक्ट्रोमेगनेटिक की अगोचर तरंगें, अन्तरिक्ष में भेजे गए रॉकेट को पृथ्वी पर से ही नियंत्रित कर लेती हैं, उसकी यांत्रिक खराबी को भी दूर कर देती हैं, मोबाइल फोन विश्व के किसी भी कोने में बात करा सकता है, ठीक इसी प्रकार मांगलिक मंत्रों की अगोचर तरंगें, चेतन प्राणी के मानस पर तथा उसकी कार्मण वर्गणाओं पर आघात करके उसके आत्म प्रदेशों पर लगे कर्मावरणों को हटा सकती हैं, बदल सकती हैं। किन्तु यह सब निर्भर करता है संयोजित मंत्र पर, मंत्र प्रयोगकर्ता पर तथा मंत्र श्रवणकर्ता की योग्यता पर।

महामंत्र जाप प्रक्रिया– आजकल अनेक स्थानों पर इसका सामूहिक जाप होने लगा है। किन्तु यह महामंत्र प्रदर्शन रूप नहीं, दर्शनप्रधान है। अतः विशुद्ध श्रद्धाभक्ति पूर्वक परमेष्ठी के गुणों का चिन्तन करते हुए निर्दोष विधि से इसका जाप किया जाना चाहिए। जाप में माइक, गाजे, बाजे, धूप, दीप, पुष्पादि व हरित काय की झाँकियों का प्रयोग उचित नहीं है। रात्रि में एक प्रहर के पश्चात् जाप उच्च स्वर में भी नहीं किया जाना चाहिए। अविधि या सदोष पद्धति से जाप स्वपर के लिए एक प्रकार से कभी-कभी ताप व संताप का कारण हो जाता है। अतः आत्मार्थियों को त्रियोग शुद्धि के साथ मात्र आत्म विशुद्धि के लिए जाप निरवद्य शान्त स्थान पर यथासंभव संवर, सामायिक सहित व यतना एवं विवेकपूर्वक सम्यग् श्रद्धाभक्ति के साथ करना चाहिए। **(क्रमशः)**

–संघपुरा मौहल्ला, टोंक (राज.)

कैसे बनता है साबूदाना?

महेश शर्मा

वर्तमान के गतिमान जीवन में खानपान की चीजों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। प्रदूषण युक्त वातावरण के चलते तरह-तरह की बीमारियों ने मनुष्य को घेर लिया है। प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, खाद्य पदार्थों का असुरक्षित रख रखाव और खाद्य पदार्थों की घिनौनी व लापरवाही पूर्ण निर्माण-प्रक्रिया एक वृहद् चिन्ता का विषय है।

आज पाश्चात्त्य देशों में शाकाहार को बढ़ावा मिला है, लेकिन हमारे भारतवर्ष में मांसाहार और फास्टफूड का जो प्रचलन चरम सीमा पर है, नि:सन्देह चिन्ता का विषय है।

खाद्य पदार्थों में कुछ वस्तुएँ ऐसी हैं जिनका समाज में फलाहार के रूप में बड़ी रुचि के साथ प्रयोग किया जाता है, लेकिन अगर उनके निर्माण की प्रक्रिया पर नजर डालें तो ऐसी वस्तुओं को देखने मात्र से घृणा होने लगेगी। आमतौर पर साबूदाना को फलाहार माना जाता है। इसका उपवास के दिनों में व्यापक उपयोग होता है। यह सही भी है, क्योंकि साबूदाना सकरकंदी के गूदे से बनाया जाता है, किन्तु उसके निर्माण की प्रक्रिया इतनी हिंसक और घिनौनी है कि न तो हम उसे स्वास्थ्यप्रद ही कह सकते हैं और न ही फलाहार।

गोंडल सम्प्रदाय की साध्वी महासती जसूमती बाई अपने भ्रमण प्रवास के दौरान दक्षिण भारत में तमिलनाडु राज्य के सेलम क्षेत्र में गई। सेलम क्षेत्र में साबूदाना उद्योग सुविकसित उद्योग है। वैसे तो चेन्नई और कोयम्बटूर के बीच साबूदाने के कारखाने आते हैं, लेकिन अकेले सेलम में लगभग २५० फैक्ट्रियाँ साबूदाने की हैं। इन कारखानों में कोई दो-ढाई किलोमीटर की दूरी से ही दुर्गन्ध का दौर शुरु हो जाता है। संयोगवश साध्वी जसूमती बाई को एक फैक्ट्री के गेस्ट हाउस में ठहरना पड़ा। जिज्ञासावश फैक्ट्री में साबूदाना निर्माण प्रक्रिया को देखने के बाद वे सोचने को विवश हो गयीं कि क्या साबूदाना खाने के योग्य है? साध्वी जसूमती बाई ने वह जो देखा उसके अनुसार न तो साबूदाना चावल से बनता है, न किसी पौधे के फलों अथवा बीज से। इसका निर्माण सकरकन्द से किया जाता है। तमिलनाडु के इस क्षेत्र में सकरकन्द की खेती भारी मात्रा में की जाती है, जिनका उपयोग साबूदाना निर्माण में होता है।

सकरकन्द की ऋतु में कारखाने वाले इसे खरीदकर इकट्ठा कर लेते हैं और बाद में इसका मावा बना लेते हैं। मावा बनाने की प्रक्रिया बहुत ही लोमहर्षक है। तैयार गूदे को खुले मैदान में ४० X ५० फुट की कुण्डियों में डाल दिया जाता है और उसे कई महीनों तक सड़ाया जाता है। इस तरह हजारों

टन गूदा इन कुण्डियों में खुले आसमान के तले पड़ा रहता है। रात में कुण्डियों पर बड़े-बड़े बल्ब जलाये जाते हैं, जिसके कारण अनेक जहरीले जीव-जन्तु सकरकन्द के गूदे में गिर कर दम तोड़ देते हैं।

दूसरी ओर गूदे में पानी डालते रहते हैं, फलस्वरूप उसमें सफेद रंग की करोड़ों लम्बी-लम्बी लटें (इल्ली) पड़ जाती हैं, ठीक वैसे ही जैसी प्रायः संडास की गटरों में उत्पन्न होती है। इतना ही नहीं, बाद में छोटे-छोटे श्रमिक बच्चों को इन कुण्डियों में उतारा जाता है। पैरों से रोंदने की प्रक्रिया में लटें मर जाती हैं। यह प्रक्रिया चार-छह महीनों तक बार-बार चलती है, तत्पश्चात् गूदे को निकालकर मशीनों में डाला जाता है, जो साबूदाने के रूप में बाहर निकलता है। सुखाये जाने के पश्चात् इन पर ग्लूकोज और स्टार्च से बने पाउडर की पालिश कर आकर्षक बनाया जाता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि साबूदाने के निर्माण में भारी जीव-हिंसा होती है, परिणामस्वरूप यह फलाहार तो हो ही नहीं सकता है। सच मानें तो इसके निर्माण की उपर्युक्त वर्णित प्रक्रिया इतनी घिनौनी है कि इसे खाद्य पदार्थ मानना ही गलत होगा।

—साभार : Vegetarian Guide, June/July 2001

स्तुति प्रधान से भावना प्रधान प्रार्थना

सौ. कमला सिंघवी

प्रार्थना आत्मा के लिए शान्ति देने वाली है। स्तुति-प्रधान प्रार्थना करने से साधक के चित्त में सर्वप्रथम अपने प्रार्थनीय के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो जाने पर उसके अन्तःकरण में इस प्रकार की भावना उत्पन्न होती है– प्रभो! आपके अन्दर जो अनन्त ज्ञान है, अनन्त दर्शन है, अनन्त शक्ति है व अनन्त सुख है वह मेरी आत्मा में भी आविर्भूत हो।

इस स्तुतिप्रधान प्रार्थना से साधक भावना-प्रधान प्रार्थना में जाता है एवं विचार करता है– भगवन! इस संसार में उच्च से उच्चकोटि का जो सुख है तथा ऊँची से ऊँची जो स्थिति है वह आपके भीतर है। प्रभो! जीवन के साध्य को आपने प्राप्त किया है। अनन्त, असीम, अक्षय, अव्याबाध, आनन्द का शीतल स्रोत आपकी आत्मा में प्रवाहमान है। उसके रहते संसार के किसी भी पदार्थ की आवश्यकता नहीं रहती। ऐसी भावना जब अन्तःकरण में प्रकट होती है तब साधक भवज्वालाओं की भीषणता से मुक्त होने के प्रयासों से आगे बढ़ता हुआ वीतरागता की साधना में तत्पर हो जाता है।

—स्वाध्यायी ज्ञान मन्दिर, जैन पाठशाला, भड़गांव (महा.)

भगवान महावीर के दीक्षा कल्याणक के पावन प्रसंग पर प्रस्तुत
नैतिक जीवन विकास संकल्प सूत्र

१. मैं अरिहन्त, सिद्ध प्रभु के प्रति दृढ़ आस्थावान रहते हुए स्वयं को 'अरिहन्त-सिद्ध' की शरण में अर्पित करता हूँ। वे मेरे आराध्य देव हैं।

२. मैं सभी संयमी साधु, साध्वियों का सम्मान करूँगा। उनके साधना-जीवन में संयम, त्याग, नैतिकता के विकास में जहाँ पर भी सहयोग की आवश्यकता हुई, मैं सदैव उस हेतु तत्पर रहूँगा। उनके गुणों के विकास के लिए तत्पर रहूँगा।

३. मैं चैतन्य जगत् में सभी के साथ मैत्री और प्रेमपूर्ण व्यवहार करूँगा और किसी के अधिकार को नहीं छीनूँगा।

४. मैं स्वयं और मेरे परिवार को व्यसनमुक्त रखूँगा और शाकाहार का दृढ़ता से पालन करूँगा।

५. मैं प्रतिस्पर्धा की जगह परस्परता को अपने व्यवहार का मूल बिन्दु बनाऊँगा।

६. मैं आय की साधन-शुद्धि का भरपूर प्रयास करूँगा। महावीर द्वारा वर्जित उपक्रम जैसे जीव-जन्तु का भोजन के लिए व्यापार, चमड़े-सिल्क का व्यापार, नशीले पदार्थों का व्यापार आदि नहीं करूँगा।

७. झूठे माप-तौल या मिलावट या नकली माल का काम नहीं करूँगा।

८. पर्यावरण रक्षा की दृष्टि से पेड़ न काटने, जल और वायु को दूषित न होने के हर संभव उपाय, आर्थिक बोझ उठाकर भी करूँगा।

९. कर्मचारी, अधिकारी, उपभोक्ता, ग्राहक, व्यापारी, भागीदार या शेयरहोल्डर सबके साथ मानवोचित एवं न्यायोचित व्यवहार करूँगा।

१०. अपरिग्रह की ओर लक्ष्य रखते हुए, सम्पत्ति और आय का विसर्जन करता रहूँगा। दान का प्रतिशत बढ़ती उम्र के साथ बढ़ाता रहूँगा।

११. आतंकवादी एवं सम्प्रदायवादी कार्यों से दूर रहूँगा, औरों को दूर रखने का प्रयास करूँगा।

१२. कानून और व्यवस्था के साथ मैं समाज, राष्ट्र और मानवता को सदैव समर्पित रहूँगा।

१३. अपनी आवश्यकताओं, इच्छाओं, लक्ष्यों को अपने जीवन उत्कर्ष के लिए मैं स्वयं निश्चित सीमाओं में बाँधूँगा और स्वयं निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन नहीं करूँगा।

१४. रूढ़ि से हटकर स्वाध्याय एवं चिन्तन-मनन द्वारा अर्जित विवेक से सम्यक् दृष्टि द्वारा अपना आचरण अलंकृत करता रहूँगा।

१५. दान शील, तप और भावना के द्वारा गृहस्थ श्रावक के लक्ष्यों/मनोरथों को प्राप्त करूँगा।

— प्रो. रतन जैन, महासचिव

भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव समिति, दिल्ली

संसार चक्र

श्री प्रकाशचन्द्र जैन 'दास'

स्थिर तथा शाश्वत कभी रहता नहीं संसार है।
सुख यहां मिलता नहीं दुःखों का पारावार है।।
कौनसा वह कर्म है जग में जिसे करता रहूँ।
फिर नहीं मैं दुर्गति में कभी पड़ता रहूँ।।
कुछ क्षणों का सुख देते काम एवं भोग हैं।
चिर समय तक दुःख देते अल्प सुख संयोग हैं।।
दुष्कर्म बन्धन हेतु हैं सत्कर्म में व्यवधान हैं।
मुक्ति पथ विरोध में अनर्थ की यह खान हैं।।
कदली विटप को देखिये चहुं ओर से चित्त ध्यान से।
कुछ सार मिल पाता नहीं है उसमें रस अवसान से।।
तथैव विषयों के रमण में सुख नहीं रहता कदा।
अन्तिम स्थिति दुःख पूर्ण ही रहती है उसकी सर्वदा।।
सुर भूप आदि को जो सुख हैं, प्राप्त इस संसार में।
परमार्थतः वे दुःख ही हैं पूर्ण तथ्य विचार में।।
उस क्षणिक सुख में निहित 'दारुण' सदा परिणाम हैं।
नित्य उस से दूर रहना ही सुखद शुभ काम है।।
खुजली का रोगी ज्यों नहीं निज कष्ट को पहचानता।
तन को खुजलाते समय बहु सुख उसमें मानता।।
वैसे ही मानव जगत् में जो मोह से व्याकुल रहें।
काम द्वारा जनित दुःख सुख भावना से ही गहें।।
भोगों में मन अनुरक्त कर नर आत्मा दूषित करे।
निज हित तथा श्रेयस में वह विपरीत बुद्धि भी धरे।।
कर्म बन्धन में विवश वह जीव पड़ता सर्वथा।
लिप्त होकर श्लेश्मा में मक्षिका तड़पे यथा।।
जन्म एवं जरा-मरण दुःख मनुज सारे जानता।
चिन्तर करे किन्तु विवश निज को सदा वह मानता।।
इसलिये विरक्त विषयों से वह हो पाता नहीं।
ग्रन्थि कपट की दृढ़ अहो! कितनी है जग में सब कहीं।।
युक्त परिणामों से सारे जीव संसारी रहे।
परिणाम से फिर कर्म बन्धन युक्त सविकारी रहे।।
संसार में आवागमन हो कर्म-बन्धन से सदा।
चारों गति में भ्रमण उससे जीव का होता तदा।।

जन्म लेकर जीव तब तन भी उसी कारण धरे।
इन्द्रियों को प्राप्त कर उनके विषय धारण करे।।
राग एवं द्वेष का विषयों से होता जन्म है।
फल रूप उस के जीव करता पाप मय दुष्कर्म है।।
इस हेतु से जग जीव को उत्पन्न जो होती कामना।
जग भ्रमण कारण बने उससे सदा भन भावना।।
जिनवर प्रभु का कथन है क्रम यह अनादि अनन्त है।
उपलब्ध सम्यग्दृष्टि से किन्तु अनादि सान्त है।।
जन्म दुःख है जरा दुःख है, जगत के व्यवहार में।
रोग एवं मृत्यु भी दुःख पूर्ण है संसार में।।
इस सकल जग में अहो! सर्वत्र दुःख ही व्याप्त है।
इस चक्र में जग जीव करता क्लेष निर्मम प्राप्त है।।

— 12 सी.डी. आदर्श नगर, आलम बाग, लखनऊ–226005

षट् द्रव्य : अष्टक

विद्यावारिधि डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया
एम.ए., पी.एच.डी., डी. लिट्.

गुण समूह ही द्रव्य है,
षट् द्रव्यों का योग।
है संसार जहाँ चले
जन्म-मरण संजोग।।१।।

जिसमें चेतन शक्ति हो,
कहलाता वह जीव।
निज कर्मों के व्याज से,
धरता रूप सदीव।।२।।

जीव रहित निर्जीव है,
पुद्गल द्रव्य कहाय।
क्षण-क्षण में वह बदलता,
मूल रूप रह जाय।।३।।

धर्म चलाये जगत् को,
अधरम से ठहराव।
दोनों की अनिवार्यता,
यही सनातन भाव।।४।।

खाली पन आकाश है
कुछ भी वहाँ समाय।
आगम का स्वागत यहाँ,
जो चाहे आ जाय।।५।।

काल द्रव्य से अवधि है,
जीवन का आधार।
काल सहित संसार है,
काल रहित निस्सार।।६।।

षट् द्रव्यों में व्याप्त है,
व्यय, ध्रुव औ उत्पाद।
परम विरोधी परस्पर,
करते जग आबाद।।७।।

महिमा द्रव्यों की बड़ी,
इन्हें समझिये मित्र।
इनकी सत्ता जगत् में,
छाई है सर्वत्र।।८।।

—मंगल कलश, 394, सर्वोदय नगर, आगरा रोड, अलीगढ़–202001

क्रमशः 2

बांधना भी हिंसा

श्री लालचन्द्र जैन

वंस देश के कुंडिजी गांव में मिहिर नामक श्रावक रहता था। उसने अपने गुरुजी से जीव वध न करने का अणुव्रत ग्रहण किया था। उसके यहां कई नौकर थे। उनमें से एक नौकर आलसी, झूठ बोलने वाला, लुच्चा, उद्धत एवं बहुत नींद लेने की आदत वाला था। एक दिन मिहिर ने इस नौकर को रात में घर की चौकीदारी करने का काम सौंपा। वह थोड़ी देर तो जागता रहा, पर जैसे ही लोगों का आना जाना बंद हुआ और गली में स्तब्धता छा गई, वह इधर–उधर देख कर सो गया।

आधी रात को वहाँ चोर आये। उन्होंने देखा कि चौकीदार नहीं है, अतः सेंध लगाकर चोर घर में घुस गये। दीवार तोड़ने की आवाज से मिहिर जाग गया। उसे महसूस हुआ कि कहीं से ठंडी हवा आ रही है। वह सोचने लगा कि घर चारों ओर से बंद है, फिर ठंडी हवा कहां से आ रही है? वह धीरे धीरे घर की सब दीवारों को टटोलने लगा। एक दीवार में उसे बहुत बड़ा छेद दिखाई दिया जहाँ से ठंडी हवा घर में आ रही थी। वह समझ गया कि चोर इसी छेद से घर में घुसे हैं और घर का कीमती सामान, जेवर, नकदी, आदि चुराने के लिये इकट्ठे कर रहे हैं।

चोर कहीं मुझे मार न डाले इस भय से वह घर की छत पर चढ़ गया और चोर–चोर चिल्लाने लगा। शोर सुनकर आस–पास के लोग आ गये, किन्तु चोर पिछले दरवाजे से भाग निकले। इतना हो हल्ला होने पर भी चौकीदार सोता ही रहा। लोगों ने मिहिर से पूछा ''यह कौन इतनी गहरी नींद में सो रहा है? मिहिर बोला ''यह तो मेरा ही चौकीदार है।'' लोगों ने कहा ''वाह! अद्भुत नौकर है! तुम धन्य हो!

मिहिर को गुस्सा आ गया और उसने नौकर को कस कर बांध दिया। कठोर बंधन से नौकर के मुँह से खून गिरने लगा तब लोगों ने उसे छुड़वाया। यद्यपि नौकर मरा तो नहीं, पर मिहिर को अपने व्रत में बंध का अतिचार लग गया।

—10/595, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर

1. एक ही पत्थर से दो बार ठोकर खाना लज्जास्पद है।
2. दृष्टि बदलना ही सृष्टि बदलने का सक्रिय प्रकटीकरण है।
3. गुण ग्राहकता का भाव विशेष रूप से मानव में ही आता है।
4. वासना का त्याग सुख रूपी वृक्ष की जड़ है।
5. अपनी अज्ञानता का आभास ज्ञान का प्रथम सोपान है।
6. सत्य की ओर ले जाने वाला प्रथम प्रशस्त मार्ग कठिनाइयाँ है।

—श्री त्रिलोकचन्द जैन, जलगांव (महा.)

साहित्य समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

First Steps to Jainism (Part Ist & Part IInd)— *Sancheti & Bhandari,* **Publisher**—*M. Sujan mal Ugam Kanwar Sancheti Trust (Sumcheti Trust) Alka, D-121, Shastri Nagar, Jodhpur,* **Pages**—*260,* **Price** *Rs.400/-, $10.00,* **year** *2002*

संचेती आसूलालजी और भण्डारी माणकमलजी की यह कृति पूर्व प्रकाशित दो भागों का संयुक्त संस्करण है, जिसे भगवान महावीर के २६००वें जन्म कल्याणक वर्ष में बृहद् आकार में प्रकाशित किया गया है। प्रथम भाग का यह चौथा एवं द्वितीय भाग का यह दूसरा संस्करण है। इन दोनों भागों का पाठकों द्वारा स्वागत किये जाने से इसे संयुक्त रूप में प्रकाशित किया गया है।

पुस्तक के प्रथम भाग में ६ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय Groundwork में जैन धर्म का सामान्य परिचय देते हुए पुस्तक की योजना स्पष्ट की है। शेष पाँच अध्यायों में क्रमशः षड् द्रव्यों (Six Substances), सात तत्त्वों (Seven Fundamentals), त्रिरत्नों (Three Jewels), अहिंसा, संयम एवं तप रूप धर्म लक्षण (Three Hall marks) तथा पंच परमेष्ठी (Five Worships) का वर्णन है। प्रस्तुतीकरण सरल भाषा में है। प्रारम्भिक अंग्रेजी पाठकों को इस पुस्तक से जैन धर्म के आचार एवं तत्त्वदर्शन का कुछ अंशों में बोध हो जाता है।

पुस्तक के द्वितीय भाग में दो तरह के लेख हैं। पाँच लेख तो स्वयं के हैं तथा ६ लेख प्रसिद्ध लेखकों के संगृहीत हैं। स्वयं के लेखों के विषय हैं— कर्म सिद्धान्त (Doctrine of Karma), चौदह गुणस्थान, पाँच शरीर, अनेकान्तवाद और पंच समवाय। प्रसिद्ध लेखकों के आलेख परिशिष्ट के रूप में दिए गए हैं, उनका क्रम है— १. डॉ. ग्लासनेप—Doctrine of Karma in Jain Philosophy, २. प्रो. आर. जिमरमन की पुस्तक—Doctrine of Karma in Jain Philosophy का प्राक्कथन, ३. डॉ. डी.एस. कोठारी—Modern Physics and Syadvad, ४. प्रो. पी.सी. महलानोबिस— The Indian-Jaina Dialectic of Syadvad in Relation to Probability, ५. प्रो. जे.बी.एस. हल्दाने—The Syadvada System of Predication, ६. डॉ. नथमल टाटिया— अनेकान्तवाद।

यह दूसरा भाग कर्मसिद्धान्त, अनेकान्तवाद, स्याद्वाद पर अच्छी सामग्री प्रस्तुत करता है। गुणस्थान, शरीर एवं पंच समवाय की चर्चा भी पाठकों के ज्ञान में वृद्धि करती है। यह दूसरा भाग प्रथम भाग की अपेक्षा अधिक प्रौढ एवं उपयोगी है।

इस पुस्तक की एक और विशेषता है कि इसमें जैन कला, मूर्ति,

मन्दिर, चित्रकला आदि से सम्बद्ध ३२ चित्र आर्ट पेपर पर दिए गए हैं।

लेखक ने जिनवाणी के पाठकों को यह पुस्तक **50 प्रतिशत छूट** के साथ उपलब्ध कराने का वादा किया है।

स्वाध्याय पद संग्रह- प्रकाशक- श्री शान्तिलाल वनमाली दास शेठ फाउण्डेशन, दया शान्ति, 2212, 9वीं ए मेन रोड, तीसरा ब्लॉक, जयनगर, बैंगलोर-560011, पृष्ठ 180, मूल्य स्वाध्याय।

जैन विद्वान श्री शान्तिलाल जी वनमालीदास शेठ की पावन स्मृति में उनके परिवार के सदस्यों ने स्वाध्याय पद संग्रह पुस्तक का प्रकाशन किया है। इसमें मंगल-पाठ, स्तुति-पाठ, पूजन-पाठ, आलोचना-पाठ, भक्ति-पाठ संकलित हैं। गुजराती में भी भक्ति पाठ दिये गये हैं। स्वाध्याय करने के लिए पद्यबद्ध इस पुस्तक में कई उपयोगी भजन, स्तुतियां आदि हैं।

जैन कौन? जो..........

जिह्वा पर नियन्त्रण रखता है।
मृदुभाषी होता है।
समयानुकूल हँसता है।
कटुवाणी से दूर रहता है।
बड़ों की आज्ञा का पालन करता है।
साधु का आदर करता है।
मेहमान का सत्कार करता है।
सबसे प्रेम रखता है।
किसी पर क्रोध नहीं करता है।
छल-कपट से दूर रहता है।
सत्य का समर्थक होता है।
सहनशील होता है।
निर्धनता में भी खुश रहता है।
भूख से कम खाता है।
दौलत पाकर गर्व नहीं करता है।
सदा परिश्रम करता है।
हिंसा, हास्य से दूर रहता है।
चोरी व लोभ नहीं करता है।
शोक, संताप नहीं करता है।
सदाचारी व सरल होता है।
हितकर वचन बोलता है।
जीवन में ईमानदारी रखता है।
इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखता है।
राग-द्वेष से दूर रहता है।
किसी की आलोचना नहीं करता है।
पक्षपात के जाल से दूर रहता है।
छुआछूत नहीं करता है।
अनेकान्त की दृष्टि रखता है।
गुमराह को सही रास्ता बताता है।
दयालु होता है।
धैर्यवान व निर्भयी होता है।
धन के मोह से बचता है।
सम्पूर्ण विश्व में शान्ति चाहता है।
लोगों को अज्ञान से बचाता है।
निःस्वार्थ एवं परोपकारी होता है।
आत्म-साधक होता है।
त्याग की भावना रखता है।
झूठी शान से बचता है।
नाम के लिये कुछ नहीं करता है।
शत्रुओं से शिक्षा लेता है।
भूल स्वीकार करता है।
संतोषी होता है।
शत्रुओं से भी नम्र बोलता है।

प्रस्तोता– हीरालाल खाब्या
बापू नगर, सेंथी, चित्तोड़गढ़

पाठक-प्रतिक्रिया

जिनवाणी पत्रिका मैं गत तीन वर्षों से बराबर पढ़ रहा हूँ और मुझे प्रसन्नता है, मेरे पत्रों को भी इस पत्रिका में 'पाठक प्रतिक्रिया' के रूप में स्थान प्राप्त हुआ। सबसे बड़ा लाभ जो मुझे मिला इस पत्रिका से वह यह कि मेरी प्रतिक्रियाओं से प्रबुद्ध वर्ग के अनेक लोगों ने मुझे सीधे लिख कर मेरा प्रोत्साहन बढ़ाया— जिसने मेरे सम्पर्क को विस्तृत किया, उसके लिये 'जिनवाणी' का उपकार।

अनायास ही मुझे 'जिनवाणी' का "सम्यग्दर्शन विशेषांक" १९९६ पढ़ने को मिला। इसे पढ़ने से सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान संबंधी शंका का निवारण भी हुआ। विशेषांक में सम्यग्दर्शन की गहन चर्चा है।

इसी विशेषांक में 'मूर्तिपूजा एवं देव-देवियों संबंधी मिथ्यात्व' पर श्री बिरधीलाल सेठी का लेख भी पढ़ा जो दिल को झकझोरने वाला था और उन्होंने स्पष्ट किया कि जैन समाज किस तरह से लोक मूढ़ताओं के जाल में फंस गया है। तथ्यपरक लेख होने से इसकी गरिमा बढ़ी है और वास्तविकता सामने आती है। समाज में सावधानी बरतने और मिथ्या बातों को दूर करने के उद्देश्य से इस प्रकार के लेखों का पुनः प्रकाशन आवश्यक है, जिससे हमारे साधु वर्ग, ज्ञानी लोग एवं पंडितों कीं आँखें खुल सकें। आशा है आप इस दिशा में विचार करेंगे, जिससे अंधविश्वासों पर करारी चोट हो सके।

—घेवरचन्द गोदीका, जयपुर

लेखक दुलीचन्द जैन को प्राप्त पत्र

'जिनवाणी' के दिसम्बर अंक में आपका आलेख 'आधुनिक विश्व में अहिंसा की प्रासंगिकता' पढ़कर मुग्ध हो गया। आपने अत्यंत नवीन और अद्यतन संदर्भों में अहिंसा का यश उद्घाटित किया है। आप की स्वाध्याय प्रवृत्ति स्वतः स्पष्ट है। इस लेख में कई नये तथ्य हैं, जिनसे इसकी विशिष्टता स्वतः स्पष्ट और प्रमाणित है। मेरी बधाई स्वीकार करें।

'अहिंसा निउणा दिट्ठा' ग्रन्थ में मैंने भी अहिंसा पर लिखा था। वह ग्रंथ आपके पास होगा। आपका लेख उसी शृंखला में नवीन गवाक्ष खोलता है।। आशा है आप सपरिवार प्रसन्न हैं। **—कल्याणमल लोढ़ा, कोलकाता**

जिनवाणी की सम्पादकीय का काम बहुत ही अच्छे ढंग से कड़ी मेहनत से कर रहे हैं, जो बहुत ही सराहनीय काम है। यह बहुत ही खुशी व गौरव की बात है कि हमें आप जैसे सम्पादक मिले। जिनवाणी पत्रिका की खुशबू चारों तरफ महक रही है। इसमें लेख, कविता, विचार, स्तम्भ बहुत ही सुन्दर होते हैं। पत्रिका का हमेशा हमें इन्तजार रहता है। कृपया आप पत्रिका ५ तारीख तक पहुंच सके, ऐसी कोशिश करावें। जिनवाणी पत्रिका का हमेशा बेसब्री से इन्तजार रहता है। **—बी.दुलीचन्द बोहरा, चेन्नई**

जैनागम विशेषांक पर अभिमत

जैनागम-साहित्य विशेषांक जिनवाणी का चार मासीय अंकों का निचोड सचमुच स्वयं आगम बन गया। स्वाध्याय की ठोस वजन वाली सामग्री का अद्भुत दस्तावेज। बहुत-बहुत बधाइयां स्वीकार करें।

— डॉ. महेन्द्र सागर प्रचण्डिया, अलीगढ़ (उ.प्र.)

जिनवाणी का आगम विशेषांक पढ़ा। यह विशेषांक निश्चित ही एक संग्रहणीय विशेषांक है। इस विशेषांक में आपने गागर में सागर भरने का भागीरथी प्रयास किया है। उसके लिए बधाई।

आप जिनवाणी के अन्य अंकों में 'बृहत्कल्पसूत्र' एवं 'व्यवहार सूत्र' को विस्तृत रूप में प्रकाशित करने की कोशिश करें ताकि साधु—साध्वियों के लिए स्वीकृत उत्सर्ग एवं अपवाद तथा प्रायश्चित्त लेने की विधि का ज्ञान स्वधर्मी बंधुओं को हो सके एवं वे साधु-साध्वियों के विशुद्ध श्रमणाचार के पालन में सहयोगी बन सकें तथा अपने ज्ञान को अधिक विस्तृत कर सकें।

एक बार पुन: उत्कृष्ट विशेषांक हेतु बधाई। **—मनीष लोढ़ा, जोधपुर**

जिनवाणी के जैनागम विशेषांक प्रकाशन पर बहुत बहुत बधाई। यह अंक महत्त्वपूर्ण इसलिए भी है कि इसमें जैनागमों में जैन धर्म—दर्शन विषयक सामग्री का ही निरूपण नहीं किया गया है, अपितु जीवनधर्मिता से जुड़े अन्य विषयों और मानव मूल्यों से संबंधित बड़ी ही खोजपूर्ण और उपयोगी जानकारी दी गई है। इससे लगता है कि मनुष्य के आचार, विचार, राग रंग, कला संस्कृति तथा प्रकृति और पौरुष से जन जीवन कितना समृद्ध और रसमय था। ये सब उसके जीवन के आवश्यक उपजीव्य थे जिनसे वह सांगोपांग बना रहता था। **—डॉ. महेन्द्र भानावत, उदयपुर**

पक्खी दिवस

वैशाख शुक्ला १४, शनिवार, २५ मई २००२
ज्येष्ठ कृष्णा १४, रविवार, ९ जून २००२
ज्येष्ठ शुक्ला १५, सोमवार, २४ जून २००२

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

वैशाख शुक्ला ८, सोमवार, २० मई २००२— आचार्य भगवन्त पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. की ११वीं पुण्य तिथि

वैशाख शुक्ला १०, बुधवार, २२ मई २००२— भगवान महावीर केवल कल्याणक एवं संघ स्थापना दिवस।

ज्येष्ठ कृष्णा ५, शुक्रवार, ३१ मई २००२— आचार्यप्रवर १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का १२वाँ आचार्य पद दिवस।

ज्येष्ठ कृष्णा ६, १ जून २००२—पूज्य श्री कुशलचन्द्र जी म.सा. पुण्य-तिथि

समाचार-संकलन

आचार्यप्रवर का आगामी चातुर्मास बालकेश्वर-मुम्बई में

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने संवत् २०५९ सन् २००२ हेतु निम्नांकित चातुर्मासों की घोषणा साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ की है:—

१. बालकेश्वर-मुम्बई— परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा।

२. होलनांथा (महा.)— परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा।

३. पालासनी (राज.)— मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ठाणा २

४. धनारीकलां (राज.)— सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा

५. पाली मारवाड़ (राज.)
६. मेड़ता सिटी (राज.) > शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का महासती मण्डल

७. तोंडापुर (महा.)— व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा।

८. अहमदाबाद (गुजरात)—तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा

९. जरखोदा (राज.)— व्याख्यात्री महासती श्री नि:शल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा।

आचार्यप्रवर ने १७ अप्रेल को श्री जैन भवन, घोटी में लासूर स्टेशन खाली नहीं रहेगा ऐसी घोषणा की है। इस घोषणा से लासूर स्टेशन का चातुर्मास स्वीकृत हो चुका है। आचार्यप्रवर किस महासती मण्डल को लासूर स्टेशन भेंजेगे, यह अन्य क्षेत्रों के चातुर्मास की घोषणा से स्पष्ट होगा।

विहार की संभावित दिशाएँ

- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ ने धर्मधरा घोटी से ८ अप्रेल को मुम्बई की ओर विहार किया जिनके अक्षय तृतीया पूर्व भायन्दर पधारने की संभावना है।

- परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., श्री मंगलमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ३ का इगतपुरी में २३ अप्रेल को नवदीक्षित संतरत्न श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. की बड़ी दीक्षा कराने के पश्चात् चातुर्मासार्थ होलनांथा पधारने की दृष्टि से नासिक क्षेत्र में विहार चल रहा है।

- मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. ठाणा २ पालासनी से महावीर जयन्ती पूर्व पाली पधारे हैं, जिनके

अभी कुछ समय पाली विराजने की संभावना है।

- सेवाभावी श्री नन्दिषेण जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ का २३ अप्रेल को नवदीक्षित संतरत्न श्री बलभद्रमुनि जी म.सा. की बड़ी दीक्षा पश्चात् से मुम्बई की ओर विहार चल रहा है।
- साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ पावटा, सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ३ घोड़ों का चौक तथा शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा ४ नेहरूपार्क जोधपुर में विराजित हैं।
- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ खींवसर से ग्रामानुग्राम विहार करते हुए १७ अप्रेल को नागौर पधारे हैं, जिनके अभी नागौर विराजने की संभावना है।
- शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा १३ भोपालगढ़ विराज रहे थे। उनमें से महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा ४ भोपालगढ़ से नागौर पधारे। उनके पुनः भोपालगढ़ पदार्पण के पश्चात् व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ भोपालगढ़ से जोधपुर पधारे। नवदीक्षिता महासती श्री वृद्धिप्रभा जी महासती श्री ऋद्धिप्रभा जी, महासती श्री सिद्धिप्रभा जी म.सा. ने जोधपुर विराजित साध्वीप्रमुखा सहित सभी महासती मण्डलों के दर्शन कर महावीर जयन्ती पश्चात् पुनः भोपालगढ़ के लिए विहार किया और २ मई को महासती मण्डल का शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती जी की सेवा में पहुंचना हुआ है। आचार्यप्रवर ने पाली और मेड़तासिटी चातुर्मास स्वीकार किए है अतः भोपालगढ़ से निकट भविष्य में अलग–अलग संघाड़ों में विहार की संभावना है।
- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७ जलगांव विराजित हैं और तोंडापुर चातुर्मास की घोषणा से यथासमय विहार की संभावना है।
- व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ का १७ अप्रेल को नेहरूपार्क, जोधपुर स्थानक से विहार हुआ और पाली क्षेत्र फरसते अहमदाबाद चातुर्मास की स्वीकृति के कारण पाली से १ मई को सिरोही की ओर विहार हुआ है।
- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ६ नासिक रोड़ फाल्गुनी चौमासी पर पधारे थे, तब से उस क्षेत्र में विचरण चल रहा है।
- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ३ गंगापुर सिटी विराज रहे थे जिनका पल्लीवाल क्षेत्र में विचरण चल रहा है।

- व्याख्यात्री महासती श्री निशल्यावती जी म.सा. आदि ठाणा ३ महावीर जयन्ती पूर्व औद्योगिक नगर कोटा पधारे थे, कोटा से बूंदी– सवाईमाधोपुर क्षेत्र की ओर विहार की संभावना है।
- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४ बड़ी दीक्षा पश्चात् भोपालगढ़ से विहार कर जोधपुर पधारे। जोधपुर से पाली, मारवाड़ जंक्शन, सोजत रोड़, राणावास आदि क्षेत्रों एवं मेवाड़ अंचलों को पावन करते मध्यप्रदेश के अंचलों में विचरण कर रहे हैं। महासती मण्डल के महाराष्ट्र पधारने की भावना है।

आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि संत–सतीवृन्द के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है और विचरण–विहार सुख शान्तिपूर्वक चल रहा है।

अत्यन्त सादगी के साथ मुमुक्षु श्री सुराना जी की दीक्षा

महाराष्ट्र की धर्मधरा घोटी में झाक (बिलाड़ा, राज.) के मुमुक्षु श्रावक श्री बाबूलाल जी सुराणा ने बुधवार, चैत्र शुक्ला द्वितीया चतुर्थी, १७ अप्रेल २००२ को रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज सा. के मुखारविन्द से प्रातः ११.१५ बजे पावन प्रव्रज्या का पाठ अंगीकार किया। गुरुभक्त श्रद्धानिष्ठ सेवाभावी स्वाध्यायी सुश्रावक श्री सुराना जी ने संयम-पथ पर आरोहण अत्यन्त सादगी से किया। दीक्षा महोत्सव की न पत्रिका छपी, न पत्र-पत्रिकाओं में समाचार प्रेषित किये गये और न ही शोभायात्रा जैसे कार्यक्रम रखे गए। आडम्बरविहीन दीक्षा के इस कार्यक्रम में सम्मिलित दो हजार लोगों को सुखद आश्चर्य हुआ कि एक सम्पन्न परिवार का आत्मार्थी श्रावक संयम पथ पर इस प्रकार भी अग्रसर हो सकता है। बीस थोकड़ों के ज्ञाता श्री सुराना साहब अधिकतर समय सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर और ज्ञान-ध्यान की साधना में बिताते थे। परिवारजन इस समय चेन्नई में रहते हैं। इस अवसर पर आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि संत–मुनिराजों ने संयम के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित जन समुदाय का आह्वान किया कि आप संयम को जीवन में उतारें।

इस पावन प्रसंग पर श्री मानमल जी सुराणा, चेन्नई, श्री पारसमल जी सुराणा, चेन्नई और श्री पन्नालाल जी चोरड़िया, घोटी ने आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से सपत्नीक आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का नियम ग्रहण कर भागवती दीक्षा की महती अनुमोदना की। घोटी श्रीसंघ ने आत्मीयतापूर्ण आतिथ्य सत्कार के साथ आगत श्रीसंघों एवं श्रद्धालुओं की आवास-भोजनादि की समुचित और सुन्दर-व्यवस्था करके दीक्षा महोत्सव का अलभ्य लाभ उठाया।

नवदीक्षित सन्तरत्न की बड़ी दीक्षा चैत्रशुक्ला एकादशी, मंगलवार, २३ अप्रेल २००२ को इगतपुरी में उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से सम्पन्न हुई। बड़ी दीक्षा के पश्चात् आपका नाम बलभद्र मुनि रखा गया।

महाराष्ट्र की धरा धन्य हो उठी

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर १००८ पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर प. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्तों एवं आज्ञानुवर्ती महासतियों के विचरण से महाराष्ट्र की धरा में सामायिक—स्वाध्याय, व्यसनमुक्ति, व्रताराधन आदि आध्यात्मिक प्रवृत्तियों में निरन्तर जागृति एवं अभिवृद्धि हो रही है। धुलिया चातुर्मास के पश्चात् १९ दिसम्बर २००१ को आचार्यप्रवर कान्ति केबल फैक्ट्री से खेड़ा पधारे। खेड़ा से कुसुम्बा, नेर, देऊर, म्हसदी, दातर्ती होते हुए २९ दिसम्बर को साक्री पधारे। फिर ग्रामानुग्राम विहार करते हुए ताहाराबाद पधारे, जहां २७ जनवरी २००२ को आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का ९२वाँ जन्म-दिवस तप-त्याग पूर्वक अति उल्लास के साथ तेला, बेला, उपवास, एकाशन, दया-पौषध आदि तप-त्याग के साथ जलगांव, धूलिया, नासिक, लासूर, साक्री, कसारा, देऊर, म्हसटी, पिंपलनेर, जायाखेडा, सोमपुर आदि स्थानों के श्रावकों की उपस्थिति में मनाया गया।

पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने गुरुदेव आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के गुणों का विवेचन करते हुए अनेक प्रसंगों के माध्यम से बताया कि उस महापुरुष में ज्ञान व क्रिया का अनूठा संगम था और इसीलिए वे विभिन्न संघ सम्प्रदायों के महापुरुषों एवं वरिष्ठ श्रावकों के प्रेरणास्रोत व श्रद्धा केन्द्र थे।

ताहराबाद २९ जनवरी को युवक वर्ग में एवं ३० जनवरी को श्रावक वर्गमें दयाव्रत की आराधना हुई। ५० बारहव्रती तैयार हुए। ताहराबाद से जायखेड़ा, द्याने, नामपुर और वड़नेर में धर्म प्रभावना करते हुए वड़ेल में कृष्णा दशमी की मौनव्रत साधना सम्पन्न की। ८ फरवरी को विहार कर रावलगांव, तलवाड़े, लखमापुर, ब्राह्मणगांव होकर सटाणा पधारे। यहां घोटी के संघपति श्री किशनलाल जी पींचा ने फाल्गुनी चौमासी की विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की। सटाणा से १७ फरवरी को विहार कर लोहोनेर होते हुए देवला पधारे। यहां आचार्यप्रवर के प्रवेश के समय प्रायः सभी घरों से श्रावक—श्राविका एवं युवा वर्ग अगवानी में उपस्थित हुआ। यहां ५ दिन विराजे। श्री जवरीलाल जी लुंकड़, देवला एवं श्री घेवरचन्द जी संचेती, श्रीरामपुर वालों ने शीलव्रत स्वीकार किया। दिन में महिलाओं ने एवं रात्रि में पुरुष वर्ग ने महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. से ज्ञानचर्चा कर अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। १२ श्रावकों ने बारहव्रत स्वीकार किये। देवला से २३ फरवरी को मटाणे पधारे, जहां ५० भाई—बहनों ने विहार सेवा का लाभ लिया। २४ फरवरी को मटाणे से कलवण पधारे जहां मुम्बई युवक संघ के कार्यकर्ता श्री धर्मेन्द्र जी लोढ़ा, श्री विरेन्द्र जी जैन, श्री प्रवीण जी कर्णावट ने दर्शन वन्दन एवं सामायिक लाभ के साथ मटाणे से कलवण तक विहार सेवा का लाभ लिया। यहां २ भाइयों, श्री अचलचन्द जी संचेती एवं श्री भंवरलाल जी बुरड़ को शीलव्रत एवं ६ बहनों को बारहव्रत अंगीकार कराते हुए सायंकाल विहार कर कोल्हापुर फाटे पर बांध

कार्यालय में रात्रि विश्राम किया। फिर नान्दुरी, पायरपाड़ा होते हुए २७ फरवरी को वणी पधारे। वणी में २० व्यक्तियों को धर्मस्थान में सामायिक करने के नियम कराये। यहां पर लासलगांव एवं लासूर स्टेशन के संघ सदस्य चातुर्मास की विनती लेकर उपस्थित हुए। वणी से ५ मार्च को विहार कर ढिण्डोरी पधारे। यहां माणकचन्द जी चोरड़िया आदि कई सेवाभावी श्रावक हैं। फिर मोहाड़ी, ओझरमिग, आडगांव होते हुए १३ मार्च को नासिक रोड़ पधारे। यहां फाल्गुनी चौमासी का पर्व उपवास, पौषध, दयाव्रत एवं सामायिक साधना के साथ उत्साह पूर्वक मनाया गया। यहां पर तोण्डापुर, देई, सवाईमाधोपुर, अलीगढ़ रामपुरा आदि स्थानों के श्रावक संघ चातुर्मास की विनती लेकर उपस्थित हुए। महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ६ एवं महासती श्री चेतना जी आदि ठाणा ३ ने पूज्य आचार्य प्रवर से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान किया। ३१ मार्च को यहां के धर्मस्थानक में आचार्य श्री की प्रेरणा से बृहद् स्तर पर सामायिक का आराधन हुआ। यहां से विहार कर नासिक शहर सिड़को होते हुए ४ अप्रेल को घोटी पधारे। घोटी में १७ अप्रेल को दीक्षा सम्पन्न हुई। दीक्षा के अनन्तर आपका विहार इगतपुरी होकर भायन्दर की ओर हुआ है।

रत्नवंश सूर्य, आगम मर्मज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, वाणी के जादूगर आचार्य भगवंत ने प्रभावी प्रवचन प्रभा से आकृष्ट कर भाई-बहनों को धर्म से जोड़ा है। युवा वर्ग में उत्साह जगाया है। धर्म के प्रति अभिरुचि वर्द्धमान की है। छोटे-बड़े सभी ग्राम नगरों को फरसकर सामायिक–स्वाध्याय की प्रेरणा की है। विचरण क्षेत्र के अधिकांश ग्रामों में स्थानक में आकर भाई बहन सामायिक करने लगे हैं। बड़े छोटे प्रत्याख्यानों के साथ महाराष्ट्र प्रांत को अमृतमयी जिनवाणी वर्षा कर आप्लावित कर रहे हैं।

मेवाड़ क्षेत्र, मंगल देश और पल्लीवाल क्षेत्र में धार्मिक प्रचार-प्रसार

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं स्वाध्याय संघ शाखा उदयपुर के तत्त्वावधान में २० से २५ जनवरी २००२ तक मेवाड़ क्षेत्र के बडा महुआ, नेवरिया, पहुंना, राश्मी, कपासन, सुरपुर, भादसोड़ा, नवाणिया, खेरोदा, डूंगला, बोहेड़ा, प्रतापगढ़, भीलवाड़ा आदि स्थानों पर धार्मिक प्रचार–प्रसार किया गया।

मंगलदेश के हनुमानगढ़, केसरीसिंहपुर, करणपुर, पदमपुर, गोलुबालामण्डी, अबोहर, जैतोमण्डी, बरनाला, मानसा, पीखी, बुढलाडा, बरेठा, जाखल, मुणक, टोहाना, रतिया, सरदूलगढ़, रोडी, खैराकला, फतियाबाद, सिरसा, रानीयां, मण्डी डबवाली, खिवाली, कालावाली, रामामण्डी, मोडमण्डी, भटिण्डा आदि स्थानों पर श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं स्वाध्याय संघ शाखा मंगलदेश (पंजाब, हरियाणा, राजस्थान) के तत्त्वावधान में १४ से १८ मार्च २००२ तक प्रचार–प्रसार किया गया।

८ से १२ अप्रेल २००२ तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं स्वाध्याय संघ शाखा पल्लीवाल क्षेत्र के संयुक्त तत्त्वावधान में पल्लीवाल क्षेत्र के अलवर, बडेर, बाराभडकोल, मौजपुर, हरसाना, लक्ष्मणगढ, खौह, मण्डावर, रसीदपुर, महुवा, बौण, बरगमा, वर्द्धमाननगर हिण्डौन सिटी, बयाना, पहरसर, डेहरामोड, नदबई, खेरली आदि स्थानों पर धार्मिक प्रचार—प्रसार किया गया।

प्रचार—प्रसार में २८ नये स्वाध्यायी बनाने के साथ स्थानीय शिविर लगाने, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में बैठने, सामूहिक प्रार्थना व सामायिक—स्वाध्याय करने आदि की प्रेरणा की गई।

सुशीला बोहरा — संयोजक

रिखबचन्द मेहता — सचिव

जलगाँव में प्रत्येक रविवार को साढ़े सात सौ सामायिक

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज सा. के सन् २००० के जलगाँव चातुर्मास में 'जैन स्वाध्याय भाऊ मण्डल' की स्थापना हुई थी, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक रविवार को सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम चलाया जाता है। प्रातः ७.३० से ८.३० बजे तक जैन स्वाध्याय भवन में चलने वाले इस कार्यक्रम में ७५० से अधिक भाई भाग ले रहे हैं। एक वेशभूषा में कतारबद्ध बैठकर शुद्ध सामायिक की साधना के दृश्य को देखकर हृदय गद्‌गद् हो जाता है। संघ के अनेक गणमान्य धर्मप्रेमी भाई प्रतिदिन २०-२५ घरों में जाकर सर्वे करते हैं तथा लोगों को सामायिक में आने की प्रेरणा करते हैं। परिणामस्वरूप संख्या निरन्तर बढ़ रही है। मण्डल की ओर से सामायिक उपकरण बेग तैयार किए गए हैं, जिनमें धोती, उपरना, मुँहपत्ती, माला, पूंजनी, आसन एवं मण्डल की पुस्तक प्रत्येक सदस्य को दी जा रही है।

परमपूज्य आचार्यप्रवर की प्रेरणा से प्रारम्भ साप्ताहिक सामूहिक सामायिक से समाज में नई चेतना का संचार हो रहा है। आचार्य श्री के चातुर्मास की यह अविस्मरणीय उपलब्धि है। आचार्य श्री गाँव-गाँव और घर-घर में सामायिक-साधना का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। **—प्रकाशचन्द जैन, प्राचार्य, महावीर स्वाध्याय विद्यापीठ, जलगाँव।**

बजरिया सवाईमाधोपुर में साप्ताहिक सामूहिक सामायिक

बजरिया (सवाईमाधोपुर)— रत्नवंशीया महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में २८ मार्च २००२ को फाल्गुनी चौमासी का कार्यक्रम बहुत ही उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। निकटवर्ती क्षेत्रों से सैकड़ों श्रावक— श्राविका उपस्थित हुए। महासती जी की प्रेरणा से बजरिया में दैनिक सामूहिक प्रार्थना तथा सामूहिक साप्ताहिक सामायिक का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, जो नियमित चल रहा है। ३० मार्च से ३ अप्रेल तक धार्मिक शिक्षण शिविर भी आयोजित हुआ, जिसमें ३५ शिविरार्थियों को जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग—२ का विस्तृत अध्ययन कराया गया। **—पदमचन्द जैन, मंत्री**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

घोड़ों का चौक, जोधपुर - 342 001 (राज.), फोन - 0291 - 630490

परीक्षा - परिणाम एवं आगामी परीक्षा

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा ०६ जनवरी २००२, रविवार को आयोजित की गयी कक्षा पहली से नवमीं तक का परीक्षा परिणाम घोषित किया जा चुका है। विभिन्न कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पाने वालों की योग्यता सूची इस प्रकार है —

जैन धर्म परिचय (पहली कक्षा)

रोल नं.	नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	कक्षा में स्थान
२६२८	सौ.मीना चौपड़ा	अहमदाबाद	१००	प्रथम
३५९४	सौ. मंगला गादिया	औरंगाबाद	१००	प्रथम
३१५	सौ. निर्मला बोहरा	पुनमल्ली (चैन्नई)	९९.५	द्वितीय
१८६६	सौ. रेखा डागा	हाँगकाँग	९९	तृतीय
१८६८	सौ. सुनिता लुणावत	हाँगकाँग	९९	तृतीय
३२०	सौ. सिरदार कवाड़	पुनमल्ली (चैन्नई)	९९	तृतीय
५६१०	कु. दिपाली लुणावत	औरंगाबाद	९९	तृतीय

जैन धर्म प्रवेशिका (दूसरी कक्षा)

रोल नं.	नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	कक्षा में स्थान
२८३६	सौ. अलका गांधी	भाईन्दर	१००	प्रथम
५३६०	सौ. कुसुम कटारिया	विरार (मुंबई)	९९	द्वितीय
४८७१	सौ. वर्षा बागमार	वैजापुर (महा.)	९८	तृतीय
१२६३	सौ. सन्तोषबाई सोनिगरा	पेरम्बुर (चैन्नई)	९८	तृतीय
१२८६	सौ. ललिताबाई डागा	पेरम्बुर (चैन्नई)	९८	तृतीय

जैन धर्म प्रथमा (तीसरी कक्षा)

रोल नं.	नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	कक्षा में स्थान
१९५१	सौ. धनवंती चौधरी	धुलिया (महा.)	९९	प्रथम
१३१७	सौ. कौशल्या सिंघवी	पुनमल्ली (चैन्नई)	९८	द्वितीय
१६९७	डॉ. सुरेशचंद कावड़िया	जलगांव (महा.)	९७	तृतीय

जैन धर्म मध्यमा (चौथी कक्षा)

रोल नं.	नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	कक्षा में स्थान
३७८	कु. सपना संकलेचा	चैन्नई	९७	प्रथम
४०१५	सौ. वीणा मुथा	पाली	९६	द्वितीय
१२०४	सौ. शारदा बरोला	नागान्नलूर (चैन्नई)	९३	तृतीय

जैन धर्म चन्द्रिका (पाँचवी कक्षा)

रोल नं.	नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	कक्षा में स्थान
३८०	सौ. शकुन्तला संकलेचा	चैन्नई	९८	प्रथम
५४२४	कु. स्वीटी जैन	ब्यावर	९६	द्वितीय
५४२३	कु. मीनु कावड़िया	ब्यावर	९४	तृतीय

जैन धर्म विशारद (छठी कक्षा)

रोल नं.	नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	कक्षा में स्थान
२०८३	सौ. कविता चोरड़िया	बैंगलोर	९६	प्रथम
६००२	श्री प्रकाश सालेचा	जोधपुर	९५	द्वितीय
५६५६	सौ. विमल कोठारी	जामनेर (महा.)	९४	तृतीय

४८१५	सौ. चन्द्रा मुणोत	मुंबई	९४	तृतीय

जैन धर्म कोविद (सातवीं कक्षा)

३३२०	सौ. लीलाबाई सांडेचा	शिरपुर (महा.)	९५	प्रथम
४०१९	सौ. सरोज सांड	पाली	९३	द्वितीय
४०१७	सौ. सुभद्रा धारीवाल	पाली	९२	तृतीय

जैन धर्म भूषण (आठवीं कक्षा)

३२१६	सौ. किरण कोठारी	बोदवड़ (महा.)	९१	प्रथम
११६०	राजेन्द्र सांखला	चैन्नई	९०	द्वितीय
११६१	अमरचंद छाजेड़	चैन्नई	८८	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर – पूर्वार्द्ध (नवमी कक्षा)

४४७९	सौ. कुमकुम जैन	सवाईमाधोपुर	८८	प्रथम
४९४५	कु. सुनिता कोठारी	पीपाड़ शहर	८४	द्वितीय
४४७८	सौ. मंजू जैन	सवाईमाधोपुर	८१	तृतीय

देश विदेश (हांगकांग) के १६८ केन्द्रों पर आयोजित परीक्षा में कुल ३९४६ परीक्षार्थियों ने भाग लिया। कक्षावार एवं श्रेणीवार परीक्षा परिणाम इस प्रकार है –

कक्षा	कुल परीक्षार्थी	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	कुल उत्तीर्ण	प्रतिशत
जैन धर्म परिचय (पहली)	2313	874	495	397	1766	76.35
जैन धर्म प्रवेशिका (दूसरी)	880	259	235	191	685	77.84
जैन धर्म प्रथमा (तीसरी)	421	235	104	51	390	92.63
जैन धर्म मध्यमा (चौथी)	104	47	27	14	88	84.61
जैन धर्म चन्द्रिका (पाँचवी)	103	32	31	22	85	82.52
जैन धर्म विशारद (छठी)	59	36	16	5	57	96.61
जैन धर्म कोविद (सातवीं)	28	19	7	1	27	96.42
जैन धर्म भूषण (आठवी)	21	11	6	4	21	100
जैनसिद्धान्त प्रभाकर (नवमीं)	17	5	1	10	16	94.11
योग	**3946**	**1518**	**922**	**695**	**3135**	**79.44**

धन्यवाद – उन सभी परीक्षार्थियों को जिन्होंने ४००० की संख्या का कीर्तिमान पूर्ण करने का बोर्ड को सुअवसर प्रदान किया। परीक्षार्थियों ने श्रेष्ठ अंक प्राप्त किये एवं ज्ञानवर्धन भी किया।

आभार – केन्द्रअधीक्षक, निरीक्षक, प्रश्नपत्र निर्माता, उत्तरपुस्तिका जाँचकर्ता एवं परीक्षा आयोजन में प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष सहयोग देने वाले सभी महानुभावों का बोर्ड आभारी है, जिनके भरपूर सहयोग से बोर्ड अपनी परीक्षाएँ विधिवत् सम्पन्न करा सका।

कृतज्ञता –पुस्तक प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देने वाले उदारमना महानुभावों को, पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराने वाले विद्वान लेखक – स्वाध्यायियों को, जिनके

अभूतपूर्व सहयोग से कक्षा प्रथम से दसवीं तक की पुस्तकें बोर्ड प्रकाशित कर सका।

<u>आह्वान</u> –आगामी परीक्षा २८ जुलाई २००२, रविवार दोपहर १२ से ३ बजे तक कक्षा प्रथम से दसवीं तक के लिये आयोजित होगी। आवेदन पत्र जमा कराने की अंतिम तिथि ३१ मई २००२ है। हमारा आप सभी से आह्वान है कि इस बार परीक्षार्थियों की संख्या ९००० तक पहुँचाने में आप अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग एवं प्रेरणा करावें, आप भी परीक्षा में अवश्य भाग लें, ऐसा विनम्र अनुरोध।

विमला मेहता	**नवरतन डागा**	**धर्मचन्द जैन**
संयोजक	सचिव	रजिस्ट्रार

जैन धर्म की सर्वोत्तम पुस्तकों पर एक लाख रुपये के दो पुरस्कार

भगवान महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई ने भगवान महावीर के २६००वें जन्म-कल्याणक महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में जैन धर्म एवं दर्शन की सर्वोत्तम पुस्तकों पर दो लाख रुपये पुरस्कार स्वरूप प्रदान करने का निर्णय लिया है।

1. हिन्दी भाषा में लिखित सर्वोत्तम पुस्तक : एक लाख रुपये
2. अंग्रेजी भाषा में लिखित सर्वोत्तम पुस्तक : एक लाख रुपये

पुस्तक में भगवान महावीर के सार्वभौमिक सिद्धान्तों का आधुनिक ढंग से प्रतिपादन तथा वर्तमान युग की समस्याओं के समाधान में उनकी उपयोगिता का निरूपण अवश्य किया जाना चाहिए। पुस्तक की पृष्ठ संख्या (मुद्रित पृष्ठों में) २५० से अधिक नहीं होनी चाहिए। पाण्डुलिपि की ६ प्रतियाँ (ए–४ साइज में) एक तरफ टाइप करवाकर जमा करानी होगी। पुस्तक का सारांश भेजने की तिथि २८ फरवरी थी, किन्तु पुस्तक प्राप्ति की तिथि ३०.११.२००२ है। पुरस्कार सन् २००३ में प्रदान किया जाएगा। इस पुरस्कार के अतिरिक्त फाउण्डेशन अपनी इच्छानुसार ऐसी अन्य कृतियों को, यदि योग्य पायी गई तो रु. ५००००/– प्रत्येक के दो और पुरस्कार भी प्रदान कर सकती है।–**दुलीचन्द जैन, संयोजक, पोस्ट बाक्स नं. 2983, 11, पोन्नप्पा लेन, ट्रिप्लिकेन हाई रोड, चेन्नई–600005**

'अहिंसा' शीर्षक की श्रेष्ठ पुस्तक पर ५१०००/- रुपयों का पुरस्कार

श्री दिगम्बर जैन साहित्य संस्कृति संरक्षण समिति ने भगवान महावीर के २६००वें जन्म-कल्याणक महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में 'अहिंसा' शीर्षक की श्रेष्ठ पुस्तक पर ५१०००/– रु. का पुरस्कार प्रदान करने का निर्णय किया है। इस पुस्तक में किसी विशेष जैन सम्प्रदाय का प्रस्तुतीकरण नहीं होना चाहिए। पुस्तक में भगवान महावीर के सार्वभौमिक सिद्धान्तों का आधुनिक ढंग से प्रतिपादन तथा वर्तमान युग की समस्याओं के समाधान में उसकी उपयोगिता आदि का प्रतिपादन अवश्य किया जाना चाहिए। पुस्तक मौलिक तथा अप्रकाशित होनी चाहिए, लेखक को पुस्तक की मौलिकता का प्रमाण.पत्र भी भेजना होगा। पुस्तक की अनुमानित पृष्ठ.संख्या २०० से अधिक नहीं होनी चाहिए। पुस्तक की पाण्डुलिपि की ६ प्रतियाँ(ए–४ साइज में) एक तरफ टाईप कराकर ३० अक्टूबर २००२ तक जमा

करानी होगी। पुरस्कार सन् २००३ में मिलेगा। **सम्पर्क–श्री रवि कुमार जैन, श्री दिगम्बर जैन साहित्य संस्कृति संरक्षण समिति, डी–302, विवेक विहार, दिल्ली–110095, दूरभाष– 2152244**

ताडपत्रों पर आगमलेखन कार्य जारी

ताडपत्रों पर लेखन का युग नहीं रहा, किन्तु आगमों की रक्षा हेतु, आचार्य श्री विजय रामचन्द्रसूरीश्वर जी, गच्छाधिपति आचार्य श्री विजयमहोदय सूरीश्वर जी आदि के आशीर्वाद से आचार्य श्री विजयगुणयशसूरीश्वर जी महाराज के शिष्यरत्न आचार्य श्री विजयकीर्तियशसूरीश्वर जी महाराज के शास्त्रीय मार्गदर्शन में कतिपय वर्षों से सन्मार्ग परिवार द्वारा प्राचीन ताडपत्रीय लेखन पद्धति से आगमों का लेखन कराया जा रहा है। इस आगमलेखन-प्रक्रिया में प्रतिदिन ४००० श्लोक परिमाण लेखन हो रहा है। एक वर्ष में १४,४०००० श्लोक परिमाण लेखन हो रहा है। आगमों की २७ प्रतियाँ २७ राज्यों के किसी एक-एक स्थान में सुरक्षित रखी जायेंगी। इस योजना में टीका लेखन एवं उसके अनन्तर आचार्य श्री हेमचन्द्र जी और उपाध्याय श्री यशोविजय जी के ग्रन्थों का लेखन भी किया जायेगा। ४५ आगमों की एक प्रति के लेखन का मूल्य ४ लाख रुपये है। इच्छुक दानदाता सम्पर्क करें– **चन्द्रशेखर बी. शाह, 309 तीसरी मंजिल, फिनिक्स बिल्डिंग, मुम्बई:400004, फोन नं. 3883420**

हैदराबाद में स्नेह मिलन

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्, हैदराबाद द्वारा आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम १६ दिसम्बर २००१ को अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष माननीय श्री रतनलाल जी बाफना के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। बाफना सा. ने अपने ४५ मिनट के उद्बोधन में निन्दा, चुगली, वैरभाव, राग-द्वेष आदि से बचने की प्रेरणा की। स्नेह मिलन में सभी संस्थाओं एवं सम्प्रदायों के गणमान्य लोग उपस्थित थे। इनमें से कइयों ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।– **श्रीपाल देशलहरा**

निःशुल्क अहिंसा प्रचार सामग्री प्राप्त करें

अहिंसात्मक भावनाओं के प्रचार–प्रसार एवं संद्संस्कार निर्माण व जन-जागृति हेतु विविध विषयों पर अखिल भारतीय अहिंसा प्रचार–समिति, भवानीमण्डी द्वारा लगभग ५० से भी अधिक प्रकार के रोचक एवं प्रेरणादायी स्टीकर्स बनवाये गये हैं, जिन्हें देशभर में निःशुल्क प्रचारित किया जा रहा है। अहिंसा के क्षेत्र में कार्यरत कार्यकर्ता निःशुल्क अहिंसा प्रचार सामग्री प्राप्ति के लिए पोस्टेज चार्ज १२ रुपये के डाक टिकिट अपने पते लिखे पत्र के साथ भेजकर निम्न पते पर सम्पर्क करें– **प्राणिमित्र श्री नितेश नागोता जैन, राष्ट्रीय संचालक–अ.भा. अहिंसा प्रचार समिति, 175, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी (राज.) 326502**

जयपुर में पशु चिकित्सा शिविर एवं रक्तदान शिविर

जयपुर– श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में २० जनवरी २००२ को मनोहरपुर (दिल्ली रोड़) में विशाल पशु चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में लगभग ४००० पशुओं का इलाज किया गया। शिविर में टीकाकरण, बांझपन, कृत्रिम गर्भाधान, खुरपका, हर्निया, कैंसर आदि की निःशुल्क सुविधा प्रदान की गई। शिविर में पशु-क्रूरता पर नियन्त्रण को चित्रों एवं संदेशों के माध्यम से दर्शाया गया।

२७ जनवरी २००२ को आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की ९२वीं जन्म-जयन्ती पर लालभवन में प्रातः ९ बजे से अपराह्न 3बजे तक रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 100 युवक-युवतियों ने रक्तदान किया। रक्तदान के अलावा दया, उपवास, आयम्बिल, एकाशन आदि का भी आराधन किया गया।– **अनिल बम्ब, सचिव**

देई में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. की ९२वीं जन्म-जयन्ती के अवसर पर २७ जनवरी २००२ को श्री जैन रत्न युवक समिति के सौजन्य से एक निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें ९३ रोगियों का सफल ऑपरेशन किया गया एवं बहिरंग कक्ष में ३४१ रोगियों की आँखों की जाँच कर औषधि दी गई। शिविर का समापन समारोह १ फरवरी २००२ को विधायक श्री प्रभुलाल जी करसोल्या के मुख्य आतिथ्य एवं श्री पुखराज जी ओसवाल, नैनवां की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। **–पदमकुमार गोयल, अध्यक्ष**

परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन

दुर्ग–श्री रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन द्वारा आयोजित 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग–२' की परीक्षा में दुर्ग केन्द्र से बैठने वाले परीक्षार्थियों में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले परीक्षार्थी को १००१/– रुपये, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले को ५०१/– रुपये तथा तृतीय स्थान पर आने वाले को ३०१/– रुपये का पुरस्कार श्री सरदारमल जी सुराना, मालवीय नगर, दुर्ग की ओर से दिया जाएगा। श्री कन्हैयालाल जी कटारिया ने दुर्ग केन्द्र से बैठने वाले प्रत्येक परीक्षार्थी को सान्त्वना

प्रवेश सूचना

श्री जयमल्ल जैन छात्रावास, मेड़ता शहर में सत्र २००२-२००३ में प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र आमंत्रित हैं। सुविधापूर्ण आवास, पौष्टिक भोजन, संयमित दिनचर्या, व्यायाम, योगासन एवं खेलकूद, कम्प्यूटर शिक्षा, सामायिक स्वाध्याय एवं संत समागम साहित्यिक गतिविधियाँ छात्रावास की प्रमुख विशेषताएँ हैं। कक्षा तीन से बारहवीं तक के केवल जैन छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। निर्धन किन्तु होनहार छात्रों के लिए सभी सुविधाएँ निःशुल्क हैं।–**नवल सिंह जैन, अधीक्षक–श्री जयमल जैन छात्रावास, मेड़ता शहर, जिला– नागौर (राज.)दूरभाष–01590-31160**

पुरस्कार देने की घोषणा की है। उपर्युक्त पुरस्कार श्री आर. सी. बाफना फाउण्डेशन के पुरस्कारों से अतिरिक्त होंगे। –**कन्हैयालाल कटारिया**

महावीर प्रश्नमाला प्रतियोगिता

भगवान महावीर के २६०० वें जन्म-कल्याणक वर्ष के अवसर पर 'भगवान महावीर : १०१ तथ्य' (राजेश जैन देवकर द्वारा संकलित) पुस्तक पर 'महावीर प्रश्नमाला' लिखित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई है। प्रतियोगिता में भाग लेने की अंतिम तिथि ३० जून २००२ है। पुस्तक का मूल्य १२ रुपये है। प्रतियोगिता में २६ सफल प्रतियोगियों को समाजसेवी श्री नैनसुख जी प्रेमराज जी लुंकड़, जलगाँव के सौजन्य से पुरस्कृत किया जायेगा। **सम्पर्क–महेश नाहटा, नगरी (छत्तीसगढ़) 493778 अथवा राजेश जैन देवकर, जैन स्कूल परिसर,जी.ई.रोड, राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)–491441**

इण्टरनेशनल जैन एण्ड वैश्य ऑर्गेनाइजेशन

समस्त जैन एवं वैश्य समाज को संगठित करने के उद्देश्य से गठित इस ऑर्गेनाइजेशन के कई उद्देश्य हैं। अभी प्रमुख रूप से निम्नांकित केन्द्र संचालित हैं–

1. विवाह सूचना केन्द्र– इसमें विवाह योग्य लड़के-लड़कियों का बायोडेटा फोटो सहित संकलित किया जाता है एवं पंजीयन किया जाता है। इस केन्द्र में हजारों बायोडेटा आ चुके हैं।

2. रोजगार सेवा केन्द्र– इस केन्द्र में बेरोजगार लड़के-लड़कियों का रजिस्ट्रेशन किया जाता है एवं तीन माह में रोजगार प्रारम्भ करवाने या प्राइवेट सर्विस की गारण्टी दी जाती है।

इसी प्रकार इस संगठन के द्वारा–३. सांस्कृतिक केन्द्र ४. राजनैतिक चेतना केन्द्र ५. चिकित्सा सेवा केन्द्र ६. वी.आई.पी. डायरेक्ट्री सूचना केन्द्र ७. खेलकूद एवं प्रतिभा विकास केन्द्र ८. शिक्षा प्रसार केन्द्र ९. समस्त समस्या निवारण केन्द्र १०. महिला उत्थान केन्द्र ११. जीवदया केन्द्र १२. युवा चेतना केन्द १३. विधवा-निराश्रित-अल्प आयवर्ग सेवा केन्द्र १४-व्यापार प्रसार केन्द्र और १५- शासन. प्रशासन प्रकोष्ठ भी संचालित हैं।–**पदमचन्द जैन, 41 ए कुड़की मेन्शन-मिशन कम्पाउण्ड के निकट, अजमेर पुलिया, जयपुर (राज.) हैल्पलाइन–0141–469324 (सुबह 8 से रात्रि 12बजे तक)**

जयपुर में भगवान महावीर की शिक्षाओं पर संगोष्ठी

जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, त्रिलोक उच्चस्तरीय अध्ययन एवं अनुसंधान संस्थान कोटा तथा अखिल भारतवर्षीय

दो दिनों में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ

नासिक– एम.बी.बी.एस. द्वितीय वर्ष के छात्र श्री तुषार जव्हेरीलाल छाजेड़ ने दो दिनों में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करके विधिपूर्वक सम्पन्न कराया। छात्र का यह प्रयत्न निश्चय ही प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। – **अनन्त न. साबद्रा, मंत्री, श्री भगवान महावीर आराधना केन्द्र।**

दिगम्बर जैन (तीर्थसंरक्षिणी) महासभा, लखनऊ के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भगवान महावीर की शिक्षाओं की आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता' विषय पर २३ से २५ मार्च २००२ तक २१वीं अखिल भारतीय जैन विद्या संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी का उद्घाटन श्री बी.डी.कल्ला, कार्य एवं सामान्य प्रशासन मंत्री, राजस्थान सरकार ने किया। अध्यक्षता प्रो. हरिराम आचार्य, अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी ने की। एकादश सत्रों में सम्पन्न इस संगोष्ठी का समापन उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी महाराज के सान्निध्य में भट्टारकजी की नसियां में कुन्दकुन्द भवन में हुआ। मुख्य अतिथि न्यायाधिपति श्री मिलापचन्द जी, लोकायुक्त, राजस्थान थे। अध्यक्षता प्रो. के.एल. कमल, कुलपति राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने की।

उद्घाटन सत्र में श्री नीरज जैन सतना एवं डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल ने तथा समापन सत्र में डॉ. प्रेमसुमन जैन ने विशेष व्याख्यान दिए। संगोष्ठी में कुल १३५ विद्वानों ने भाग लिया तथा अनुसंधानात्मक आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी में डॉ. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', वाराणसी; डॉ. सुषमा सिंघवी, उदयपुर; डॉ. शीतलचन्द जैन, जयपुर; श्री कन्हैयालाल लोढ़ा आदि अनेक विद्वान् उपस्थित थे। सम्पूर्ण संगोष्ठी को उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी महाराज का सान्निध्य प्राप्त था। संगोष्ठी का संयोजन जैन अनुशीलन केन्द्र के निदेशक डॉ. पी.सी. जैन ने किया। इस अवसर पर अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन (तीर्थसंरक्षिणी) महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने जैन अनुशीलन केन्द्र को १०००/— प्रतिमास की १० शोध छात्रवृत्ति दो वर्ष के लिए देने की घोषणा की।

बी.एल. इंस्टीट्यूट द्वारा ग्रीष्मकालीन शाला में चार पाठ्यक्रम

दिल्ली— भोगीलाल लहेरचन्द इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली द्वारा २६ मई से १६ जून २००२ तक आयोजित ग्रीष्मकालीन अध्ययनशाला में निम्नांकित ४ पाठ्यक्रमों का अध्यापन कराया जाएगा—

१. प्राकृत भाषा और साहित्य (Elementary)
२. प्राकृत भाषा और साहित्य (Advanced)
३. जैन धर्म और दर्शन

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ के स्नातकों/स्वजनों से अपील

आपके अपने इस विद्या मन्दिर की स्थापना के ७५ वर्ष पूर्ण होने पर १५ जनवरी २००३ से १५ जनवरी २००४ तक 'हीरक जयन्ती वर्ष' के रूप में मनाया जायेगा। अत: सभी भूतपूर्व छात्रगण, निवर्तमान स्टाफ एवं आत्मीय जन सादर आमंत्रित हैं। कृपया आपश्री अपना नवीनतम पता तथा विद्यालय के भूतपूर्व छात्र(स्नातक) एवं संबंध रखने वाले स्वजन एवं समाज के प्रतिष्ठित अग्रगण्य सज्जनों का नवीनतम पता पत्र पर लिखकर हीरक जयन्ती प्रकोष्ठ, श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़, जिला— जोधपुर—३४२६०३ (राज.) पर प्रेषित कर हमें अनुगृहीत करें। — **महावीर चंद कांकरिया, मंत्री**

४. पाण्डुलिपि और शोधप्रविधि

इन पाठ्यक्रमों में संस्कृत, प्राकृत, पाली, दर्शन, इतिहास एवं धर्म में एम. ए. या आचार्य में उत्तीर्ण छात्रों/ अध्यापकों को प्रवेश दिया जाएगा। यह संस्था उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन से मान्यता प्राप्त है। इसके पाठ्यक्रम को रिफ्रेशर कोर्स (पुनश्चर्या पाठ्यक्रम) की मान्यता का प्रयास चल रहा है। **–डॉ. विमलप्रकाश जैन, निदेशक, फोन नं. 7202065, ईमेल– vpjain@nda.vsnl.net.in**

पार्श्वनाथ विद्यापीठ का विस्तार

वाराणसी–पार्श्वनाथ विद्यापीठ में नवनिर्मित 'उपाध्याय यशोविजय स्मृति मन्दिर' एवं 'श्री राजयश सूरि विद्या भवन' का लोकार्पण ३१ दिसम्बर २००१ को सम्पन्न हुआ। यह लोकार्पण विधिविशेषज्ञ, सांसद पद्मभूषण डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी के द्वारा किया गया। **– डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय**

जोधपुर में जैन पत्र-पत्रिका प्रदर्शनी

देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रकाशित होने वाली जैन पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी का आयोजन जोधपुर में १३-१४ अप्रेल २००२ को ओसवाल कम्युनिटी सेन्टर में किया गया। यह आयोजन ओसवाल सिंह सभा द्वारा संचालित ओसवाल केन्द्रीय पुस्तकालय के तत्त्वावधान में भगवान महावीर के २६००वें जन्म-कल्याणक महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत किया गया। इस प्रदर्शनी में लगभग २०० पत्र-पत्रिकाएँ प्रदर्शित की गई। **–नगराज खिंवसरा**

अलवर में आचार्य हस्ती चिकित्सालय

महावीर इण्टरनेशनल की अलवर शाखा द्वारा शांतिकुंज, अलवर में निर्मित आचार्य हस्ती चिकित्सालय का उद्घाटन ९ मार्च २००२ को राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक जी गहलोत ने किया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। अलवर के सांसद वीर श्री जसवंत जी यादव ने केन्द्र को एक एम्बुलेंस देने और पाँच लाख रुपये की राशि की व्यवस्था की घोषणा की । चिकित्सालय में नेत्र प्रत्यारोपण का कार्य भी सम्पन्न होगा। महावीर इण्टरनेशनल के राष्ट्रीय अध्यक्ष वीर आर. एस. बाफना, सचिव वीर प्रेमसिंह जी महता, महिला संयोजिका श्रीमती सरला जैन आदि ने भी अपने विचार प्रकट किए। आई बैंक संयोजक वीर डॉ.

जोधपुर में ग्रीष्मकालीन धार्मिक पाठशालाएँ

ग्रीष्मावकाश में श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा स्कूल-शिक्षण की कक्षा ३ के ऊपर के बालक– बालिकाओं में आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कार प्रदान करने के उद्देश्य से जोधपुर के विभिन्न ६ स्थानों पर १७ मई से १६ जून २००२ तक प्रातः ७.३० बजे से ९.३० बजे तक धार्मिक पाठशालाओं का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें धार्मिक एवं जीवनोपयोगी शिक्षण प्रदान किया जाएगा। आवेदन पत्र आमन्त्रित हैं। **–मनीष लोढ़ा, अध्यक्ष, फोन नं. 627596(दु.) 627691 (घर)**

गोपाल गुप्ता इस केन्द्र में प्रारम्भ से ही जुड़कर अपनी निःस्वार्थ सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। –**सुमति कुमार जैन**

दक्षिण के तीन प्रांतों में धार्मिक परीक्षाएँ

बैंगलोर– कर्नाटक, आंध्रपदेश एवं तमिलनाडु क्षेत्रों में स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा की व्यवस्था की जा रही है। परीक्षाएँ जून माह में आयोजित होंगी। परीक्षार्थी को पाठ्य सामग्री तथा नमूने का प्रश्नपत्र संघ द्वारा यथासमय प्रेषित किया जायेगा। स्थानीय सदस्य अध्यापक/ अध्यापिका वर्ग से सम्पर्क करें। बाहर गाँव के स्वाध्यायी पत्र द्वारा पाठ्यक्रम एवं आवेदन पत्र मंगवाएँ। परीक्षा की तिथि एवं वार की सूचना समय पर भेजी जाएगी। १५ परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र की स्वीकृति दी जाएगी। प्रवेश हेतु अन्तिम तिथि १५ मई २००२ है। –**शान्ति लाल बोहरा, संयोजक–श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, नं.157, हुरियो पेट, बैंगलोर, फोन नं. 3112653**

'जिणधम्मो' पुस्तक पर खुली परीक्षा

आचार्य नानेश की कृति 'जिण धम्मो' पर २४.१०.२००२ को १ से ४ बजे तक ओपन लिखित परीक्षा आयोजित की जाएगी। परीक्षा के समय यह पुस्तक साथ में रखना अनिवार्य है। आवेदन-पत्र की अंतिम तिथि १५ अगस्त २००२ है। कम से कम १० प्रतियोगी होने पर वहाँ केन्द्र बनाया जा सकेगा। प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम पुरस्कार क्रमशः ५०००/–, ४०००/–, ३०००/–, २०००/– एवं १०००/– रुपये के होंगे। ६० प्रतिशत और इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले परीक्षार्थी को आकर्षक पुरस्कार दिया जायेगा। पुस्तक प्राप्ति स्थान– **'समता भवन' रामपुरिया मार्ग, बीकानेर– 334001। पुस्तक 300 रुपये के स्थान पर १50/– रुपये में उपलब्ध है। – महेश नाहटा, नगरी, जिला–धमतरी–493778**

पंचम अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

धर्मदर्शन सेवा संस्थान, उदयपुर के द्वारा वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी के सान्निध्य में नवम्बर/दिसम्बर २००२ में उदयपुर सम्भाग में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठी प्रस्तावित है। संगोष्ठी विज्ञान के विषयों पर केन्द्रित रहेगी। सम्पर्क सूत्र–

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा ग्रीष्मकालीन स्थानीय शिविरों का आयोजन

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं उसकी विभिन्न शाखाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में ग्रीष्मकालीन अवकाश का सदुपयोग करने हेतु दिनांक १७ मई २००२ से ३० जून २००२ तक विभिन्न स्थानों पर बालक और बालिकाओं में धार्मिक एवं नैतिक संस्कार प्रदान करने हेतु स्थानीय शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। जो भी संघ अपने यहां शिविर आयोजित करवाना चाहते हैं वे प्रधान कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र – संयोजक/सचिव–स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर–342001(राज.) फोन नं. 624891, फैक्स– 636763

डॉ. नारायणलाल कछारा, सचिव, धर्मदर्शन सेवा संस्थान, 55–रवीन्द्रनगर, उदयपुर–313003(राज.), फोन नं. 0294–491422

विद्यासागर केन्द्र द्वारा जीव रक्षा

नई दिल्ली– 'गुरुवर विद्यासागर जीवरक्षा केन्द्र' दिल्ली के कार्यकर्ताओं ने उत्तरप्रदेश के डबेडी मुजफ्फरनगर कस्बे में कसाइयों के हाथों काटे जाने के लिए बेचे जा रहे ५६ गोवंशीय पशुओं को अपने कब्जे में लेकर केन्द्र द्वारा संचालित गोशाला में पालन-पोषण हेतु सुरक्षित किया।

भोपालगढ़ जैन महासंघ का गठन

बैंगलोर (कर्नाटक)– क्रियोद्धारक जैनाचार्य पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. की क्रियोद्धारक भूमि बड़लू– भोपालगढ़ (जिला– जोधपुर) मारवाड़ (राजस्थान) के मूल निवासियों का भोपालगढ़ जैन महासंघ के नाम से संगठन बनने जा रहा है। मालवा, मराठवाड़ा, विदर्भ, खानदेश, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु आदि प्रान्तों व क्षेत्रों में भोपालगढ़–बड़लू के प्रवासी जैन, वर्षों से व्यवसायरत हैं। महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश में तो सौ वर्षों से भी अधिक समय से रह रहे हैं। सभी भोपालगढ़ जैन प्रवासियों से विनम्र आत्मीय निवेदन है कि आप अपना वर्तमान नाम, पता, फोन नं. व पारिवारिक एवं व्यापारिक विवरण शीघ्र भेजकर इस महासंघ के पावन गठन के उद्देश्य को सफल करें।

बड़लू भोपालगढ़ के ओस्तवाल, कांकरिया, बाफणा, छाजेड़, रांका, बोथरा, चतुरमुथा, कर्नावट, कोठारी, भंडारी, सुराणा, बच्छावत, चोरड़िया, खिंवसरा, मुणोत, पारख, बोहरा, लोढ़ा, ललवानी, श्रीश्रीमाल, लूंकड़, पींचा, वेदमूथा आदि गौत्रों के ओसवाल भाई बाहर के दिशावरी प्रदेशों में ज्यादा तादाद में

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-२ की परीक्षा १६ जून २००२ को

जलगांव– रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट द्वारा जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग–२ की परीक्षा १६ जून २००२ रविवार को अपराह्न १ से 4 बजे तक देश के विविध केन्द्रों पर आयोजित की जा रही है। आप अपने नजदीकी केन्द्र पर परीक्षा दे सकते हैं। प्रत्येक केन्द्र पर जलगांव से निरीक्षक भेजने की व्यवस्था की जा रही है, ताकि परीक्षा सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न हो सके। परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए 32 प्रश्न निकाले हैं, उन्हीं प्रश्नों में से 70 मार्क्स के प्रश्न पूछे जायेंगे। बाकी 30 अंकों के प्रश्न पुस्तक से रहेंगे। परीक्षा के समय पुस्तक पास में रखने की छूट है।

परीक्षा में १०० में से १०० अंक लानेवालों को २१ हजार का सम्मान पुरस्कार तथा युवा व प्रौढ वर्ग में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को क्रमशः ११ हजार , ९ हजार व ७ हजार रुपयों के पुरस्कार दियें जायेंगे।

करीब ३००० आवेदन-प= प्राप्त हो चुके हैं। सभी को रोल नंबर व केन्द्र की सूचना के पत्र प्रेषित किये जा रहे हैं। –**रतनलाल सी. बाफना, नयनतारा, सुभाष चौक, जलगांव–425001 (महा.) दूरभाष 223903, 225903**

रहते हैं। कृपया सभी जैन प्रवासी परिवार अतिशीघ्र समस्त जानकारी निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करावें ताकि भोपालगढ़ जैन महासंघ की विशाल निर्देशिका (डायरेक्ट्री) का प्रकाशन प्रारंभ किया जा सके। युगपुरुष सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., पूज्य उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि महान् संतों का भोपालगढ़वासियों को प्रारंभ से ही विशेष आशीर्वाद प्राप्त है। **सम्पर्क– गौतमचन्द ओस्तवाल, भोपालगढ़ जैन महासंघ, नं. जे–91, 9वां क्रोस, पहला माला, एल.एन. पुरम, जैन मन्दिर के पीछे, बैंगलोर– 560021**

पालीताणा में एक साथ ३४ दीक्षाएँ

आचार्य श्री गुणरत्नसूरि जी महाराज के सान्निध्य में १६ फरवरी २००२ को एक साथ ३४ मुमुक्षुओं ने संयम-जीवन अंगीकार किया। १३ पुरुष एवं २१ महिलाओं के द्वारा एक साथ संयम अंगीकार करने की यह घटना इस वैज्ञानिक. भौतिक युग में प्रेरणाप्रद है। दीक्षा अंगीकार करने वालों में मुम्बई महानगरी के मुमुक्षु सबसे अधिक रहे।

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई– भगवान महावीर अहिंसा प्रचार संघ द्वारा आवड़ी के निकट पतूगई ग्राम में निःशुल्क पशु-पक्षी चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग ४५० पशु-पक्षियों का परीक्षण तथा इलाज किया गया।– **केशरीचन्द सेठिया**

अहमदाबाद– साबरमती स्थित रामनगर में आचार्य श्री विजयरामचन्द्रसूरि जी के अग्नि संस्कार स्थल पर विराट् स्मृति-मन्दिर का निर्माण हुआ है, जिसका अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव ३१ जनवरी से २६ फरवरी २००२ तक सम्पन्न हुआ।

बैंगलोर– कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ के तत्त्वावधान में १ से ३ फरवरी २००२ तक सोलहवाँ स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में दक्षिण क्षेत्र के लगभग १०० स्वाध्यायियों ने भाग लिया। शिविर में तीन कक्षाओं के माध्यम से स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा का पाठ्यक्रम पढाया गया। – **संजय कचोलिया**

दिल्ली– अशोक विहार, दिल्ली में **भगवान महावीर भवन** निर्माण हेतु ७०० मीटर का भूखण्ड मिला था, जिसका शिलान्यास २८ फरवरी २००२ को श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा, अशोक विहार के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ।– **महेन्द्र कुमार जैन, महामंत्री**

दिल्ली– १७ फरवरी २००२ को वैरागी अरविन्द जैन ने आचार्यकल्प श्री रामकृष्ण जी महाराज के गुरुभ्राता श्री शिवचन्द जी महाराज एवं विद्यावाचस्पति श्री सुभद्रमुनि जी महाराज के सान्निध्य में भागवती दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा समारोह श्री एस. एस. जैन सभा, इन्द्रपुरी के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ।– **रामनिवास जैन, महामंत्री**

भटिण्डा– आचार्यप्रवर श्री रामलाल जी महाराज आदि सन्त-सतियों के सान्निध्य में महेश नाहटा, नगरी के संचालन में धार्मिक संस्कार समीक्षा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में १०० से भी अधिक भाई-बहनों ने भाग लेकर जीवन को

सुसंस्कारित किया। **–महेश नाहटा, नगरी**

तिन्दीवनम्– एस.एस. जैन संघ ने २४ मार्च २००२ को नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया, जिसमें १६०० व्यक्तियों के नेत्रों की जांच की गई तथा जरूरतमन्द को लेंस दिए गए। दन्त-चिकित्सा शिविर में ३०० व्यक्तियों की चिकित्सा की गई। निर्धन छात्रों को नोटबुक एवं वृद्धों को वस्त्र दिए गए।

–सुवालाल करनावट

लातूर (महाराष्ट्र)– १७ मार्च २००२ को महासती प्रभाकंवर जी महाराज का ७५वाँ जन्म-दिवस तथा ६०वाँ दीक्षा दिवस मनाया गया। महासती जी को महाराष्ट्र प्रवर्तिनी के पद से अलंकृत किया गया। कार्यक्रम में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री मा. विलासराव देशमुख सहित अनेक माननीय अतिथि उपस्थित थे।

भटिण्डा– आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी महाराज का सं. २०५९ का चातुर्मास सरदारशहर होना निश्चित हुआ है। उन्होंने अपने आज्ञानुवर्ती सन्त.सतियों के ३४ चातुर्मास खोल दिए हैं। अक्षय तृतीया पर आचार्य श्री बीकानेर विराजेंगे।

–नथमल तातेड़

बैंगलोर– श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ के भव्य सभागार में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कर्नाटक शाखा बैंगलोर के तत्त्वावधान में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के कार्याध्यक्ष श्री ईश्वरलाल जी ललवाणी, जलगाँव का भावभीना अभिनन्दन किया गया। स्वागत समारोह की अध्यक्षता स्थानीय संघाध्यक्ष श्री भोपालचन्द जी पगारिया ने की। स्वागत भाषण सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल ने दिया। अनेक गणमान्य व्यक्ति इस समारोह में उपस्थित थे। **–गौतमचन्द ओस्तवाल**

चेन्नई– प्रवर्तक श्री रमेशमुनि जी म.सा. एवं श्री सिद्धार्थ मुनि जी म.सा. की प्रेरणा से श्री एस.एस. जैन संस्कार मंच की स्थापना की जा रही है। पूरे भारत में मंच की १६ शाखाएं गतिशील हैं तथा साहुकार पेठ, चेन्नई को मुख्य शाखा का गौरव प्राप्त है। **–सुरेश आबड़**

जयपुर– दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी द्वारा "पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम" प्रारम्भ किया जा रहा है। सत्र १ जुलाई २००२ से प्रारम्भ होगा। इसमें प्राकृत, संस्कृत हिन्दी एवं अन्य भाषाओं/ विषयों के प्राध्यापक अपभ्रंश, प्राकृत शोधार्थी एवं संस्थानों में कार्यरत विद्वान् सम्मिलित हो सकेंगे। नियमावली एवं आवेदन पत्र अकादमी कार्यालय, दिगम्बर जैन नसियां भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर–४ से प्राप्त करें। –**डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक**

सूरत– श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, सूरत द्वारा यहाँ २४ मई से ६ जून २००२ तक जीवन जागृति संस्कार शिविर आयोजित किया जा रहा है।

बैंगलोर– आशा संस्था द्वारा जैन सूचना केन्द्र का शुभारम्भ किया गया है। इस केन्द्र में समूचे दक्षिण भारतीय जैन परिवारों की पूरी जानकारी संगृहीत की जायेगी।

वर्तमान में इसके प्रथम चरण में दक्षिण भारत के जैन परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों की सम्पूर्ण जानकारी का संकलन किया जा रहा है।–**Jain Information Centre, Ist Floor Laxmi Complex, Fort, K.R.Road, Bangalore-560004**

जोधपुर–श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर की सिंहपोल शाखा अपने धार्मिक कार्यक्रमों को निरन्तर आगे बढ़ा रही है। प्रत्येक रविवार को प्रातः ७ से ८ बजे तक सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम रहता है। एक परीक्षा का आयोजन भी किया गया है। –**धीरज डोसी , संयोजक**

जयपुर– श्री पद्मावती पोरवाल जैन समिति, जयपुर के द्वारा पोरवाल भवन के निर्माण हेतु २१ अप्रेल २००२ को मानसरोवर के निकट भूमि पूजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जयपुर के जैन समाज के गणमान्य नागरिक एवं पोरवाल समाज के कई स्थानों के लोग उपस्थित थे। –**राजेन्द्र कुमार जैन 'राजा'**

भावनगर– श्री सत्सुख प्रभावक ट्रस्ट से प्रकाशित २० पुस्तकों में से कोई भी ५ पुस्तकें १५/– के डाक टिकट भेजने पर निःशुल्क भेजी जाएगी। पुस्तकों के लिए सम्पर्क सूत्र– **श्री सत्सुख प्रभावक ट्रस्ट, 580, जूनी माणेकवाड़ी, भावनगर–364001**

चेन्नई–यहाँ के श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल ने आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म. सा. के ९२वें जन्म-दिवस पर बच्चों में संस्कारों हेतु प्रत्येक रविवार को एक घण्टे के लिए पाठशाला का शुभारम्भ किया है, जिसमें ३.४ कक्षाएं लगेगी।

–पारसकंवर भण्डारी

भोपालगढ़–पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ के सान्निध्य में २६ दिसम्बर २००१ से ३१ दिसम्बर २००१ तक स्थानीय धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित हुआ, जिसमें ६० शिविरार्थियों ने भाग लेकर आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के पाठ्यक्रम का अध्ययन किया।– **नरेशचन्द जैन**

बैंगलोर– बैंगलोर गोरक्षण शाला दौड्डनिकुन्दी की कार्यकारिणी सभा की बैठक में २३ दिसम्बर २००१ को मूक समाजसेवी श्री रायचन्द जी छाजेड़ को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया। पूर्व अध्यक्ष प्रमुख समाजसेवी श्री फूलचन्दजी लुणिया की अमूल्य सेवाओं की प्रशंसा की गई।–**सी. किशनलाल कोठारी**

मुम्बई– भारत जैन महामण्डल के आगामी तीन वर्षों के कार्यकाल हेतु तेरापंथ धर्मसंघ के श्री पन्नालाल जी सुराणा अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। वे उद्योगपति और समाजसेवी हैं। –**कुशलचन्द जैन, महामंत्री**

जोधपुर– सुश्री नीलम चाम्बड़ (सुपौत्री श्री छोटमल जी चाम्बड़ एवं सुपुत्री श्री उम्मेदमल जी चाम्बड़) ने १७ फरवरी २००२ को आचार्यकल्प श्री शुभचन्द जी म. सा. आदि ठाणा एवं महासती श्री दरियावकंवर जी, श्री जयप्रभा जी आदि ठाणा के सान्निध्य में भगवान महावीर वाटिका में जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की। बड़ी दीक्षा २४ फरवरी को अंगीकार करने के पश्चात् उनका नाम साध्वी चरमश्री रखा गया।

बधाई

प्रो. कल्याणमल जी लोढ़ा बिहारी पुरस्कार से सम्मानित

देश के प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार, आलोचक एवं शिक्षाविद् प्रो. कल्याणमल जी लोढ़ा को उनकी बहु प्रशंसित कृति 'वाग्द्वार' के लिए के.के. बिड़ला फाउण्डेशन के दशवें बिहारी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। प्रो. लोढ़ा जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे हैं। के.के. बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा यह पुरस्कार भारतीय संस्कृति, कला एवं दर्शन की उत्कृष्ट कृति के लिए दिया जाता है। विश्राम काल में भी आप श्रमनिष्ठ होकर निरन्तर रचनाधर्मिता में संलग्न हैं। इन दो तीन वर्षों में आपकी दशाधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर से 'अहिंसा निउणा दिट्ठा' एवं 'नमो गणिगजेन्द्राय' पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

कुमारी राखी मुणोत सी.ए. फाइनल में प्रथम

हैदराबाद– सुश्री राखी मुणोत सुपौत्री श्री रतनचन्द जी मुणोत एवं सुपुत्री श्री सुरेन्द्र सिंह जी मुणोत ने सी.ए. फाइनल में ६९ प्रतिशत अंक अर्जित कर सम्पूर्ण भारत में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। सुश्री मुणोत की यह उपलब्धि जैन समाज के लिए गौरव की बात है।

कानपुर– सुप्रसिद्ध समाज सेवी साहित्यकार अ.भा. खरतरगच्छ महासंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हजारीमल बांठिया की सुपौत्री धर्मस्नेही श्री रिखबराज जी बाफणा, जलगाँव वालों की दौहित्री कु. कीर्ति बांठिया (सुपुत्री श्री प्रकाशचन्द जी) ने छत्रपति शाहू जी महाराज कानपुर विश्वविद्यालय की सन् २००० की बी.एड. की परीक्षा में सर्वोच्च प्रथम स्थान प्राप्त किया है। महाविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में उ.प्र. विधानसभा के अध्यक्ष श्री केशरीनाथ जी त्रिपाठी ने ''छायारानी स्वरूप स्वर्णपदक''प्रदान कर कु. कीर्ति बांठिया को सम्मानित किया। –**राजकुमार जैन**

कोटा– पर्यावरणविद् श्री सूरजमल जी जैन को भगवान महावीर के २६००वें जन्म-

कल्याणक महोत्सव वर्ष पर अखिल भारतीय दिगम्बर जैन प्रतिभा सम्पन्न समारोह समिति द्वारा कोलकाता में १५ अप्रेल २००२ को सम्मानित किया गया। उन्हें कोलकाता के साइंस सिटी ऑडिटोरियम में विशिष्ट प्रतिभा के रूप में पुरस्कृत किया गया। उप महाप्रबंधक (वन), राजस्थान जनजाति क्षेत्रीय विकास निगम से सेवानिवृत्त श्री जैन के ७० लेख विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं।

रींवा– जैन केन्द्र, रींवा के निदेशक डॉ. एन.एल. जैन ने लन्दन विश्वविद्यालय के पूर्वी और अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र के अन्तर्गत जैन विद्या विभाग में मार्च २००२ में आयोजित 'जैन विद्या के विविध पक्ष' विषयक संगोष्ठी में 'जैन धर्म की अवधारणाएँ' विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया और वहां के विभागीय विद्यार्थियों के लिए 'जैन धर्म और विज्ञान' तथा 'अकलंक और तत्त्वार्थसूत्र' विषय पर व्याख्यान

दिए। इस संगोष्ठी में ५ देशों के ९ विद्वानों ने भाग लिया।

जयपुर– अखिल भारतीय चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट संस्थान की मध्यक्षेत्रीय परिषद् के

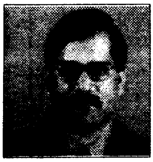

हाल ही कानपुर में सम्पन्न हुए चुनावों में जयपुर के श्री विमल जी चौपड़ा को सचिव बनाया गया है। मध्यक्षेत्रीय परिषद् राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ व उत्तरांचल के शहरों में फैली कुल २९ शाखाओं पर नियन्त्रण रखती है। श्री चौपड़ा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के कार्यकारी सदस्य एवं सुबोध प्ले स्कूल के सह-संयोजक भी है। –**संजीव अग्रवाल, चेयरमेन**

दिल्ली– प्राकृत भाषा एवं साहित्य के विद्वान् डॉ. राजाराम जी जैन को उनकी उल्लेखनीय साहित्यिक सेवाओं के लिए वर्ष १९९८ का 'राष्ट्रपति सम्मान' ६ फरवरी २००२ को भारत के राष्ट्रपति श्री के.आर.नारायणन के द्वारा अर्पित किया गया। डॉ. जैन ने प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाओं की दुर्लभ पाण्डुलिपियों के अनुसंधान, सम्पादन एवं अनुवाद के क्षेत्र में व्यापक कार्य किया है।– **डॉ. सुदीप जैन, सम्पादक, प्राकृत विद्या**

जयपुर– प्राकृतभाषाविद् एवं दर्शनशास्त्री प्रोफेसर कमलचन्द जी सोगाणी को भारत सरकार के मानव संसाधन मन्त्रालय ने भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली का सदस्य मनोनीत किया है।

चेन्नई– सुश्री सपना संकलेचा (सुपौत्री श्री मोतीलाल जी संकलेचा एवं सुपुत्री स्व.

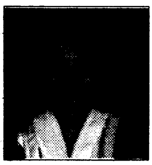

श्री चम्पालाल जी संकलेचा) ने बी.सी.एस. तथा ए.सी.एस. की परीक्षाएँ २००१ में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करने के पश्चात् अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की चतुर्थ कक्षा में ९७ प्रतिशत अंक प्राप्त करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

– **जवाहरलाल बाघमार**

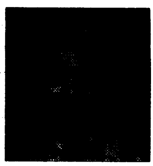

जयपुर– श्री आशीष जैन, सुपुत्र श्री अशोक कुमार जी जैन ने सन् २००१– २००२ में अन्तर्विद्यालय प्रतियोगिता में बोक्सिंग (जूनियर वर्ग) में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। राजस्थान सरकार के खेल मंत्री मास्टर भंवरलाल जी द्वारा उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

पाला (मारवाड़)– श्री अर्जुनराज जी मेहता को जिला उपभोक्ता संरक्षण मंच, पाली का सदस्य मनोनीत किया गया है। आप एवं आपका परिवार रत्नवंश के प्रति समर्पित है तथा सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहता है। हार्दिक बधाई

– **ताराचन्द सिंघवी**

धनारीकलां– श्री नितेश जैन सुपुत्र श्री नगराज जी सेठिया एवं सुपौत्र श्री हरकचन्द जी सेठिया का आई.आई. टी. कानपुर से एम.टेक करते ही इंजीनियरिंग रिसर्च सेण्टर, टेल्को पुणे में वरिष्ठ अभियन्ता के पद पर चयन हुआ है।

भीलवाड़ा– कुमारी वीणा अजमेरा को ५ फरवरी २००२ को नई दिल्ली में राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २००१ से सम्मानित किया गया। १४ वर्षीय कुमारी वीणा को यह पुरस्कार उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकान्त के द्वारा प्रदान किया गया। लोक नृत्य के क्षेत्र में उन्हें संगीत नाटक अकादमी, यूनेस्को एसोसियेशन के द्वारा भी पुरस्कृत किया जा चुका है।

हरिद्वार– श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर तीर्थ ट्रस्ट, हरिद्वार के अध्यक्ष श्री

ज्ञानचन्द जी जैन को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से अलंकृत किया गया है। उन्हें यह सम्मान शिक्षा प्रकाशन एवं सामाजिक सेवाओं के लिए दिया गया है। कम्प्यूटर एवं इलेक्ट्रोनिक्स विषयों पर उनका प्रकाशन संस्थान बी.पी.बी. पब्लिकेशन्स, एशिया में सबसे बड़ा पुस्तक प्रकाशक है। वे स्वयं भी इलेक्ट्रोनिक इंजीनियर हैं तथा अनेक सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं।

जालना– भारतीय जैन संघटना के मराठवाड़ा विभागीय अध्यक्ष श्री हस्तीमल जी बम्ब को मराठवाड़ा भूषण सम्मान से सम्मानित किया गया। ५ फरवरी को परभणी शहर में भारतीय जैन संघटना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शान्तिलाल जी मूथा एवं महाराष्ट्र राज्य के अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द जी सुराणा ने अपने करकमलों से उन्हें मानपत्र भेंट कर यह सम्मान प्रदान किया।

श्रद्धांजलि

आचार्य कलापूर्णसूरि जी का देहावसान

आचार्य श्री विजयकलापूर्णसूरि जी का माघ शुक्ला चतुर्थी १६ फरवरी २००२ को राजस्थान के केशवणा (जिला–जालोर) में स्वर्गवास हो गया। आचार्य श्री का जन्म फलौदी (राज.) में विक्रम संवत् १९८० में हुआ था। संवत् २०१० में फलौदी में ही उन्होंने दीक्षा अंगीकार की तथा संवत् २०२९ में आचार्य बने। आचार्य श्री की पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार गुजरात के पाटण जिलान्तर्गत शंखेश्वर तीर्थधाम में आगम मन्दिर के निकट किया गया। अन्त्येष्टि का चढावा कच्छ जिले के फतेहगढ़ निवासी उगरचन्द भाई गडेचा ने १ करोड़ ५१ लाख ११ हजार १११ रुपये में लिया। अन्तिम यात्रा में हजारों भक्त उपस्थित थे। इस अवसर पर चढावों की बोली से ५ करोड़ की आय हुई।

आचार्य इन्द्रदिन्नसूरि जी का स्वर्गवास

श्री आत्मवल्लभ समुद्र पट्ट परम्परा के गच्छाधिपति श्री विजयइन्द्रदिन्न सूरि जी का ४ जनवरी २००२ को अम्बाला शहर में देहावसान हो गया। संवत् १९८० में बड़ौदा जिले के मालपुरा ग्राम में जन्मे आपने संवत् १९९९ में दीक्षा ग्रहण की तथा सन् १९७७ में उन्हें आचार्यपद से विभूषित किया गया। आपने दीक्षा पर्याय के ६० वर्षों में हजारों परमार-क्षत्रियों (जिसमें पटेल भी शामिल है) को जैन बनाया।

महासती श्री सुगनकँवर जी म.सा. का महाप्रयाण

ब्यावर– बाल ब्रह्मचारिणी महास्थविरा श्री सुगनकँवर जी म.सा. का २६ दिसम्बर

२००१ को संथारापूर्वक देवलोक गमन हो गया। आपका जन्म सोजत के पास पीपलिया ढाणी नामक गाँव में माली परिवार में संवत् १९८२ में हुआ था। छः वर्ष की अवस्था में ही उन्हें श्री पन्नाकुँवर जी म.सा. के चरणों में रहकर ज्ञान-ध्यान सीखने का अवसर मिला तथा ११ वर्ष की अवस्था में आपने संयम-जीवन अंगीकार कर लिया। आपमें सरलता,सहनशीलता, वात्सल्य, माधुर्य आदि गुणों के साथ वेदना को समभाव से सहन करने की अपार क्षमता थी। आपश्री की १४ शिष्याएँ हैं तथा आपकी नेश्राय की २६ साध्वियाँ विचरण कर रही हैं। छोटे-बड़े सभी से समान व्यवहार और सभी को बड़ी मांगलिक प्रदान करना आपकी सबसे बड़ी विशेषता थी।

चेन्नई– परम गुरुभक्त सुश्रावक श्री भंवरलाल जी बाघमार (कोसाणा निवासी) का १४ घण्टे के संथारे के साथ ९ मार्च २००२ को प्रातः ११.१५ बजे समाधिपूर्वक

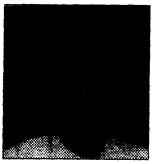

स्वर्गगमन हो गया। परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उनके आज्ञानुवर्ती सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अनन्य आस्था एवं अगाध भक्ति थी। संघ.सेवा और सन्त-सेवा में आप सदा समर्पित रहे। शिक्षा-दीक्षा के कार्य में आपका सुचारु योगदान भुलाया नहीं जा सकता। विचरण-विहार में भावनापूर्वक सेवा देने में आप अग्रणी रहे और सन्त.सतीवृन्द की सेवा में समय-समय पर पहुंचकर उनके ज्ञान-ध्यान और त्याग-तप में सहयोगी की भूमिका निभाते रहे। चातुर्मास, प्रवासकाल एवं विचरण. विहार में उनकी सेवाओं से संघ सदा लाभान्वित रहा। सामायिक, स्वाध्याय, दया, संवर आदि धार्मिक कार्यक्रमों में आप तत्पर रहते थे। जीवन के संध्याकाल में रोगग्रस्त होने पर भी आचार्य प्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि की सेवा में आने-जाने का क्रम यथावत् रहा। आप मूकसेवी थे और अन्तरंग भक्ति के कारण सन्त-सतीवृन्द भी अपने मनोभाव सहज रूप से आपके समक्ष रखने में संकोच नहीं करते थे। धर्माचार्य धर्मगुरु के प्रति श्रद्धाभक्ति, संघ के प्रति सेवाभावना और स्वधर्मी गुरुभ्राताओं के प्रति अपनत्व के कारण हर गुरुभ्राता आपसे परिचित था। आप अपने पीछे ६ सुपुत्र श्री ताराचन्द जी, अनूपकुमार जी, प्रसन्नचन्द जी, नवरतनमल जी, राकेशकुमार जी, विक्रमकुमार जी तथा सुपुत्री सुशीला देवी तालेडा का संस्कारित एवं श्रद्धालु परिवार छोड़कर गये हैं। आप बहुत साहसी, धैर्यशाली एवं दृढ़ता के धनी थे। आपने गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग–७ के प्रकाशन हेतु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को अर्थ सहयोग किया है।

बिलाड़ा–सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती सुनिता जी कटारिया (धर्मपत्नी सुश्रावक श्री पंकज जी कटारिया) पुत्रवधू श्री नेमीचन्द जी कटारिया का १३ मार्च २००२ को आकस्मिक देहावसान हो गया। नारसर के सम्भ्रान्त लोढ़ा परिवार में पल्लवित-पुष्पित श्रीमती सुनिता जी (सुपुत्री श्री प्रकाशचन्द जी लोढा) ने अपने व्यवहार से दो वर्षों में ही कटारिया कुल का मन जीत लिया। धर्माचार्य- धर्मगुरुओं के प्रति श्रद्धाभक्ति, संघ के प्रति सेवाभावना और जीवननिर्माण के प्रति सजगता उस

श्राविकारत्न की विशेषता थी। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता उनके सद्‌गुण थे।

जलगाँव– गोटन निवासी धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री नेमीचन्द जी बाफना का ७८ वर्ष की उम्र में ७ जनवरी २००२ को स्वर्गवास हो गया। बाफना साहब का जीवन

त्याग-तप से परिपूर्ण रहा। वे प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व में अठाई तप करते थे। आपने १५ दिवसीय तप का आराधन अनेक बार किया। प्रत्येक चतुर्दशी को उपवास करने का आपका नियम था। आपने २० वर्षों से व्यापार से पूर्ण निवृत्ति ले ली थी तथा नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करते थे। माला फेरने में आपका अधिकांश समय व्यतीत हो जाता था। आपकी धर्मपत्नी एवं दोनों पुत्रों (राजेन्द्र जी और महावीर जी) सहित पूरा परिवार धर्मनिष्ठ है तथा सामाजिक कार्यों में अग्रणी रहता है। समस्त परिवार परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म-सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. तथा रत्नवंश के प्रति संघ-सेवा में समर्पित है। माननीय बाफना साहब की स्मृति में परिवारजनों ने १ लाख रुपये की राशि शुभ कार्यों के लिए निकाली है।

जयपुर– श्रीमती वीणा जी जैन धर्मपत्नी श्री श्रवण कुमार जी जैन का ३० वर्ष की

अवस्था में १४ फरवरी २००२ को हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक देहावसान हो गया। आप कतिपय दिनों से अस्वस्थ थीं। अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के प्रधान कार्यालय के प्रभारी श्रावकरत्न श्री नौरतन जी मेहता की सुपुत्री वीणा जी के शालीन एवं मृदु व्यवहार से ससुराल के सभी सदस्य प्रभावित थे।

धोबीपेट (चेन्नई)– राजस्थान के भावी-बिलाड़ा में जन्मे श्री जवरीमल जी

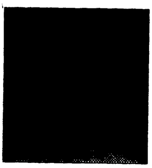

ओस्तवाल का ७३ वर्ष की आयु में ६ फरवरी २००२ को चेन्नई में स्वर्गवास हो गया। आप उदारमना, धर्मनिष्ठ, स्पष्ट वक्ता एवं सेवाभावी निर्भीक श्रावक थे। स्थानक, विद्यालय, गोशाला, कबूतर खाना, बकरा शाला, अस्पताल एवं साधर्मिक भाइयों को आपने उदारता पूर्वक सहयोग किया। आपने लम्बे समय तक धोबीपेठ श्री संघ, बिलाड़ा श्री संघ के अध्यक्ष का कार्यभार बड़ी निष्ठा एवं तन, मन, धन से संभाला। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

टांटोटी– धर्मप्रेमी सुश्रावक श्री मोखमसिंह जी सोनी का ७५ वर्ष की आयु में २५ जनवरी २००२ को हृदयगति रुकने से आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे सरल, सात्त्विक एवं सेवा-समर्पित जीवन के धनी थे। आपने ग्राम के सरपंच रहकर एवं पंचायत समिति व जिला परिषद् में अनेक समितियों के सदस्य रहकर जन.सेवा का एक आदर्श प्रस्तुत किया। रूढ़िवाद से मुक्त आपके विचार युवाओं के लिए विशेष प्रेरणादायी थे। – **रतनलाल जैन, गुलाबपुरा**

इन्दौर– सुश्राविका श्रीमती जतनकुँवर जी बरला धर्मपत्नी श्री सम्पतराज बरला

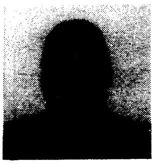

(सुपौत्री स्व. श्री नाथूलाल जी सेठिया, पुत्री श्री बसन्तीलाल जी सेठिया, रतलाम) का ६० वर्ष की आयु में ३ जनवरी २००२ को स्वर्गवास हो गया। आपकी स्व. आचार्य श्री नानालालजी म.सा. एवं वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अटूट श्रद्धा थी एवं आपने सभी साधु-साध्वियों की भाव-भक्ति से सेवा की। आपका पूरा परिवार संघ एवं शासननिष्ठ है। मरणोपरान्त श्रीमती बरला के नेत्र दान किये गए, जिनसे दो व्यक्तियों को नेत्र ज्योति मिल गई।

कानपुर– श्रीमती झणकारबाई जी लोढ़ा (माता श्री लूणकरण जी सज्जनराज जी लोढ़ा) का १९ अप्रेल २००२ को स्वर्गगमन हो गया। रत्नवंश के सन्त- सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध श्रद्धाभक्ति थी। संघ सेवा, सन्त-सेवा, स्वधर्मी-वात्सल्य-सेवा में आपकी सदैव शुभ भावना रहती थी। स्मरण भजन के साथ तप-त्याग में उनकी रुचि एवं भावना प्रेरणादायी थी। वे बुजुर्ग, जानकार और आदर्श श्राविका थीं।

जयपुर– श्रीमती कमलाबाई जी बछावत धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री जबरचन्द जी बछावत (भोपालगढ़ वाले) का २२ जनवरी २००२ को संथारे के साथ स्वर्गवास हो गया। आप बहुत ही सरल स्वभावी, धर्मनिष्ठ और व्यवहारकुशल सेवाभावी श्राविका थीं। आपका जीवन सादगी से परिपूर्ण था। प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करना आपके जीवन का अभिन्न अंग था। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के गुरुभ्राता स्वामी श्री अमरचन्द जी म.सा. ने इसी बछावत परिवार में जन्म लेकर जिनशासन का गौरव बढ़ाया था। श्रीमती कमलाबाई की आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. और अन्य सन्त-सतियों के प्रति असीम आस्था व सेवाभक्ति थी।

इचलकरणजी– सुश्राविका श्रीमती शकुन्तला बाई जी मुणोत धर्मपत्नी श्री

माणकचन्द जी मुणोत का ५४ वर्ष की अवस्था में संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थीं तथा परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति आपकी असीम श्रद्धा व भक्ति थी। आप स्थानीय संघ की आदर्श श्राविका थीं तथा प्रत्येक चातुर्मास में सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहती थीं। आपने चन्दनबाला महिला मण्डल के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। दशवैकालिक, पच्चीस बोल, प्रतिक्रमण एवं थोकड़ों की आप जानकार थीं तथा प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। आपका जीवन सरलता, कर्त्तव्यपरायणता, व्यवहारकुशलता, सेवाभाव आदि गुणों से सुशोभित था। –**पारसमल बोहरा**

सोजतसिटी– सुश्राविका श्रीमती प्यारीबाई जी कटारिया धर्मपत्नी स्व. श्री उदयराज जी कटारिया का ९ दिसम्बर २००१ को ८३ वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहने वाली श्राविका थीं।

इरोड़— धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती माडीकंवर जी भुरट धर्मपत्नी स्व. श्री

मेवरचन्द जी भुरट कुचेरा निवासी का २२ फरवरी २००२ को व्रत-प्रत्याख्यान सहित समाधिभाव युक्त संथारे सहित धर्मश्रवण करते हुए इरोड़ में स्वर्गवास हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्ण समर्पित थीं। साधु-संतों के प्रति आपकी प्रगाढ़ आस्था थी। प्रतिदिन सामायिक एवं प्रतिक्रमण करने के साथ आपके रात्रिभोजन का त्याग था। सरल स्वभावी एवं दृढ़धर्मी श्रीमती भुरट अपने पीछे संस्कारशील परिवार छोड़कर गई हैं।

अजमेर— माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर के सचिव पद से सेवानिवृत्त, कर्मठ,

शिक्षाविद् एवं समाजसेवी श्री गजराज जी जैन का ५ जनवरी २००२ को ७६ वर्ष की आयु में आकस्मिक निधन हो गया। सेवाभावी, धर्मनिष्ठ, स्वाध्यायशील, मृदुभाषी, विनम्र, दृढ़निश्चयी एवं पुरुषार्थ के धनी श्री जैन एक सामान्य शिक्षक के रूप में सेवा प्रारम्भ कर अपनी योग्यता एवं प्रतिभा से निरन्तर आगे बढ़ते रहे। आप 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका के चिन्तनशील पाठकों में से थे। आप अपने पीछे तीन पुत्रों व तीन पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

कोटा—राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र में प्रमुख समाजसेवी, समाज गौरव, अ.भा. श्वे. स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य तथा कोटा संभाग के

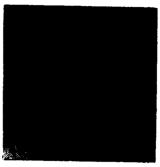

अध्यक्ष बाबूजी श्री हरबंसलाल जी जैन का १२ फरवरी २००२ को ७८ वर्ष की उम्र में निधन हो गया। आप जैन दिवाकर शिक्षा समिति, कोटा के संस्थापक अध्यक्ष थे तथा शिक्षा, चिकित्सा एवं समाज सेवा के क्षेत्र में आपने सराहनीय योगदान किया। भारत विभाजन के पश्चात् आपने स्यालकोट छोड़कर कोटा को अपनी कर्मस्थली बनाया। आपकी कार्यशैली से आपके साथ कार्य करने वाले सदैव प्रभावित रहे। सन् १९५२ से १९६० तक आप पार्षद रहे तथा विपक्षी नेता के रूप में रचनात्मक भूमिका निभाई। समाज में व्याप्त नशा, स्मैक, गुटखा आदि की प्रवृत्ति में डूबे युवकों को उबारने की दृष्टि से बाबूजी ने अपने जीवन के १५ वर्षों में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। आप जैन एकता के हिमायती थे। पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने जैन दिवाकर विद्यालय के रजत जयन्ती वर्ष के अवसर पर 'समाज रत्न' से सम्मानित किया। आपको पूर्व शिक्षामंत्री श्री ललितकिशोर जी चतुर्वेदी के कर-कमलों से 'श्रमण साधक' अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया था। आपने जीवनकाल में ही नेत्रदान की घोषणा कर दी थी, जिसके अनुसार मृत्यूपरान्त दो व्यक्तियों में नेत्र प्रत्यारोपित किये गये। आपकी श्रद्धांजलि सभा में राज्य के नगरीय विकास मंत्री श्री शांति धारीवाल, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री रामकिशन वर्मा सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। शोक सभा में परिवार की ओर से बाबूजी की स्मृति में

हरबंसलाल जैन चेरिटेबल ट्रस्ट में २,११,१११/– रुपये की राशि मानव-सेवा के कार्यों के लिए समर्पित करने की घोषणा की गई। **–कैलाश 'शलभ'**

कोपरगांव– धर्मनिष्ठ क्रियानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मदनबाई जी लोढ़ा का १८ फरवरी २००२ को संथारापूर्वक ९५ वर्ष की वय में समाधिमरण हो गया। संथारे के पच्चक्खाण आचार्यप्रवर १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. के मुखारविन्द से किए। सुश्राविका जी को मानो मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था, अतः उन्होंने महासती जी से उपवास, बेला, तेला एवं चोला तप करते हुए तिविहार सागारी संथारा किया। चौला तप के पश्चात् यावज्जीवन संथारा ग्रहण कर लिया। परिवार के सभी लोग दूर-दूर से एकत्रित हुए। महाराष्ट्र के दूरदर्शन एवं कई अखबारों में इसके समाचार प्रकाशित हुए। समाचार पढ़कर एवं सुनकर कई लोगों ने अनुमोदन का लाभ लिया। धार्मिक जनों को संथारे का ऐसा दृश्य कई वर्षों पश्चात् देखने को मिला।

जोधपुर– धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती केशरकंवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री माणकराज जी सुराणा का २ मार्च २००२ को त्याग-प्रत्याख्यान सहित ८५ वर्ष की

उम्र में स्वर्गवास हो गया। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित श्रीमती केशरकंवर जी का जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता, उदारता जेसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अनन्य आस्था एवं अगाध भक्ति थी। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता के कारण वे घर-परिवार और संघ-समाज में प्रतिष्ठित श्राविका रत्न थी। आप अपने पीछे भरापूरा संस्कारशील परिवार छोड़कर गई हैं। सम्पूर्ण परिवार रत्नवंश के प्रति समर्पित है।

उदयपुर– सुश्रावक डॉ. महेन्द्र कुमार जी सिंघवी पुत्र श्री अम्बालाल जी सिंघवी का

४८ वर्ष की उम्र में ७ नवम्बर २००१ को जयपुर में असामयिक निधन हो गया। आप सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में मनोविज्ञान के एसोशिएट प्रोफेसर थे। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति असीम आस्था थी। आप अपनी धर्मपत्नी विदुषी डॉ. सुषमा जी सिंघवी के साथ आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की सेवा में गए तो आपको आचार्यप्रवर ने जैन धर्म का मौलिक इतिहास ग्रन्थ सौंपते हुए स्वाध्याय की प्रेरणा की। डॉ. सिंघवी ने उसका नियमित पारायण किया। वे उच्च विचारों एवं निर्मल आचरण के धनी थे। दृढ़संकल्पी, सरल स्वभावी सिंघवी साहब अपने पीछे मातेश्वरी, धर्मपत्नी एवं पुत्र मुदित को छोड़कर गए हैं।

जयपुर– सुश्रावक श्री नौरतनमल जी डोसी (गुलाबपुरा वाले) का १४ मार्च २००२

को असामयिक स्वर्गवास हो गया। आप प्रतिभा सम्पन्न, कर्मठ एवं धर्मनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

नागपुर– धर्मप्रेमी श्री धर्मचन्द जी बांठिया का ९ मार्च २००२ को देहावसान हो गया। आपका जीवन सहृदयता, धर्मनिष्ठा, सेवाभावना आदि अनेक गुणों से ओतप्रोत था।

बैंगलोर– धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती चम्पाबाई जी मरलेचा धर्मपत्नी श्री सिरेमल जी मरलेचा का ८ मार्च २००२ को देहावसान हो गया। वे मूकसेवी, धर्मनिष्ठ,

संस्कारसम्पन्न, उदारहृदयी, स्वधर्मि-वात्सल्यप्रेमी तथा सन्त-सतियों की सेवा में विशेषत: विहार सेवा में अग्रणी थी। आपका स्वभाव सरल एवं मृदु था। आपके हृदय में दया एवं करुणा का भाव कूट-कूट कर भरा था। आप अशोक नगर महिला मण्डल की प्रभावी अध्यक्ष रही तथा कर्नाटक प्रान्तीय कॉन्फ्रेस की महिला शाखा के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया। वे उपाध्याय श्री केवलमुनि जैनोदय ट्रस्ट, बैंगलोर के लिए तन-मन-धन से समर्पित थीं। **–जे. माणकचन्द कोठारी**

अयनावरम (चेन्नई)– श्रीमती मूलीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री चांदमल जी बाफना का ६ मार्च २००२ को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मशीला श्राविका थी। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गई हैं।

बून्दी– श्रीमती मनोहरबाई जी नागौरी धर्मपत्नी स्व. श्री गुलाबचन्द जी नागौरी का २२ मार्च २००२ को ८२ वर्ष की अवस्था में समाधिमरण हो गया। आप राजकीय महाविद्यालय, बून्दी के इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. शांतिलाल जी नागौरी एवं श्री मदनलाल जी नागौरी, डूंगला की माताजी थी। आप धर्मनिष्ठ सुश्राविका थी। नित्य सामायिक एवं प्रतिक्रमण करने का आपके नियम था। लम्बे समय से आपके रात्रि में चौविहार का त्याग था। आपने आठ वर्षीतप किए तथा बेला, तेला, अठाई आदि तप किए थे। आपके दो लाडले पुत्रों ने दीक्षा ग्रहण की है। राष्ट्रसन्त श्री कमलमुनि 'कमलेश' एवं प्रखर वक्ता श्री चन्द्रेश मुनि आपके सुपुत्र हैं। **–प्रेमचन्द कोठारी**

पाचोरा– श्रीमती मथुराबाई फूलचन्द जी चौपड़ा का ७४ वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। वे कई वर्षों से बारह व्रत की और छोटी बड़ी तपस्याएं करती रहती थीं। सन्त-सतियों के प्रति उनकी सराहनीय सेवाभक्ति थी। उन्हें सब 'माँ' नाम से संबोधित करते थे। **–नेमीचन्द रांका, पूना शहर**

जयपुर– श्रीमान दुलीचन्द जी टांक का २७ दिसम्बर २००१ को निधन हो गया। आप उदारमना, धर्मपरायण एवं प्रसिद्ध समाजसेवी थे। आप वर्षों तक वीर बालिका महाविद्यालय के मन्त्री रहे। रत्न-व्यवसाय में आपने जयपुर को देश-विदेश में प्रतिष्ठा दिलाने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। आप श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा के अध्यक्ष एवं खरतरगच्छ महासंघ की कार्यकारिणी के सदस्य थे। आप निर्धन छात्रों को समय-समय पर अर्थ सहयोग प्रदान करते थे। कई निर्धन बेराजगार युवकों को आपने रत्न-व्यवसाय का कार्य अपनी देखरेख में सिखा कर उन्हें दक्ष किया। परम

श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति आपका अगाध श्रद्धाभाव था। अनेक बार दर्शनार्थ पधारते रहते थे।

–प्रकाशचन्द डागा

चाँदवड़ (नासिक)– सौ. कमलाबाई शांतिलाल जी बाफणा का ६२ वर्ष की आयु में ५ फरवरी २००२ को प्रत्याख्यान पूर्वक समाधिमरण हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति की, उदारमना एवं मिलनसार श्राविका थीं। आपके आदर्श व संस्कारों के कारण आपका पूरा परिवार धर्मप्रेमी, संगठित एवं संस्कारशील है। आप शीलव्रत सहित अनेक नियम-व्रतों का पालन करती थीं।

जोधपुर– डॉ. नरपतचन्द जी सिंघवी का २० मार्च २००२ को ७७ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान एवं जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के सेवानिवृत्त प्रोफेसर थे। आप कवि एवं साहित्यकार थे तथा जिनवाणी पत्रिका के प्रति आपका गहरा लगाव था। आपके पुत्र–पुत्री अमेरिका में बसे हुए हैं। गुलाब बनाम केक्टस आदि आपकी कई पुस्तकें हैं।

भोपालगढ़– श्रद्धानिष्ठ सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती मोहिनी देवी जी कांकरिया धर्मपत्नी श्री दलीचन्द जी कांकरिया का २४ फरवरी २००२ को ब्रेन हेमरेज के कारण आकस्मिक देहावसान हो गया। उनकी श्रद्धा-भक्ति और सेवाभावना अनुकरणीय थी। व्रत-नियमों के परिपालन के साथ उन्हें संघ की रीति-नीति, मर्यादा और गौरव का बहुत ध्यान था। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उनके आज्ञानुवर्ती सन्त-सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध आस्था एवं श्रद्धाभक्ति थी।

जयपुर– सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवी जी डागा धर्मपत्नी श्री गुलाबचन्द जी डागा का ८ मार्च २००२ को असामयिक देहावसान हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करने के साथ व्रत–नियमों का पालन भी करती थीं। सन्त-सतियों की सेवा में आप सदैव अग्रणी रहती थीं। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव था। आप कर्तव्यपरायण, सेवाभावी एवं विनम्र स्वभाव की श्राविका थीं।

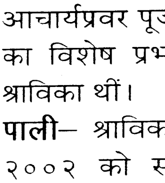

पाली– श्राविकारत्न श्रीमती धापु बाई जी रेड का ९१ वर्ष की आयु में ५ मार्च २००२ को स्वर्गवास हो गया। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं उनके आज्ञानुवर्ती सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध आस्था एवं श्रद्धा-भक्ति थी। सरलता, मृदुभाषिता , स्नेहशीलता जैसे सद्गुणों के कारण उनका जीवन प्रेरणादायी था। धर्मस्थान में आकर सामायिक,

स्वाध्याय, दयाव्रत करने में वे सदा आगे रहने वाली श्राविका थीं। आपके सुपुत्र श्री सम्पतराज जी शान्तिलाल जी रेड एवं उनका परिवार धर्मनिष्ठ है।

इन्दौर– सुश्रावक श्री पन्नालाल जी बोकड़िया सुपुत्र श्री सुगनचन्द जी बोकड़िया का ५८ वर्ष की उम्र में संथारा सहित २३ फरवरी २००२ को समाधि मरण हो गया। आप शान्त प्रकृति के धर्मनिष्ठ श्रावक थे और क्रियानिष्ठ संत-सती की सेवा में तत्पर रहते थे। आपने समभावों से वेदना सहन करते हुए देह का त्याग किया।

जयपुर– धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती पतंग कंवर जी मोदी धर्मपत्नी श्री श्रीचन्द जी मोदी, किशनगढ़ निवासी का ४ मार्च २००२ को देहावसान हो गया। आप कर्मनिष्ठ एवं सरलस्वभावी श्राविका थीं।

कोलकाता– समाजसेवी दीर्घतपस्वी तथा जैन भवन, कोलकाता के अध्यक्ष श्री नरेन्द्रपत सिंह जी दुग्गड़ का १ जनवरी २००२ को निधन हो गया। आपने लगातार १३५ बार ओली तप और उनत्तर बार अठाई तप किया। आपने एक बार ३८ दिन का मासखमण तप भी किया। आपको पुरानी दुर्लभ वस्तुओं के संग्रह का शोक था। आपके पास प्राचीन तथा नवीन सिक्कों का उल्लेखनीय संग्रह था।

जयपुर– श्राविका रत्न श्रीमती प्रेमदेवी जी हीरावत धर्मपत्नी श्री स्वरूपचन्द जी हीरावत का २१ फरवरी २००२ को स्वर्गवास हो गया। लोकप्रिय समाजसेविका श्रीमती हीरावत की देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्ण श्रद्धाभक्ति थी। आप आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य प्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. और सन्त-सतियों के प्रति असीम आस्था और अगाध भक्ति रखती थी। संत-सती वृन्द की सेवा में एवं धर्माराधन में भी आप अग्रणी रहती थी। आप अपने पीछे श्रद्धानिष्ठ, संस्कारशील परिवार छोड़कर गई हैं।

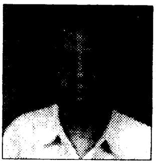

कोयम्बटूर– सुश्रावक श्री इन्दरचन्द जी गादिया (चण्डावल निवासी) का २७ जनवरी २००२ को निधन हो गया। आप मधुरभाषी कर्मनिष्ठ एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे। नियमित सामायिक एवं धर्माराधन करते थे। संत-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आप एस.एस. जैन ट्रस्ट के वर्षों से ट्रस्टी थे।

कोटा– श्रीमान् लक्ष्मीलाल जी जारोली का १० नवम्बर २००१ को निधन हो गया।

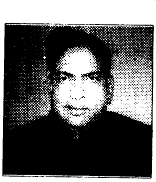

आप धर्मनिष्ठ एवं कर्त्तव्यपरायण श्रावक थे। प्रतिदिन सामायिक एवं पोरसी करते थे। प्रतिवर्ष साधु-संतों के दर्शन करते थे और अन्य धर्मप्रेमियों को भी साथ ले जाकर उनमें धर्म की अभिवृद्धि करते थे। आप स्पष्ट वक्ता एवं लोकप्रिय समाजहितैषी थे। आप श्री वर्द्धमान स्थानकवासी श्री संघ, कोटा की कार्यकारिणी के सक्रिय सदस्य रहे। –**कुशलराज मेहता**

सवाईमाधोपुर– सुश्रावक श्री रामगोपाल जी जैन, एण्डवा वाले बजरिया, सवाईमाधोपुर ने १० दिसम्बर २००१ को संथारा ग्रहण किया और ११ दिसम्बर २००१ को उनका स्वर्गवास हो गया। वे नियमित सामायिक करते थे। आचार्यप्रवर

पूज्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज एवं रत्नवंश के प्रति समर्पित श्रावक थे। आप भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं। परिवार के सभी युवा सदस्य स्वाध्याय एवं सामायिक की प्रवृत्तियों से जुड़े हुए हैं। **–शान्ता प्रसाद जैन**

भरतपुर– सुश्रावक श्री मूलचन्द जी जैन का २ जनवरी २००२ को देहावसान हो गया। आप धर्म के प्रति आस्थावान, सरल स्वभावी एवं मिलनसार व्यक्तित्व थे। आपकी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. तथा सन्त–सतीवृन्द पर अटूट श्रद्धाभक्ति थी। आप अपने पीछे संस्कारशील परिवार छोड़कर गए हैं।

बैंगलोर– सुश्रावक श्री जतनराज जी गुलेच्छा सी.ए. सुपुत्र श्री तिलोकचन्द जी घी वाले मूल निवासी जोधपुर का ५ अप्रेल २००२ को ५२ वर्ष की उम्र में आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आपकी आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. तथा सन्त–सतीवृन्द पर अटूट श्रद्धाभक्ति थी। आप बड़े ही सरलस्वभावी, मधुरभाषी एवं विनम्र दृढधर्मी श्रावक रत्न थे। आप प्रतिवर्ष पर्युषण पर्व में अठाई तप करते थे। आपने कई तेले किए और ११ दिवसीय तपस्या भी की। आपका परिवार बैंगलोर एवं जोधपुर में निवास करता है। आप अपने पीछे धर्मपत्नी, २ पुत्र, १ पुत्री तथा मातेश्वरी को छोड़कर गए हैं। पूरा परिवार आपके पदचिह्नों पर चलने के लिए तत्पर है। **– भण्डारी सरदारचन्द जैन**

ब्यावर– श्रीमती चंचलदेवी सुराणा धर्मपत्नी श्री भंवरलाल जी सुराणा का ७२ वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आप मूलत: नागौर निवासी गुरुभक्त श्री गुलाबचन्द जी सुराणा की पुत्रवधू थीं। आचार्यभगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्तरत्नों के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा थी। आपने अपने पीछे दो पुत्रों श्री नेमीचन्द जी एवं राजेन्द्र जी सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। सुराणा परिवार पीढ़ियों से रत्नवंश का भक्त रहा है। **– हस्तीमल गोलेछा**

जयपुर– श्री गुलाबचन्द जी बरड़िया का ९ अप्रेल २००२ को संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित थे तथा सन्त– सतियों की सेवा हेतु तत्पर रहते थे। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगीपूर्ण था।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

उत्तरप्रदेश में भाजपा-बसपा का गठबंधन

उत्तरप्रदेश में राष्ट्रपति शासन समाप्त होने की तैयारी है तथा ३ मई २००२ को बसपा नेता मायावती मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण कर रही है। भाजपा, उसके सहयोगी दलों एवं बसपा में मन्त्री पदों के लिए समझौता हो गया है। इससे चुनावों के पश्चात् आयी अस्थिरता का पटाक्षेप हो गया है।

डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी को अहिंसा एवं सद्भावना सम्मान

दिल्ली–प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने निवास पर आयोजित एक भव्य समारोह में प्रसिद्ध न्यायविद् एवं सांसद डॉ. लक्ष्मीमल्ल जी सिंघवी को जैन महासभा, दिल्ली द्वारा स्थापित प्रसिद्ध 'अहिंसा एवं सद्भावना सम्मान' प्रदान किया। यह सम्मान पहले श्री दलाई लामा, डॉ. कर्णसिंह, श्रीमती मेनका गाँधी आदि को दिया जा चुका है। डॉ. सिंघवी को हार्दिक बधाई।

दिल्ली में वर्द्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने १७ दिसम्बर २००१ को नई दिल्ली के सफ़दरजंग अस्पताल परिसर में भगवान महावीर के २६००वें जन्म कल्याणक वर्ष में 'वर्द्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज' का उद्घाटन किया। गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी समारोह के मुख्य अतिथि थे। अध्यक्षता स्वास्थ्य मंत्री डॉ. सी.पी. ठाकुर ने की। जैन समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे। सफदरगंज अस्पताल के परिसर में प्रारम्भ होने वाले इस मेडिकल कॉलेज के लिए सरकार ने ८१.६ करोड़ रुपये का अनुदान किया है। यह कॉलेज तथा अस्पताल राजधानी का विशिष्ट स्वास्थ्य केन्द्र होगा। दिल्ली में यह पाँचवाँ मेडिकल कॉलेज ३० वर्ष पश्चात् खोला जा रहा है। कॉलेज में शिक्षण कार्य प्रारम्भ हो गया है। इस कॉलेज में ५० प्रतिशत प्रवेश राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में रहने वाले छात्रों को दिया जायेगा और शेष ५० प्रतिशत प्रवेश देश के विभिन्न भागों के छात्रों को दिया जाएगा। भगवान महावीर २६००वाँ जन्म कल्याणक महोत्सव समिति के प्रयासों से अस्पताल के परिसर में परिवारजनों के लिए 'भगवान महावीर सेवा सदन' की स्थापना किए जाने की योजना है। **–एम.एल. आच्छा**

आतंकवाद के विरोध में रैली

दिल्ली– विश्व आतंकवाद के विरोध में हजारों नागरिकों ने विजय चौक (राजपथ) से इण्डिया गेट तक मौन पदयात्रा निकाली। स्वतन्त्र भारत के इतिहास में राजपथ पर जैन समाज द्वारा इस प्रकार का यह पहला कार्यक्रम था, जब मौन रूप में जैन संतों, साध्वियों, श्रमणियों तथा अन्य धर्माचार्यों और वरिष्ठ राजनेताओं के नेतृत्व में हजारों-हजार बहन, भाई और बच्चे भगवान महावीर के संदेश की टोपी पहन कर, गले में जैन ध्वज अंकित केसरिया पट्ट पहनकर अनुशासनबद्ध और मौन पद यात्रा में चल रहे थे और उस समय इस राजपथ पर उपस्थित सैकड़ों विदेशी और देश के नागरिक इस दृश्य के साक्षी, जब राष्ट्रपति भवन से इण्डिया गेट तक भगवान

महावीर के संदेशों के पट्ट और जैन ध्वज लहरा रहे थे तथा रैली की पूर्णता पर अहिंसा के प्रतीक २६०० गुब्बारों से इण्डिया गेट आच्छादित हो रहा था, तब सभी की जुबान पर एक ही वाक्य था कि भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव पर यह अद्‌भुत रचनात्मक समारोह सम्पन्न हुआ है। मंच का प्रभावी संचालन प्रो. रतन जैन ने किया।– **सुखराज सेठिया, मंत्री**

जब्त गोवंशीय पशुओं को न्यायालय नहीं छोड़ सकते

जोधपुर– राजस्थान उच्च न्यायालय ने एक महत्त्वपूर्ण फैसले में निर्धारित किया है कि राजस्थान गोवंशीय पशु अधिनियम १९९५ की धारा ५ व ७ के तहत जब्त किए गए पशुओं को छोड़ने या सुपुर्दगीनामे पर सौंपने का अधिकार न्यायिक मजिस्ट्रेट को नहीं है। यह अधिकार जिला कलक्टर एवं सम्भागीय आयुक्त को दिया गया है। वह सक्षम अधिकारी भी इन पशुओं को मात्र गोशाला, गोसदन या इस अधिनियम के तहत बनी ऐसी संस्थाओं को ही सौंप सकता है। यह फैसला उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सुनिल कुमार गर्ग ने जैन रत्न युवक संघ की ओर से अधिवक्ता मनोज भण्डारी द्वारा दायर याचिका को स्वीकार करते हुए दिया। उन्होंने अपने विस्तृत फैसले में कहा कि न्यायिक मजिस्ट्रेट को दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा ४५७ के तहत इस अधिनियम के तहत जब्त पशुओं को छोड़ने का अधिकार नहीं है। (दैनिक भास्कर २८ मार्च २००२ से संकलित)

वर्ष २०००-२००१ में मांस निर्यात दुगुना हुआ

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने श्री ललितभाई मेहता के उत्तर में बताया कि वर्ष २०००—२००१ में १४५४.२० करोड़ रुपये मूल्य का मांस निर्यात किया गया। मांस निर्यात की यह राशि वर्ष १९९९—२००० की राशि से लगभग दुगुनी है। वर्ष १९९९—२००० में ७९७.३१ करोड़ रूपये का मांस निर्यात किया गया था। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में सरकार की आयात निर्यात नीति में गोमांस के निर्यात पर पाबंदी है। —**प्रो. रतन जैन**

राजस्थान में पानी बचाओ बिजली बचाओ का नारा

राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री अशोक जी गहलोत ने पानी एवं बिजली को किफायत से काम लेने हेतु सरकारी स्तर पर एक नारा दिया है– 'पानी बचाओ, बिजली बचाओ सबको पढ़ाओ।' इस नारे का प्रयोग प्रत्येक सरकारी विज्ञापन के नीचे अखबार में देखने को मिलता है। किन्तु इस नारे को और अधिक बल के साथ लोगों को पहुंचाने की आवश्यकता है। पानी एवं बिजली की बचत के लिए लोगों का मन बनाना होगा।

सूचना

जिनवाणी का जैनागम विशेषांक कई पाठकों को बैरंग मिला है। जिनवाणी कार्यालय ने प्रत्येक अंक का 23 रुपये डाक विभाग को जमा कराया है। अतः किसी के यहां यह विशेषांक बैरंग पहुंचा हो तो वे महानुभाव बैरंग कवर (रेपर) आदि जिनवाणी कार्यालय में मय पत्र के प्रेषित करावें।– प्रकाशचन्द डागा, मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रूपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

7443 श्री राजेन्द्र कुमार जी कोठारी, चेन्नई (तमि.)
7444 श्री भंवरलाल जी रतनलाल जी कावड़िया मुथा, नाशिक (महा.)
7445 श्री पवन कुमार जी पुत्र श्री बालचन्द जी कोटेचा, जूना धुलिया (महा.)
7446 श्री राजेन्द्र कुमार जी लुणावत, सतारा (महा.)
7643 श्री पारसमल जी प्रकाश जी विनाकिया, बैंगलोर (कर्नाटक)
7656 श्री पारसचन्द जी जैन (समीधी वाले), सवाईमाधोपुर (राज.)
7657 श्री केसरलाल जी मुकेशकुमार जी जैन(मुनीमजी), सवाईमाधोपुर(राज.)
7658 श्री दामोदरलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7659 श्री अशोक जी जयन्त कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7660 श्री शांतिलाल जी महेन्द्रकुमार जी जैन(सोपवाले), सवाईमाधोपुर(राज.)
7661 श्री भैरूलाल जी पारसचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7662 श्री रूपचन्द जी हेमराज जी जैन (चतारा वाले), सवाईमाधोपुर (राज.)
7663 श्री नरेशचन्द जी जैन (करेला वाले), सवाईमाधोपुर (राज.)
7664 श्री लड्डूलाल जी मनोज कुमार जी (करेला वाले), सवाईमाधोपुर (राज.)
7665 श्री हेमराज जी रूपचन्द् जी जैन (अरनेठा वाले), सवाईमाधोपुर (राज.)
7666 श्री पारसचन्द जी पुत्र श्री रोडमल जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7667 श्री जवाहरलाल जी मोतीलाल जी नाहर, बडवानी (म.प्र.)
7668 श्री पारसमल जी मोतीलाल जी नाहर, बालकुंआ, बडवानी (म.प्र.)
7669 श्री हीरालाल जी मदनलाल जी खिंवसरा, न्याहलोद, धुलिया (महा.)
7670 श्री नेमीचन्द जी कुशालचन्द जी धारीवाल, अरणी, धुलिया (महा.)
7671 श्री गौतमचन्द जी पुत्र श्री बाबूलाल जी बागमार, मालेगांव(महा.)
7672 श्री महावीर जी पुत्र श्री हीरालाल जी कांकरिया, यावल, जलगांव(महा.)
7673 श्री मनोज कुमार जी पुत्र श्री मोतीलाल जी लोढ़ा, धुलिया (महा.)
7674 श्री अशोक कुमार जी पुत्र श्री पुखराज जी संखलेचा, धुलिया (महा.)
7675 श्री सुनील जी पुत्र श्री सूआलाल जी छाजेड़, बालापुर, धुलिया (महा.)
7720 Shri Narendra Ji Sukhlecha, Bangalore (Karnataka)
7735 Shri Sunil Ji Jain, Chennai (Tamilnadu)
7979 श्रीमती राजुल जी भण्डारी, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)
7980 Smt. Nisha Ji Kothari, Nagpur (Maharashtra)

300/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक
(अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् की योजना के अन्तर्गत)

7427 Shri V.S. Ranka Ji, Kota (Raj.)
7428 Shri Vijay Kumar Ji Pungalia, Jaipur (Raj.)
7429 Shri Sanjay Ji Phophaliya, Jaipur (Raj.)
7430 Shri Dharamraj Ji Kotecha, Jaipur (Raj.)
7431 Shri Padamchand Ji Bader, Jaipur (Raj.)

7432 Shri Vimal Chand Ji Vaid, Jaipur (Raj.)
7433 श्री रमेशचन्द्र जी नागसेठिया, होलनांथा, धुलिया (महा.)
7434 श्री राजेशकुमार जी चतुरमुथा, खेडा (कुसुंबा) धुलिया (महा.)
7435 श्री विजयकुमार जी मन्नालाल जी छाजेड़, बुलढाणा (महा.)
7436 श्री प्रकाशचन्दजी मोहनलाल जी धाड़ीवाल, राहाता, अहमदनगर (महा.)
7437 श्री सुमतिकुमार जी रांका, राहुई, अहमदनगर (महा.)
7438 श्री प्रवीण कुमार जी चाँदमल जी खिंवसरा, धुलिया (महा.)
7439 श्री शिरीष कुमार जी शांतिलाल जी खिंवसरा, धुलिया (महा.)
7440 श्री धर्मराज जी पारसमल जी सुराणा, भंडारा(महा.)
7441 श्री प्रकाशचन्द जी उत्तमचन्द जी कांकरिया, धुलिया (महा.)
7442 श्री रिखबचन्द जी कचरूलाल जी कांकरिया, धुलिया (महा.)
7447 श्री विनयचन्द जी चोरड़िया, जयपुर (राज.)
7448 श्री कोठारी मूलाकंवर ग्रन्थालय, कोटा (राज.)
7449 श्री उत्तमचन्द जी जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)
7450 श्री दलमचन्द जी पुत्र श्री जयचन्द जी सुराणा, बैंगलोर (कर्नाटक)
7451 श्री जबरचन्द जी कोठारी, जोधपुर (राज.)
7452 श्री गुलाबचन्द जी कोटड़िया, चेन्नई (तमि.)
7453 श्री फूलचन्द जी जैन, बयाना, भरतपुर (राज.)
7454 श्री महावीरचन्द जी सिसोदिया, चेन्नई (तमिलनाडु)
7455 श्री नौरतनमल जी मेहता, जोधपुर (राज.)
7456 Shri J. Parasmal Ji Gadiya, Chennai (Tamilnadu)
7457 Shri M. Sampat Ji Kothari, Chennai (Tamilnadu)
7458 श्री सुशील जी कुम्भट, मुम्बई (महा.)
7459 श्री महावीरचन्द जी लोढ़ा, ब्यावर, अजमेर (राज.)
7460 श्री सम्पतराज जी जैन, ब्यावर, अजमेर (राज.)
7461 श्री प्रकाशचन्द जी मकाणा, ब्यावर, अजमेर (राज.)
7462 श्री कैलाशचन्द जी बोहरा, ब्यावर, अजमेर (राज.)
7463 श्री रविकुमार जी सुराणा, ब्यावर, अजमेर (राज.)
7464 श्री संजय कुमार जी सिपानी, जगदीशपुर, सुल्तानपुर (उ.प्र.)
7465 श्री आशीष जी मेहता, जोधपुर (राज.)
7466 श्री संजयकुमार जी लोढ़ा, मदनगंज–किशनगढ़, अजमेर (राज.)
7467 श्री नरेन्द्र जी पारख, ब्यावर, अजमेर (राज.)
7468 श्री जिनेश कुमार जी जैन, अलीगढ़, टोंक (राज.)
7469 श्री रमेशचन्द जी जैन, अलीगढ़, टोंक (राज.)
7470 श्री हनुमानप्रसाद जी पुत्र श्री नन्दलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7471 श्री हनुमानप्रसाद जी पुत्र श्री उच्छबचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7472 श्री चन्द्रप्रकाश जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7473 श्री राकेश कुमार जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7474 श्री दानमल जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7475 श्री अशोक कुमार जी पुत्र श्री कपूरचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)

7476 श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
7477 श्री सुमन कुमार जी सोनी, जलगांव (महा.)
7478 श्री श्याम जी वर्मा, जलगांव (महा.)
7479 श्री महेश जी जैन, जलगांव (महा.)
7480 श्री अशोक के. चौपड़ा, जलगांव (महा.)
7481 श्री विजय जी जैन,जलगांव (महा.)
7482 श्री किशोर जी चौपड़ा, जलगांव (महा.)
7483 श्री पन्नालाल जी वर्मा, जलगांव (महा.)
7484 श्री श्यामसुन्दर जी सोनी, जलगांव (महा.)
7485 श्री अशोक कुमार जी सोनी, जलगांव (महा.)
7486 श्री श्रवण कुमार जी सोनी, जलगांव (महा.)
7487 श्री जयनेश जी विरेन्द्र कुमार जी वैद, थाने (महा.)
7488 Shri Puranchand Ji Chordia, Chennai (Tamilnadu)
7489 श्रीमती रेखा जी श्री राजेन्द्र जी मेहर, पूना (महा.)
7490 श्री रंजन जी कुम्भट, जोधपुर (राज.)
7491 आशा जी जौहरी, जोधपुर (राज.)
7492 श्री वैभव जी पुत्र श्री उम्मेदराज जी मेहता, जोधपुर (राज.)
7493 श्री जयन्तीलाल जी बाफणा, अहमदाबाद (गुजरात)
7494 श्री ज्ञानचन्द जी जैन (श्रीश्रीमाल), ब्यावर, अजमेर (राज.)
7495 श्री चेतन कोठारी, ग्रन्थालय, कोटा (राज.)
7496 श्री पंकज जी रांका, गोरेगांव (वेस्ट) मुम्बई (महा.)
7497 श्री प्रवीण जी गांग, सूरत (गुजरात)
7498 श्री सुशील जी नन्दावत, मलाड (वेस्ट), मुम्बई (महा.)
7499 श्री राजकुमार जी नाहर, मुम्बई (महा.)
7500 श्री सुरेन्द्र कुमार जी ढढ्ढा, भायन्दर (ईस्ट), ठाणे (महा.)
7501 श्री धनवन्त जी शाह, मुम्बई (महा.)
7502 श्री मोहनसिंह जी बूंलिया, भायन्दर (वेस्ट), ठाणे (महा.)
7503 श्री सुनिलकुमार जी जैन, मुम्बई (महा.)
7504 श्री प्यारेलाल जी मेहता, हरमाड़ा, अजमेर (राज.)
7505 श्री नवीन कुमार जी जैन, मुम्बई (महा.)
7506 श्री ऋषिकुमार जी कोचर, मुम्बई (महा.)
7507 श्री सुनिल जी सिंघवी, मुम्बई (महा.)
7508 श्री हीरालाल जी जैन, मुम्बई (महा.)
7509 श्री नथमल जी गोलेछा, मुम्बई (महा.)
7510 श्री प्रदीप जी गोलेछा, सूरत (गुजरात)
7511 श्री प्रदीप जी समदड़िया, भायन्दर (वेस्ट), ठाणे (महा.)
7512 श्री मनोज जी जैन, मुम्बई (महा.)
7513 श्री पंकज जी गोलेछा, मुम्बई (महा.)
7514 श्री अभय कुमार जी डोसी, मुम्बई (महा.)

7515 श्री धर्मचन्द जी कोठारी, मुम्बई (महा.)
7516 श्री घेवरचन्द जी जैन, मुम्बई (महा.)
7517 श्री रमेशचन्द्र जी मेहता, मुम्बई (महा.)
7518 Shri Gyanchand Ji Jain, Bhoiwda, Mumbai (Maharashtra)
7519 Shri Gyanchand Ji Jain, Bhuleshwer, Mumbai (Maharashtra)
7520 Shri, Bhulesher, Mumbai (Maharashtra)
7521 श्री नवीनभाई जी जैन, मुम्बई (महा.)
7522 श्री राजेन्द्र कुमार जी भण्डारी, शिवगांव, अहमदनगर (महा.)
7523 श्री रिखबचन्द जी सम्पतराज जी जैन, हैदराबाद (आ.प्र.)
7524 श्री नरेशकुमार जी जैन, सिकन्दराबाद (आ.प्र.)
7525 श्री जालमसिंह जी, मुम्बई (महा.)
7526 श्री विजयभाई जी, मुम्बई (महा.)
7527 श्री दलीचन्दभाई जी, मुम्बई (महा.)
7528 श्री चेतनभाई जी, मुम्बई (महा.)
7529 श्री रमेशभाई जी जव्हेरी, मुम्बई (महा.)
7530 श्री महेन्द्र जी बांठिया, मुम्बई (महा.)
7531 श्री भारत जी डेढिया, मुम्बई (महा.)
7532 श्री रसिकलाल जी शाह जी, मुम्बई (महा.)
7533 श्री सुभाषचन्द जी पीरगल, हैदराबाद (आ.प्र.)
7534 श्री पारसमल जी छाजेड़, हैदराबाद (आ.प्र.)
7535 श्री चम्पालाल जी छाजेड़, हैदराबाद (आ.प्र.)
7536 श्री किशोर बाबू जी संचेती, हैदराबाद (आ.प्र.)
7537 श्री वसन्त कुमार जी शर्मा, हैदराबाद (आ.प्र.)
7538 श्री पन्नालाल जी संचेती, हैदराबाद (आ.प्र.)
7539 श्री गौतमचन्द जी बोहरा, सिकन्दराबाद (आ.प्र.)
7540 श्री चन्द्रप्रकाश जी सुराणा, सिकन्दराबाद (आ.प्र.)
7541 श्री कान्तिलाल जी छाजेड़, हैदराबाद (आ.प्र.)
7542 श्री ताराचन्द जी जैन, हैदराबाद (आ.प्र.)
7543 श्री रमेश जी चौधरी, मैसूर (कर्नाटक)
7544 श्री अशोक जी दुग्गड़, चेन्नई (तमि.)
7545 श्री प्रकाशचन्द जी स्वानचन्द जी नाहर, चेन्नई (तमि.)
7546 श्री पानमल जी दुग्गड़, साउथ आरकाट (तमि.)
7547 श्री बाबूलाल जी दुग्गड़, आरकाट (तमि.)
7548 श्री रमेश जी दुग्गड़, आरकाट (तमि.)
7549 श्री प्रेमचन्द जी दुग्गड़, आरकाट (तमि.)
7550 श्री नरेन्द्र जी भंसाली, चेन्नई (तमि.)
7551 श्री बरथराज जी पुत्र श्री नथमल जी संकलेचा, चेन्नई (तमि.)
7552 श्री भरतकुमार जी जैन, चेन्नई (तमि.)
7553 श्री घीसूलाल जी जैन, चेन्नई (तमि.)

7554 श्री कान्तिलाल जी विनायकिया, चेन्नई (तमि.)
7555 श्री सुरेन्द्र कुमार जी कांकरिया, चेन्नई (तमि.)
7556 श्री चेनराज जी बोहरा, चेन्नई (तमि.)
7557 श्री रणजीतकुमार जी जैन, चेन्नई (तमि.)
7558 श्री पूरनमल जी जैन, चेन्नई (तमि.)
7559 श्री सजनराज जी जैन, चेन्नई (तमि.)
7560 श्री माणकचन्द जी जैन, चेन्नई (तमि.)
7561 श्री राजेन्द्र कुमार जी नबारिया, चेन्नई (तमि.)
7562 श्री नवरतन जी पुखराज जी चण्डालिया, चेन्नई (तमि.)
7563 श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, चेन्नई (तमि.)
7564 श्री संजय जी सिंघी, चेन्नई (तमि.)
7565 श्री अर्जुन जी तोलावत, चेन्नई (तमि.)
7566 श्री गौतम जी मालू, चेन्नई (तमि.)
7567 श्री अनिल जी डागा, चेन्नई (तमि.)
7568 श्री कमलेश कुमार जी शाह, चेन्नई (तमि.)
7569 श्री सुभाष जी कोठारी, चेन्नई (तमि.)
7570 श्री जेठमल जी समदड़िया, चेन्नई (तमि.)
7571 श्री राजेन्द्र कुमार जी श्रीश्रीमाल, चेन्नई (तमि.)
7572 श्री चेतनप्रकाश जी धर्मीचन्द जी लोढ़ा, बैंगलोर (कर्नाटक)
7573 श्री पारसमल जी सुखराज जी जैन, चेन्नई (तमि.)
7574 श्री संतोष जी रांका, चेन्नई (तमि.)
7575 श्री प्रकाश जी बम्ब, चेन्नई (तमि.)
7576 श्री दिनेश कुमार जी जैन, चेन्नई (तमि.)
7577 श्री मनोहरलाल जी जैन, चेन्नई (तमि.)
7578 श्री पुखराज जी मेहता, चेन्नई (तमि.)
7579 श्री अमोलकचन्द जी जैन, चेन्नई (तमि.)
7580 श्री मोतीलाल जी मूथा, चेन्नई (तमि.)
7581 श्री अरविन्द कुमार जी कटारिया, जलगांव (महा.)
7582 श्री दीपक कुमार जी बम्ब, जलगांव (महा.)
7583 श्री विजयकुमार जी चोरड़िया,इच्छापुर, खण्डवा (म.प्र.)
7584 श्री सुनिल कुमार जी चोरड़िया, जलगांव (महा.)
7585 श्री विजयकुमार जी बोथरा, बुलढाणा (महा.)
7586 श्री इन्द्रचन्द जी दगडूलाल जी शर्मा, चालीसगांव, जलगांव (महा.)
7587 श्री राजेन्द्र कुमार जी लालचन्द जी मेहेर, अहमदनगर (महा.)
7588 सौ. प्रीति जी श्री विजयकुमार जी, सिलोड़, औरंगाबाद (महा.)
7589 डॉ. चन्द्रकान्त जी पुखराज जी संकेलेचा, सिलोड, औरंगाबाद (महा.)
7590 श्री पारसमल जी टाटिया, सांझी, धुलिया (महा.)
7591 श्री रमेशचन्द जी टाटिया, सांझी, धुलिया (महा.)
7592 डॉ. डोरमल जी गोगड़, पिपलोद, धुलिया (महा.)
7593 श्री चन्द्रकान्त जी रांका, ताहराबाद, नासिक (महा.)

7594 श्री महावीरचन्द जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
7595 श्री प्रेमराज जी लूणावत, मुम्बई (महा.)
7596 श्री प्रदीप जी भण्डारी, मुम्बई (महा.)
7597 श्री सुभाषचन्द जी लुणावत, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7598 श्री रमेशचन्द जी लुणावत, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7599 श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7600 सौ. संगीता श्री रमेशचन्द जी चोरड़िया, लासलगांव, नासिक (महा.)
7601 कुमारी सपना जी धाड़ीवाल, पाचोरा (महा.)
7602 अध्यक्ष श्री स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, नागद, औरंगाबाद (महा.)
7603 श्री नन्दलाल जी वेदमूथा, नागद, औरंगाबाद (महा.)
7604 श्री राजमल जी वेदमूथा, नागद (महा.)
7605 सौ. विजया शांतिलाल जी बाफणा, नरडाणा, धुलिया (महा.)
7606 श्री भंवरलाल जी पन्नालाल जी जैन, निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़ (राज.)
7607 श्री कांतिलाल जी लोढ़ा, सटाणा, नासिक (महा.)
7608 श्री अशोकचन्द जी कोठारी, लासूर स्टेशन, औरंगाबाद (महा.)
7609 सौ. रंजनादेवी जी समदड़िया, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7610 कुमारी योगिता मोहनलाल जी छाजेड़, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7611 सौ. सपना जी टाटिया, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7612 सौ. सरला जी कोचर, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7613 सौ. सुनिता जी छाजेड़, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7614 सौ. मीना जी छाजेड़, इगतपुरी, नासिक (महा.)
7615 सौ. चन्द्रकला जी कांकरिया, पिपलगांव बसवण, नासिक (महा.)
7616 श्री शांतिलाल जी संकलेचा, धांदरणा, धुलिया (महा.)
7617 श्री चन्दनमल जी कांकरिया, न्यायडोंगरी, नासिक (महा.)
7618 श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, न्यायडोंगरी, नासिक (महा.)
7619 श्री शांतिलाल जी नाहर, न्यायडोंगरी, नासिक (महा.)
7620 श्री दिलीप कुमार जी दुग्गड़, न्यायडोंगरी, नासिक (महा.)
7621 सौ. अलका जी छाजेड़, अमलनेर, जलगांव (महा.)
7622 श्री ताराचन्द जी कचरदास जी दरड़ा, चिंचला, जलगांव (महा.)
7623 श्री मोतीलाल जी छाजेड़, चिंचला, जलगांव (महा.)
7624 श्री दिलीप कुमार जी कोठारी, लासूर, जलगांव (महा.)
7625 डॉ. सुनीलकुमार जी आंचलिया, चालीसगांव, जलगांव (महा.)
7626 श्री मुकेश जी गोलेछा, जलगांव (महा.)
7627 Shri P.C. Bhandari Ji, Hyderabad (A.P.)
7628 श्री पी. भंवरलाल जी सेठिया, चेन्नई (तमि.)
7629 श्री प्रेमचन्द जी सेठिया, चेन्नई (तमि.)
7630 श्री महेन्द्र कुमार जी बोहरा, चेन्नई (तमि.)
7631 श्री भंवरलाल जी धनरूप जी बेताला, चेन्नई (तमि.)
7632 श्री सज्जनराज जी सुराणा, चेन्नई (तमि.)

7633 Shri Vijayraj Ji Kothari, Chennai (Tamilnadu)
7634 Shri Navratan Ji Bhandari, Chennai (Tamilnadu)
7635 Vijay Finance, Chennai (Tamilnadu)
7636 Ganesh Finance, Chennai (Tamilnadu)
7637 Shri Naresh Kumar Ji Chhallani, Chennai (Tamilnadu)
7638 Shri D. Gautamchand Ji Todarwal, Chennai (Tamilnadu)
7639 Shri P. Manakchand Ji Jain, Chennai (Tamilnadu)
7640 सुश्री सपना जी धाडीवाल, पाचोरा (महा.)
7641 श्री आनन्द जी छाजेड़, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
7642 श्री सुनील जी मित्तल, जवाहरनगर, जयपुर (राज.)
7644 श्री विमल जी लोढा, जवाहर नगर, जयपुर (राज.)
7645 श्री महावीर जी जैन, डाबला, भीलवाड़ा (राज.)
7646 श्री नवीन जी ढोर, जवाहर नगर, जयपुर (राज.)
7647 श्री नवीन जी कोठारी, सोडाला, जयपुर (राज.)
7648 श्री रक्षित जी पालावत, तिलकनगर, जयपुर (राज.)
7649 श्री धर्मचन्द जी कोटिया, जयपुर (राज.)
7650 श्री निर्मल कुमार जी जैन, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
7651 श्री सुनील कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
7652 श्री हरीशचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
7653 श्री प्रकाश जी खींचा, मानसरोवर, जयपुर (राज.)
7654 श्री शशांक जी चौधरी, जयपुर (राज.)
7655 श्री सत्येन्द्र सिंह जी चौधरी, जयपुर (राज.)
7676 Shri Hemant Ji Lodha, Jodhpur (Raj.)
7677 Shri C. Mithalal Ji Jain, Mysore (Karnataka)
7678 Shri Mahender Kumar Ji Lodha. Mysore (Karnataka)
7679 Shri, Hyderabad (A.P.)
7680 Shri Susheela Chandanmal Ji jain, Mysore (Karnataka)
7681 Shri Suwalal Ji Santosh Kumar Ji Ostwal, Mysore (Karnataka)
7682 Shri P. Sampathraj Ji Jain,Metlupaliyam,Coimbatore(Tamilnadu)
7683 Shri Prakashchand Rahul Kumar Ji Bhandari,Mysore(Karnataka)
7684 Shri Sohanlal Ji Mutha, Mysore (Karnataka)
7685 Shri M. Prakashchand Ji Ranka, Maddur, Mandiya (Karnataka)
7686 Shri Budhmal Ji Mutha, Mysore (Karnataka)
7687 Shri Kiranraj Ji Patawa (N.) Mysore (Karnataka)
7688 Shri M. Sawalchand Ji Jain, Mysore (Karnataka)
7689 Shri B. Dharmichand Ji Khabiya, Mysore (Karnataka)
7690 Shri Vinodh Kumar Ji Khabiya, Mysore (Karnataka)
7691 Shri Devraj Ji Jambu Kumar Ji, Mysore (Karnataka)
7692 Shri Magraj Ji Padamchand Ji Mutha, Mysore (Karnataka)

7693 Shri R. Prakashchand Vimalchand Ji Mutha,Mysore(Karnataka)
7694 Shri Parasmal Ji Mahaveerchand Ji Khabiya,Mysore(Karnataka)
7695 Shri Bhanwarlal Ji Nathmal Ji Jain, Mysore (Karnataka)
7696 Shri Lalchand Ji Rajesh Kumar Ji Bohara, Mysore (Karnataka)
7697 Shri , Mysore (Karnataka)
7698 Shri Sohanlal Ji Bhansali, Mysore (Karnataka)
7699 Shri Mohanlal Ji Nirmal Kumar Ji Kothari, Mysore (Karnataka)
7700 Shri Hemanth Kumar Ji Bohara, Mysore (Karnataka)
7701 Shri B.Shantilal Ji Khabiya, Mysore (Karnataka)
7702 Shri B. Champalal Ji Khabiya, Mysore (Karnataka)
7703 Shri Rajender Kumar Ji Bhansali, Mysore (Karnataka)
7704 Shri Rikhabchand Mahaveerchand Bhansali,Mysore(Karnataka)
7705 Shri Amarchand Ji Shantilal Ji Roonwal, Bangalore (Karnataka)
7706 Shri J.Pukhraj Ji Jain, Chennai (Tamilnadu)
7707 श्री बसन्तमल जी मोहनोत, सूरत (गुजरात)
7708 Shri Dilip Ji Jain, Secunderabad (A.P.)
7709 Shri Vikash Ji Kankariya, Thane(w) (Maharashtra)
7710 श्री अमृतराज ट्रेडर्स, संगमनेर, अहमदनगर (महा.)
7711 श्री मोहनलाल रतनचन्द जी ओहरा, संगमनेर, अहमदनगर (महा.)
7712 श्री रमणीलाल पितांबरदास जी मेहता, संगमनेर, अहमदनगर (महा.)
7713 श्री रिखबदास कचरदास जी मेहता, संगमनेर, अहमदनगर (महा.)
7714 श्री कांतीलाल जी रामचन्द जी बुरड, राहाता, अहमदनगर (महा.)
7715 श्री विरेशकुमार जी रमणलाल जी रूणवाल, राहाता, अहमदनगर (महा.)
7716 श्री दीपक कुमार जी रतनचंद जी सरनोत, लोणी, अहमदनगर (महा.)
7717 श्री सुनिलकुमार जी शांतीलाल जी लुणावत, लोणावला, पुणे (महा.)
7718 श्री प्रदीपकुमार जी पुखराज जी मेहता, बलड़ी, खंडवा (म.प्र.)
7719 श्री नितीन कुमार जी रमेशचन्द जी टाटिया, पुणे (महा.)
7721 Shri Sunil Ji Jain, Hyderabad (A.P.)
7722 Shri P.C.Chhajer Ji Sanjeev Ji Jain, Coimbatore (Tamilnadu)
7723 Shri Mohansingh Ji Sanjay Ji Jain, Ahmedabad (Gujrat)
7724 श्री राजकुमार जी जैन, मण्डावर-महुआ रोड़, दौसा (राज.)
7725 श्री डालचन्द जी जैन (अध्यापक), मण्डावर-महुआ रोड, दौसा (राज.)
7726 श्री जैनीप्रसाद जी जैन, मण्डावर-महुआ रोड, दौसा (राज.)
7727 श्री महेन्द्रदत्त जी शर्मा, मण्डावर-महुआ रोड, दौसा (राज.)
7728 सौ. शोभा जी धर्मपत्नी श्री सुनील कुमार जी खिंवसरा, माण्डल,जलगांव(महा.)
7729 श्री विनोद कुमार जी जैन, कन्जौली लाईन, भरतपुर (राज.)
7730 श्री शांतिलाल जी नाहर, देवगढ मदारियां, राजसमन्द(राज.)
7731 श्री ज्ञानचन्द जी प्रकाशचंद जी बम्ब, जयपुर (राज.)
7732 श्री भागचन्द जी पन्नालाल जी कांकरिया, शेलबड़, जलगांव (महा.)

7733 श्री सुरेशकुमार कपूरचन्द जी जैन, देई, बून्दी (राज.)
7734 श्री तेजमल जी पदमकुमार जी जैन, देई, बून्दी (राज.)
7736 श्री सुरेशचन्द जी जुगराज जी टाटिया, साक्री, धुलिया (महा.)
7737 श्री पोपटलाल जी अशोक कुमार जी चौपड़ा, जायखेड़ा, नासिक (महा.)
7738 श्री (डॉ.) रूपेशकुमार जी जसराज जी कांकरिया, जायखेड़ा, नासिक(महा.)
7739 श्री बालचंद जी मुरलीधर जी कांकरिया, जायखेड़ा, नासिक (महा.)
7740 श्री नेमीचन्द जी गुलाबचन्द जी कांकरिया, जायखेड़ा, नासिक (महा.)
7741 श्री चन्द्रकांत जी जसराज जी कांकरिया, जायखेडा, नासिक(महा.)
7742 श्री चंपालाल जी भंसाली, जायखेड़ा, नासिक (महा.)
7743 श्री विनोद कुमार जी ताराचंद जी खिंवसरा, जायखेड़ा, नासिक(महा.)
7744 श्री अशोक कुमार जी भीकमचन्द जी भंसाली, अजमेर (राज.)
7745 श्री मुकेश जी कन्हैयालाल जी ओसवाल, अजमेर (राज.)
7746 श्री अशोक जी फतेहसिंह जी जैन, अजमेर (राज.)
7747 श्री इन्दरचन्द जी रतनलाल जी पोखरणा, अजमेर (राज.)
7748 श्री पारसमल जी चाँदमल जी गोखरू, अजमेर (राज.)
7749 श्री राजेन्द्र कुमार जी पारसमल जी कर्णावट, मुम्बई (महा.)
7750 श्री सतीश जी सोभागमल जी सांखला, अजमेर (राज.)
7751 श्री गोविन्दराम जी अजयपाल जी वर्मा, अजमेर (राज.)
7752 श्री शम्भूसिंह जी कालूसिंह जी चौरड़िया, मदनगंज–किशनगढ़, अजमेर(राज.)
7753 श्री निहालसिंह जी भोपालसिंह जी चौधरी, भीलवाड़ा (राज.)
7754 श्री सुरेन्द्रमल जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
7755 श्रीमती शैफाली जी श्री विमलचन्द जी बोथरा, जोधपुर (राज.)
7756 श्री सुरेन्द्र जी कोठारी, जोधपुर (राज.)
7757 श्री जयन्तीलाल जी कांतिलाल जी बाफना, धुलिया (महा.)
7758 श्री शीतलकुमार जी तानीराम जी शामसुखा, धुलिया (महा.)
7759 सौ. मदनबाई जी बाफणा धर्मपत्नी श्री उत्तमचन्द जी बाफणा, धुलिया (महा.)
7760 श्री सुन्दरलाल जी शिवचन्द जी ललवाणी, बुलठाणा (महा.)
7761 श्री धर्मराज जी पारसराज जी सुराणा, भण्डारा (महा.)
7762 श्रीमती कौशल्या बाई जी श्री चतुरमल जी बोथरा, शाहदा, नन्दुरबार(महा.)
7763 श्री प्रदीप जी झुबरलाल जी खिंवसरा, मुकटी, धुलिया (महा.)
7764 श्री नीतिन जी सुहास जी जांगडा, पूना (महा.)
7765 श्री विजयकुमार जी चन्द्रभान जी खिंवसरा, मांडल, जलगांव (महा.)
7766 श्री नेमीचन्द जी स्वरूपचन्द जी बागरेचा, नेर, धुलिया (महा.)
7767 श्री विजेश जी देवकरण जी काबरा, जलगांव (महा.)
7768 श्री जगदीश जी हीरालाल जी व्यास, जलगांव (महा.)
7769 श्री संतोष कुमार जी तेजराम जी पालरेचा, पूना (महा.)
7770 श्री कांतिलाल जी पोपटलाल जी लूंकड़, पुणे (महा.)
7771 श्री शंकर जी केसुराम जी चौधरी, पुणे (महा.)
7772 श्री बालूराम जी रामदयाल जी भटड़, पुणे (महा.)

7773 श्री सुमतिलाल जी धनराज जी मुथा, पुणे (महा.)
7774 श्री पुरुषोत्तम जी शिवनारायण जी राठी, पुणे(महा.)
7775 श्री बाबुलाल जी कान्तिलाल जी, पुणे (महा.)
7776 श्री, पुणे (महा.)
7777 श्री (डॉ.) अनूपचन्द जी अमरचन्द जी छाजेड़, राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)
7778 श्री आनन्दकुमार जी नन्दलाल जी जैन, भडगांव, जलगांव (महा.)
7779 श्री लालचन्द जी सज्जनराज जी जैन (संचेती), भड़गांव, जलगांव (महा.)
7780 श्री भंवरलाल जी पोपटलाल जी जैन(लुणावत), भड़गांव, जलगांव (महा.)
7781 श्री सुनिलकुमार जी पुरणमल जी साबद्रा, भड़गांव, जलगांव (महा.)
7782 श्री सुभाष जी त्रिलोकचन्द जी जैन (मित्तल), भड़गांव, जलगांव (महा.)
7783 श्री प्रकाशचन्द जी बाबूलाल जी सुराणा, भड़गांव, जलगांव (महा.)
7784 श्री मोहनलाल जी हंसराज जी छाजेड़, सौंदाणा, नासिक (महा.)
7785 श्री नेमीचन्द जी भागचन्द जी छाजेड़, सौंदाणा, नासिक (महा.)
7786 श्री धनेन्द्र कुमार जी घेवरचन्द जी कर्णावट, सौंदाणा, नासिक (महा.)
7787 श्री सुगनचन्द जी घेवरचन्द जी बोरा, वणी, नासिक (महा.)
7788 श्री दिलीपकुमार जी बनेचन्द जी बाफणा, चालीसगांव, जलगांव (महा.)
7789 श्री रमेशचन्द जी उत्तमचन्द जी दसेरण, चालीसगांव, जलगांव (महा.)
7790 सौ. सीमा मनोज जी छाजेड़, चालीसगांव, जलगांव (महा.)
7791 सौ. मनीषा सुरेन्द्रचन्दजी ओसवाल, चालीसगांव, जलगांव (महा.)
7792 सौ. संगीता रविन्द्र कुमार जी छाजेड़, चालीसगांव, जलगांव (महा.)
7793 कु. सारिका रमेशचन्द जी आंचलिया, चालीसगांव, जलगांव (महा.)
7794 Shri C.M. Ji Chunnilal Ji Kothari, Chennai (Tamilnadu)
7795 Shri S.V.S. Jain Sangh, Chennai (Tamilnadu)
7796 श्री अविनाश जी अरूण कुमार जी मेहता, नई दिल्ली
7797 श्री शुभम जी संजय जी मेहता, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)
7798 श्री रौनक जी गौतमसिंह जी कर्णावट, नई दिल्ली
7799 श्री दीपक जी ओस्तवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
7800 श्री धनपतमल जी सुमेरमल जी टाटिया, पटपडगंज, दिल्ली
7801 श्रीमती राधिका धर्मपत्नी श्री अमीत जी मेहता, वसन्तकुंज, नई दिल्ली
7802 श्री नरेन्द्र जी किशनलाल जी अग्रवाल, जोधपुर (राज.)
7803 श्री कनक जी भागचन्द जी राठौड़, मुम्बई (महा.)
7804 श्री सुभाष जी नागोरी, अन्धेरी वेस्ट, मुम्बई (महा.)
7805 श्री अशोक जी हीराचन्द जी हुण्डिया, चूनाभटी, मुम्बई (महा.)
7806 श्री इन्दरमल जी मूलचन्द जी जैन, विलेपार्ले ईस्ट, मुम्बई (महा.)
7807 श्री रिखबचन्द जी डूंगरमल जी छाजेड़, अन्धेरी ईस्ट, मुम्बई (महा.)
7808 श्री भुरालाल जी लाभचन्द जी जैन, सांकीनाका, मुम्बई(महा.)
7809 श्री विमलचन्द जी मेघराज जी नाहर, सांकीनाका, मुम्बई (महा.)
7810 श्री ओम जी रूपचंद जी कोठारी, फानसवाड़ी, मुम्बई (महा.)
7811 श्री महेन्द्र जी हरकराज जी मुणोत, मलाड़ वेस्ट, मुम्बई (महा.)

7812 श्री राजेश जी नागजी विरजी कारानी, चेम्बुर, मुम्बई(महा.)
7813 Shri Dinesh Ji Jain, Salem (Tamilnadu)
7814 Shri Kamalchand Ji Seshmulji Sankala, Coimbatore (Tamilnadu)
7815 Shri Rajesh Ji Jawaharlal Ji Metha, Hospet (Karnataka)
7816 Shri Pradeep Ji Jawaharlal Ji Metha, Chennai (Tamilnadu)
7817 Smt. Sobhabai Ji Subhashchand Ji Nahar, Secunderabad (A.P.)
7818 Shri Rajkumar Ji Govindlal Ji Ostwal, Ahamadpur
7819 Shri Pradeep Ji Harichand Ji Solanki, Hyderabad (A.P.)
7820 Art India, Mumbai(Maharashtra)
7821 Shri Kantilal G.Ji Shah, Mumbai(Maharashtra)
7822 S.R. Enterprises, Mumbai(Maharashtra)
7823 Dhiral's Creations, Mumbai(Maharashtra)
7824 Shri Goutamchand Ji Champalal Ji Raisoni, Hyderabad(A.P.)
7825 Shri Shantlal Ji Nahar, Hyderabad(A.P.)
7826 Shri Subhashchand Bharatkumar Ji Daga, Hyderabad(A.P.)
7827 Shri Rajendra Kumar Phoolchand Ji Katrecha,Ambajogai (M.S.)
7828 Shri Dinesh Ji Shantilal Ji Jain, Hyderabad (A.P.)
7829 Shri Ganpatraj Ji Ghewarchand Ji Bagrecha, Hyderabad(A.P.)
7830 Shri Kantilal Ji Bhaikamchand Ji Bagrecha, Hyderabad (A.P.)
7831 Shri Bhanwarlal Ji Lalwani, Hyderabad (A.P.)
7832 Shri Parasbhai Ji Jain, Hyderabad (A.P.)
7833 श्री गुलाबभाई जी मिश्रीमल जी जैन,मुम्बई (महा.)
7834 Shri Arun Kumar Ji Amolakchand Ji Mutha, Hyderabad (A.P.)
7835 Shri Manoj Kumar Ji Jetmal Ji Mutha, Hyderabad(A.P.)
7836 श्री सुभाषचन्द जी नेमीचन्द जी कोठारी, माजलगांव, बीड (महा.)
7837 Shri Mahaveerchand Ghisulal Ji Jain(Kataria), Hyderabad(A.P.)
7838 Shri Jawrilal Ji Vichulal Ji Pitaliya , Hyderabad (A.P.)
7839 Shri Laduram Ji Magraj Ji Dank, Hyderabad (A.P.)
7840 Shri Shantilal Ji Roopchand Ji Gandhi, Hyderabad (A.P.)
7841 Shri Kevalchand Ji Lalchand Ji Jain, Hyderabad (A.P.)
7842 Shri Banshilal Ji Ghisulal Ji Pataliya, Hyderabad (A.P.)
7843 Shri Srenik Kumar Ji Kewalchand Ji Kataria, Hyderabad (A.P.)
7844 Shri Dinesh Kumar Ji Jetmal Ji, Hyderabad (A.P.)
7845 श्री हीरालाल जी रतनलालं जी लोढ़ा, माजलगांव, बीड़ (महा.)
7846 श्री सुभाषलाल जी चुन्नीलाल जी पारख, अहमदनगर (महा.)
7847 श्री दिलीपकुमार जी भीकमचन्द जी बाफणा, कुकाणा, अहमदनगर (महा.)
7848 श्री रमेशलाल जी सौभागचन्द जी भण्डारी, औरंगाबाद (महा.)
7849 Shri Milapchand Ji Bisanchand Ji Chhajer, Hyderabad (A.P.)
7850 Shri Rajesh Ji S.M. Tatia Ji, Margao (GOA)

7851 Shri Dilip Ji Subhkaran Ji Jain (Dugar), Verna(GOA)
7852 Shri Subhash Ji Pannalal Ji Jain Baid, Ponda (GOA)
7853 Shri Suresh Ji Bhanwarlal Ji Jain, Ponda (GOA)
7854 Shri Abhaychand Ji Sawarmal Ji Surana, Margao (GOA)
7855 श्री राणुलाल जी जुगराज जी बाफणा, नेर, धुलिया (महा.)
7856 श्री स्थानकवासी जैन संघ, नेर, धुलिया (महा.)
7857 श्री नथमल जी माणकलाल जी कांकरिया, निझर, सूरत (गुजरात)
7858 श्री राजेन्द्र जी जैन, भरतपुर (राज.)
7859 श्री जम्बूकुमार जी जैन, इन्दौर (म.प्र.)
7860 श्री सुमितकुमार जी केवलचन्द जी जैन, आशाषी, ठाणा (महा.)
7861 श्री अभिज्ञान जी सुज्ञान जी मोदी, जोधपुर (राज.)
7862 Shri K. Manikchand Ji, Bellary (Karnataka)
7863 Shri Gyanchand Ji Chetan Kumar Ji, Bellary (Karnataka)
7864 श्री संतोषकुमार जी अनूपचन्द जी बोहरा, कोरबा (छत्तीसगढ़)
7865 श्री हेमन्त जी प्रकाशमल जी जैन, जोधपुर (राज.)
7866 श्री शंकरलाल जी नितीन कुमार जी चौरड़िया, जलगांव (महा.)
7867 श्री मनोजकुमार जी बस्तीमल जी जैन, शेरगढ़, जोधपुर (राज.)
7868 श्री सुनित जी जैन, भरतपुर (राज.)
7869 श्री मोहनलाल जी बोथरा, जोधपुर (राज.)
7870 श्री प्रवीण जी उम्मेदमल जी मेहता, जोधपुर (राज.)
7871 श्री चन्दूलाल जी लोहिया, जोधपुर (राज.)
7872 श्री निरंजन जी तेजसिंह जी मोगरा, राजसमन्द(राज.)
7873 श्री उम्मेदमल जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
7874 श्री गोकुलराम जी रामूराम जी, जोधपुर (राज.)
7875 श्री जाकिरअली शौकतअली जी, जोधपुर (राज.)
7876 श्री मुकेश जी सोहनलाल जी मेहता, जोधपुर (राज.)
7877 श्री राजेन्द्रमल जी मोहनमल जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
7878 श्री बालकृष्ण पा. लेंगरे पाण्डुरंग जी, नाला सोपरा(प), ठाणा (महा.)
7879 श्री सुन्दरलाल जी गिनोलाल जी वर्मा, मुम्बई (महा.)
7880 श्री गीता ट्रेडर्स, भायन्दर (वेस्ट), ठाणा (महा.)
7881 श्री किशनसिंह जी तुलसीसिंह जी राजपूत, नालासोपारा वेस्ट,ठाणा (महा.)
7882 श्री दीपक जी नरपतमल जी लोढ़ा, मुम्बई (महा.)
7883 श्री अशोक जी दशरथमल जी गांग, पाली (राज.)
7884 श्री महेन्द्र जी हीरालाल जी जैन, मीरा रोड़ ईस्ट, ठाणा (महा.)
7885 श्री भंवरलाल जी केशरीमल जी छाजेड़, मुम्बई (महा.)
7886 श्री आनन्दराज जी भंवरलाल जी चौपड़ा, पाली (राज.)
7887 श्री मुकेशकुमार जी शांतिलाल जी कटारिया, पाली (राज.)
7888 श्री शांतिलाल जी लूंकड़, पचपदरा शहर, बाडमेर (राज.)
7889 श्री आनन्दराज जी हरकचन्द जी कंकुलोल, पाली (राज.)

7890 श्री, पाली (राज.)
7891 श्री महेन्द्र जी पूनमचन्द जी संकलेचा, जोधपुर (राज.)
7892 श्री सुभाष जी भोपालचन्द जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
7893 श्री गुलाब जी माणकलाल जी छाजेड़, जोधपुर (राज.)
7894 श्री ताराचन्द जी संचेती, जोधपुर (राज.)
7895 श्री रवि जी नरपतमल जी जैन, जोधपुर (राज.)
7896 श्री नीरज जी नरेन्द्रमल जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
7897 श्री मीठालाल जी माणकलाल जी छाजेड़, जोधपुर (राज.)
7898 श्री सुरेन्द्र जी रामनारायण जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
7899 श्री प्रतापचन्द जी मोतीचन्द जी सिंघवी, नई दिल्ली
7900 श्री अजय जी सूरजराज जी टाटिया, जोधपुर (राज.)
7901 Shri Anuj S.Ji S. Mehta, Sivakasi (Tamilnadu)
7902 Shri Dinesh Ji Kankariya, Chennai (Tamilnadu)
7903 Shri Gautamchand Ji S.C. Jain Ji, Chennai (Tamilnadu)
7904 Shri Vikas Ji P.C.Bhandari Ji, Chennai (Tamilnadu)
7905 Shri D. Rohitkumar Ji Chourdia, Chennai (Tamilnadu)
7906 Shri Devendra Kumar Ji Bhansali, Chennai (Tamilnadu)
7907 Shri Rajesh Kumar Ji Chajjed, Chennai (Tamilnadu)
7908 Smt. Veena Ji Subhash Ji Sankhala, Neelgaris (Tamilnadu)
7909 Smt. Sarla Ji Sharad Ji Surana, Bangalore (Karnataka)
7910 श्री आर.के.बोथरा, मुम्बई (महा.)
7911 Shri Shyam Ji Modi, Hyderabad (A.P.)
7912 Hindustan Finance, Varodara (Gujarat)
7913 Shri Nirmal Kumar Ji Jain, Varodara (Gujarat)
7914 Smt. Swatiben Ji Mahendra Ji Kankaria, Varodara (Gujarat)
7915 Shri Praveen Ji Pincha, Varodra (Gujarat)
7916 Shri Rajesh Ji Bafna, Varodra (Gujarat)
7917 Shri Nagarmal Ji Jain, Varodra (Gujarat)
7918 Shri Vinod Ji Srisrimal, Varodra (Gujarat)
7919 Shri Anand Kumar Ji Kankaria, Varodra (Gujarat)
7920 Shri Ashok Ji Nemichand Ji Taleda, Ahmedabad (Gujarat)
7921 Shri Anand Ji Sohanraj Ji Taleda, Ahmedabad (Gujarat)
7922 Shri Gautam Chand Ji Vijayraj Ji Bohra, Ahmedabad (Gujarat)
7923 Shri Rajendra Bhanwarlal Ji Lalwani,Ahmedabad(Gujarat)
7924 Shri Manoharlal Ji Dinesh Kumar Ji Jain, Ahmedabad (Gujarat)
7925 Shri Mahendra Ji Parasmal Ji Kothari,Ahmedabad(Gujarat)
7926 Shri Maninagar Sthankwasi Jain Sangh, Ahmedabad (Gujarat)
7927 Shri Mithalal Ji Atul Kumar Ji Bohra, Ahmedabad (Gujarat)
7928 Shri Prasannraj Ji Bhanwarlal Ji Kankaria, Ahmedabad (Gujarat)

7929 Shri Pankajbhai Ji A. Kapadia Ji, Ahmedabad(Gujarat)
7930 Shri Hemant Kumar Ji Abhaymal Ji Nahar,Ahmedabad (Gujarat)
7931 Shri Chenraj Ji Jawaharlal Ji Kothari, Ahmedabad (Gujarat)
7932 श्री कनकश्री जी चौरड़िया, बीकानेर (राज.)
7933 Shri Rajesh Kumar Ji Sethia, Chennai (Tamilnadu)
7934 Ritu Ji Surana, Kolkata (W.B.)
7935 Shri Prasanchand Gyanchand Ji Makana,Bangalore (Karnataka)
7936 Shri D. Puranmal Ji Lodha, Mysore (Karnataka)
7937 Shri Jaswanth Kumar Ji Jain, Mysore (Karnataka)
7938 Shri Vimalchand Ji Pitliya, Mysore (Karnataka)
7939 Shri Shantilal Ji Santosh Ji Sakhlecha,Mysore (Karnataka)
7940 Shri Babulal Ji Prakashchand Ji Ranka, Mysore (Karnataka)
7941 Shri Madanlal Ji Surender Kumar Ji Jain, Mysore (Karnataka)
7942 Shri J. Loonchand Ji Jain, Mysore (Karnataka)
7943 Shri Nirmal Kumar Ji Kothari, Mysore (Karnataka)
7944 Shri Mangilal Ji Dhanraj Ji Chordiya, Mysore (Karnataka)
7945 Shri G. Bhikamchand Ji Bafna, Mysore (Karnataka)
7946 Shri A. Parasmal Ji Darla, Mysore (Karnataka)
7947 Shri A. Mangalchand Ji Darla, Mysore (Karnataka)
7948 Shri Rajender Kumar Ji Makana, Mysore (Karnataka)
7249 Shri P. Nemichand Ji Chowdhari Jain, Mysore (Karnataka)
7250 Shri L. Shantilal Ji Chordiya, Mysore (Karnataka)
7951 Shri A. Kevalchand Ji Singhvi, Mysore (Karnataka)
7952 Shri Chandanmal Ji Lunkar, Mysore (Karnataka)
7953 Shri Uttamchand Ji Bafna, Mysore (Karnataka)
7954 Shri B.K.Champalal Ji Makana, Dodballapur (Karnataka)
7955 Shri B. Chenraj Ji Tater, Bangalore (Karnataka)
7956 Shri Motilal Ji Darla, Mysore (Karnataka)
7957 Shri Bhikamchand Ji Pipara, Mysore (Karnataka)
7958 Shri Kanmal Ji Darla, Mysore (Karnataka)
7959 Shri G. Mahaveerchand ji Pipara, Mysore (Karnataka)
7960 Shri S. Jambu Kumar Ji Jain Lalwani, Chengem (Tamilnadu)
7961 Shri Rajender Kumar Ji Ranka, Kallakurichi (Tamilnadu)
7962 Shri Mahender Kumar jI Jain Gadiya, Bangalore (Karnataka)
7963 Shri Deepak Kumar Ji Chordiya, Virdachalam (Tamilnadu)
7964 Shri Sha Tansukhraj Ji Jain Khariwal, Bangalore (Karnataka)
7965 Shri Goutamchand Ji Sankhala, Mysore (Karnataka)
7966 श्री लक्ष्मणप्रसाद जी जैन (अध्यापक), मौजपुर, अलवर (राज.)
7967 श्रीमती मंजु जी धर्मपत्नी श्री सम्पत जी भादविया, नवाणियां, उदयपुर (राज.)

7968 श्री कारूलाल जी तातेड़, डूंगला, चित्तौड़गढ़ (राज.)
7969 श्री गणेश जी कटारिया, इन्दौर (म.प्र.)
7970 Shri Bhanwarlal Ji Inderchand Ji Bamb, Mysore (Karnataka)
7971 Shri Bhanwarlal Mahaveerchand Ji Bamb, Mysore (Karnataka)
7972 Shri Mangilal Ji Munalalji Sethiya, Mysore (Karnataka)
7973 Shri Tejraj Ji Sunil Kumar Ji Kothari, Mysore (Karnataka)
7974 Shri Parasmal Ji Prakashchand Ji Kothari, Mysore (Karnataka)
7975 श्री कान्तिलाल जी इन्दरचन्द जी कांकरिया, ताहाराबाद, नासिक (महा.)
7976 श्री जवरीलाल जी कपूरचन्द जी कांकरिया, ताहाराबाद, नासिक (महा.)
7977 श्री सुभाषचन्द जी मोतीलाल जी कांकरिया, ताहाराबाद, नासिक (महा.)
7978 श्री कान्तिलाल जी शंकरलाल जी दुगड़, वडनेर, नासिक (महा.)
7981 श्री राजीव जी मेहता, पाली-मारवाड़ (राज.)

जिनवाणी को साभार प्राप्त

11000/– श्री एस.एस. कर्णावट मुम्बई, सुपौत्र चि. राहुल (सुपुत्र श्री राजेन्द्र जी कर्णावट) संग शिल्पा का शुभ विवाह दिनांक 25.12.2001 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

2100/– श्री कंवरलाल जी शरदकुमार जी कोठारी, अजमेर, सुपुत्री सौ. कां. अंजना का विवाह चि. प्रकाश, बैंगलोर के संग सम्पन्न होने की खुशी में।

2100/– श्रीमती शशि जी ललवाणी, श्री धनपतचन्द जी ललवाणी, वापी, अपने विवाह की 25वीं वर्षगांठ (सिल्वर जुबली) आनन्द पूर्वक व्यतीत होने की खुशी में।

1111/– श्री महावीर जी बाफणा, जलगांव, श्री नेमीचन्द जी बाफणा (गोटन वाले) का स्वर्गवास दिनांक 7.1.2002 को होने की पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

1100/– श्री पारसमल जी विनायका, बैंगलोर, श्री कंवरलाल जी कोठारी, अजमेर निवासी की सुपुत्री सौ. कां. अंजना का विवाह चिं. प्रकाश, बैंगलोर के संग सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

1100/– श्री सोहनलाल जी बुधमल जी बागमार एवं परिवार, श्री विमलचन्द जी रिबखचन्द जी धोका एवं परिवार मैसूर, मैसूर से आचार्य प्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के धुलिया चातुर्मास में दर्शनार्थ ससंघ आने के उपलक्ष्य में।

1100/– श्री कैलाशचन्द जी कोठारी, जयपुर, अपने सुपौत्र श्री ऐवन्त कुमार जी कोठारी (सुपुत्र श्री अतुल जी श्रीमती श्वेता जी कोठारी) के जन्मोत्सव दिनांक 6.11.2001 के उपलक्ष्य में।

1100/– श्री शांतिचन्द जी कांकरिया, इन्दौर, श्रीमती सज्जनकवर जी धर्मपत्नी श्री सायरचंन्द जी कांकरिया की 21.1.2002 को पुण्यतिथि आने के उपलक्ष्य में।

1000/– श्रीमती उगमा बाई श्री मोहनलाल जी बोहरा, तिरुवनायलै (तमि.), आचार्य श्री के धुलिया चातुर्मास में दर्शनार्थ उपस्थित होने के उपलक्ष्य में।

1000/– श्रीमती मदनबाई श्री पारसमल जी बोहरा, तिरुवनायलै (तमि.), आचार्य श्री के धुलिया चातुर्मास में दर्शनार्थ उपस्थित होने के उपलक्ष्य में।

1000/– गुप्तदान, चेन्नई से जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

1000/– श्री नौरतनमलजी कुशलचन्द जी मेहता, जोधपुर। श्रीमती वीणा जैन (धर्मपत्नी श्री श्रवणकुमार जी रूणवाल, ब्यावर) सुपुत्री श्री नौरतनमल जी मेहता के दिनांक 14.2.2002 को असामयिक देहावसान हो जाने की स्मृति में।

1000/– श्री विमलचन्द जी, श्री रिखबचन्द जी, श्री श्रेणिकराज जी धोका, मैसूर, आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. की 92वीं जन्मजयन्ती के उपलक्ष्य में।

1000/– श्री सिद्धराज जी हरकराज जी जसराज जी गोपाल जी सुराणा, जोधपुर। पूज्य मातुश्री केसरकंवर जी सुराणा की पावन स्मृति में।

501/– श्री अनिल कुमार जी प्रवीण कुमार जी गांग। पूज्य पिताश्री श्री नौरतनमल सा गांग एवं माताजी श्रीमती किरणकंवर जी गांग की शादी के 50 वर्ष पूर्ण होने की खुशी में।

501/– श्री राजेन्द्र कुमार जी डांगी। सुपुत्र पुत्रवधु मनीष–मोनिका के पुत्र रत्न होने की खुशी में ।

500/– श्रीमती सुशीलाबाई जी चौधरी, आरकाट वैल्लौर (तमि.), आचार्य श्री एवं उपाध्याय श्री के धुलिया चातुर्मास में दर्शनार्थ उपस्थित होने के उपलक्ष्य में।

500/– वीर माता–पिता श्री रिखबचन्द जी पुत्र श्री प्रेमकुमार जी बागमार, चेन्नई शान्तस्वभावी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. की सुशिष्या नवदीक्षित महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. के दीक्षा दिवस 7 दिसम्बर पर दर्शनों के उपलक्ष्य में ।

500/– श्री नौरतनमल जी कुशलचन्द जी मेहता, जोधपुर ; सौ. कां. वन्दना सुपुत्री श्री कुशलचन्द जी मेहता, पल्लीपट्ट का 30.11.2001 को चि. राकेश सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द जी गोलेछा, चेन्नई के साथ विवाह सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में ।

500/– श्री दीवानचन्द जी भण्डारी, जोधपुर, सप्रेम भेंट।

500/– श्री शांतिलाल जी, श्री राकेशकुमार जी, श्री महावीरचन्द जी खाबिया, मैसूर , आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. की 92वीं जन्मजयन्ती के उपलक्ष्य में ।

500/– श्री रिखबराज जी कर्णावट, जोधपुर, अपनी सुपौत्री सौ. कां. पूजा (सुपुत्री श्री राजेन्द्र जी कर्णावट, बैंगलोर) का शुभ विवाह चि. जितेश जी (सुपुत्र श्री देवेन्द्र जी सा श्रीश्रीमाल, चेन्नई) के साथ बैंगलोर में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

500/– श्री प्रकाशचन्द जी पगारिया (आर.जे.एस) सिविल न्यायाधीश (व.ख.) मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, कपासन, अपनी पूज्य माताजी व पिताजी की पुण्य स्मृति में।

500/– श्रीमती कौशल्या जी रंगरूप जी चोरड़िया एवं शिल्पा, माधुरी जी चोरड़िया, आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर के दर्शनों के उपलक्ष्य में ।

500/– श्री पारसमल जी चांदमल जी बोहरा, इचलकरणजी, सौ. शकुन्तलाबाई जी मुणोत धर्मपत्नी श्री माणकचन्द जी मुणोत की पुण्य स्मृति में।

300/– श्री गौतमचन्द जी, श्री कीर्ति कुमार जी गादिया, कोयम्बटूर, श्रीमान इन्दरचन्द जी गादिया का स्वर्गवास दिनांक 27.1.2002 को होने की पुण्यस्मृति में ।

251/– श्री जवरीलालजी प्रकाशचन्दजी लूणिया,पल्लीपट्ट,आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं महासती मण्डल के धुलिया चातुर्मास में दर्शन करने के उपलक्ष्य में।

251/– श्री उगमराज जी श्रीमती चांदकंवर जी सुराणा, कोटा, अपनी दोनों सुपौत्री कु. आस्था एवं कु. पूजा जी सुराणा (सुपुत्री श्री महेन्द्र जी सुराणा, सीनियर आई.ए. एस.तथा श्रीमती प्रमिला जी सुराणा, सीनियर आई.ए.एस.) के इन्जीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश लेने की खुशी में ।

251/– श्री उगमराज जी श्रीमती चांदकंवर जी सुराणा, कोटा, अपने सुपुत्र श्री राजेन्द्र जी सुराणा का न्यू इण्डिया एश्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड में डिवीजन्स मैनेजर से पदोन्नत होकर डिप्टी मैनेजर होने पर मुम्बई कार्यालय में काम संभालने की खुशी में ।

251/– श्री जानकीलाल जी, श्री मिश्रीलाल जी बोहरा, भवानीमण्डी, अपने सुपौत्र चि. मनोज (सुपुत्र श्री भंवरसिंह जी बोहरा, जयपुर) का शुभ विवाह सौ. का. प्रियदर्शना (सुपुत्री श्री बलवन्त सिंह जी चोरड़िया, झालरापाटन) के साथ जैन–विधि से सम्पन्न होने की खुशी में।

251/– श्री नगराज जी सेठिया, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री नितेश जी जैन एम.टेक, सुपौत्र स्व. श्री हरकचन्द जी सेठिया का इन्जिनियरिंग रिसर्च सेन्टर, टेलको, पुणे में सीनियर इन्जिनियर के पद पर केम्पस सलेक्शन होने के उपलक्ष्य में ।

251/– श्री मोहनलाल जी संचेती, मूथा, रायचूर, सुपौत्र चि. अश्विन कुमार व सौ. का. मनीषा के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

251/– वीरपिता श्री सुकनराज जी गुगलिया, हैदराबाद(आन्ध्रप्रदेश), सुपुत्र चि. राजेश कुमार के पुत्ररत्न जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में ।

251/– श्रीमती विजया बाई जी मेहता, होसपेट, धुलिया विराजित परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में ।

251/– श्री रूपचन्द जी रतनलाल जी लुणावत, पीपाड़ सिटी। चि. जितेन्द्र लुणावत सुपुत्र श्री रतनराज जी लुणावत का सौ. कां चंचल सुपुत्री श्री शांतिलाल जी कोठारी के मंगल परिणय दिनांक 22.2.2002 की खुशी में।

201/– श्री शांतिलाल जी राजेन्द्र प्रसाद जी जैन, बजरिया, सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताजी की पुण्य स्मृति में।

201/– श्री मगनचन्द जी जैन अध्यापक, फाजिलाबाद, हिण्डौन, आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की जन्म जयन्ती दिनांक 27.1.2002 के उपलक्ष्य में।

200/– श्री एस.सी. बाफना, सूरत, आर्थिक सहयोग के रूप में जिनवाणी को भेंट।

200/– श्री देवराज जी नाहर, चेन्नई, पूज्य आचार्यप्रवर आदि ठाणा के दर्शनों के उपलक्ष्य में ।

200/– गुप्तदान, आचार्य प्रवर के दर्शनों की खुशी में ।

200/– श्री प्रकाशचन्द जी बोथरा, चेन्नई, आचार्यश्री के दर्शन करने की खुशी में ।

150/– श्री कुशलराज जी मेहता, श्री वर्द्ध.स्था. श्री संघ, कोटा, श्री लक्ष्मीलाल जी जारोली का स्वर्गवास 10.11.2001 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

150/– श्री सम्पतराज जी बाघमार, जबलपुर, धुलिया विराजित परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में ।

120/– श्री वर्द्धमान जैन स्थानक संघ, कोटा, पर्युषण पर्व सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में ।

111/– श्री नवनीत कुमार एवं किरणलाल जी जैन, होशियारपुर, अपनी नई कोठी में प्रवेश के उपलक्ष्य में ।

111/– गुप्तदान दाता, जोधपुर। परमपूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का धूलिया में ऐतिहासिक चातुर्मास होने की खुशी में।

101/– श्री नौरतनमल जी, श्री प्रवीण कुमार जी गांग, जोधपुर, श्री अखिल कुमार जी गांग सुपुत्र श्री अनिल कुमार जी गांग के 15वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में ।

101/– श्री देवेन्द्र नाथ जी मोदी, जोधपुर। स्व. श्री हुकमनाथ जी मोदी की 20वीं पुण्यतिथि पर स्मरणांजलि स्वरूप जिनवाणी को भेंट।

101/– श्री राजेन्द्र कुमार सुपुत्र श्री मनोजकुमार जी, मदनगंज के पुत्र प्राप्ति के उपलक्ष्य में श्री विमलचन्द जी एवं शान्तिदेवी सुराणा, ब्यावर द्वारा ।

101/– राजकंवर बाई जी सुराणा, मैसूर, भाई गणेशमल जी के साथ, आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा की सेवा में धुलिया पर्युषण पर्व मनाने की खुशी में ।

101/– श्री खुशालचन्द जी पारसमल जी लोढ़ा द्वारा मैसर्स पिस्ना इण्डस्ट्रीज की ओर से चि. अनिल जी लोढ़ा की अठाई एवं आचार्य श्री के दर्शन के उपलक्ष्य में ।

101/– श्री शांतिलाल जी राजेन्द्र कुमार जी एण्डवा वाले, अपनी पूज्य माताश्री की पुण्य स्मृति में ।

100/– श्री भीकमचन्द जी भंसाली, जोधपुर; श्रीमती रूकमादेवी धर्मपत्नी श्री दीपचन्द जी भंसाली की पुण्य तिथि पर जिनवाणी को भेंट।

100/– श्री संतोषमल जी बम्ब, जयपुर, धुलिया विराजित परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा के दर्शनों की खुशी में ।

100/– श्री स्वरूपचन्द यू. संचेती जी, ब्रह्मशेवाग चालीसगांव, सप्रेम भेंट ।

100/– श्री ज्ञानचन्द जी सम्पतराज जी सोनी, टांटोटी (अजमेर), श्री मोखमसिंह जी सोनी की पावन स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

100/– श्री विरेन्द्र कुमार जी, श्री धीरज कुमार जी जैन, मुम्बई, पूज्य माताजी स्व. श्रीमती सरस्वती देवी धर्मपत्नी श्री गंगाप्रसाद जी जैन की पुण्य स्मृति में।

100/– श्री नागसेठिया आतिश पवनलाल जी आमोदा (शिरपुर) सप्रेम भेंट।

51/– श्री अजीत जी खुशालचन्द जी लोढ़ा, नन्दुरबार, महासती श्री चन्द्रकला जी म. सा. के स्वास्थ्य-लाभ की भावना से सप्रेम भेंट।

51/– श्रीमती भगवती देवी जैन, भरतपुर,, आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की 92वीं जन्मजयन्ती के उपलक्ष्य में ।

51/– श्री हरीशचन्द जी जैन, मौजपुर, अपने सुपुत्र की शादी के उपलक्ष्य में ।

51/– श्रीमती शशिकान्ता जी जैन, भरतपुर, जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

50/– श्री भागचन्द जी जैन, गंगापुर सिटी, सुपुत्री कु. भावना जैन के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में ।

50/– श्री राकेश कुमार जी जैन, रूपवास, सुपुत्र श्री तन्मय कुमार के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में ।

जैनागम विशेषांक हेतु साभार

1000/– श्री सोहनराज जी, बुधमल जी, सम्पतराज जी, राजेन्द्र कुमार जी बाघमार, मैसूर।

500/– श्री देवराज जी नाहर, श्री उत्तमचन्द जी कांकरिया, श्री प्रकाशचन्द जी बोथरा, चेन्नई ।

500/– श्री अमरचन्द जी जितेन्द्र कुमार जी लोढ़ा, जोधपुर।

500/– श्री जवरीमल जी खींवसरा, जोधपुर।

500/– श्री अमोल जैन ज्ञानालय, धूले।

500/– श्री जवाहरलाल जी बाघमार, चेन्नई।

500/– श्री पदमचन्द जी पींचा, चेन्नई।

500/– श्री गौतमचन्द जी चोरड़िया, चेन्नई।

500/– श्री शांतिलाल जी कमलचन्द जी चौधरी, चेन्नई।

500/– श्री आर. प्रसन्नचन्द जी चोरड़िया, चेन्नई।

500/– श्री हनुमानचन्द जी, गौतमचन्द जी सेठिया, बैंगलोर।

500/– श्री उम्मेदराज जी राजेश कुमार जी सिंघवी, मैसूर।

500/– श्री फूलचन्द जी निर्मल कुमार जैन, पोखर चौडाकि (महुआ–दौसा)।

500/– श्री कमल जी मेहता, अलवर

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को साभार प्राप्त

25000/–श्री रामदयाल जी जैन (सर्राफ), सवाईमाधोपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को आर्थिक सहयोग हेतु सप्रेम भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार.प्राप्त

67000/–श्री जी.एस. प्यारेलाल जी जैन (कोठारी) चेन्नई, पुस्तक "हीरा प्रवचन-पीयूष भाग–1" के प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग सप्रेम प्राप्त।

50000/–श्री जे. हीरालाल जी, श्री जे. पन्नालाल जी, श्री जे. माणकचन्द जी, श्री जे. मोतीलाल जी ओस्तवाल, चेन्नई, पुस्तक "दशवैकालिक सूत्र" के प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग सप्रेम प्राप्त।

21000/–श्री एस.भंवरलाल जी, श्री बी. नवरतनमल जी, श्री बी. राकेशकुमार जी, श्री बी. विक्रम कुमार जी बाघमार, चेन्नई, पुस्तक "गजेन्द्र व्याख्यानमाला भाग–7" के प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग सप्रेम प्राप्त ।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार-प्राप्त

35000/–स्वाध्याय समिति, चेन्नई।

5000/– श्री कल्याणमल चंचलमल चोरड़िया ट्रस्ट, जोधपुर।

5000/– श्री कल्याणमल चंचलमल चोरडिया ट्रस्ट, जोधपुर

1000/– श्री कल्याणमल प्रकाशमल चोरड़िया ट्रस्ट, जोधपुर।

500/– श्री पन्नालाल जी बांठिया, गंगावती।

500/– श्री ज्ञानराज जी अब्बानी सेवा ट्रस्ट, जोधपुर।

व्यक्तिगत पर्युषण सहायता

1200/– श्री जौहरीमल जी चाम्बड़, जोधपुर।

स्वाध्याय संघ शाखा, बजरिया को प्राप्त सहायता

501/– श्री महावीर प्रसाद जी सुनिल कुमार जी लोहिया, बजरिया, सवाईमाधोपुर; सुपुत्र चि. विरेन्द्र के दिनांक 9.12.2001 को विवाह सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/– श्री बाबुलाल जी जैन समीदी वाले, सवाईमाधोपुर, चि. पवनकुमार के विवाहोपलक्ष्य में स्वाध्याय संघ को सप्रेम भेंट।

501/– श्री महावीर प्रसाद जी जैन, पान वाले, बजरिया, सवाईमाधोपुर चि. राजेश के 5.3.2002 को सम्पन्न विवाह के उपलक्ष्य में स्वाध्याय संघ को सप्रेम भेंट।

501/– श्री गोपाललाल जी जैन वैद्य, अलीगढ, सुपुत्र विनोद कुमार के 21 फरवरी 02 को सम्पन्न विवाहोपलक्ष्य में स्वाध्याय संघ को सप्रेम भेंट।

501/– श्री रतनलाल जी रविकान्त जी एण्डवा वाले, बजरिया, सवाईमाधोपुर चि. चन्द्रकान्त के विवाह की खुशी में।

251/– श्री बाबूलाल जी जैन, पटवारी, डेकवा वाले, बजरिया, सवाईमाधोपुर, चि. एवन्ता कुमार के 15.2.2002 को सम्पन्न विवाह के उपलक्ष्य में।

251/– श्री बदरीलाल जी विनोदकुमार जी सींगोर वाले, सवाईमाधोपुर, अपने सुपुत्र का विवाह 15.2.2002 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में ।

251/– श्री दिलीपकुमार जी महेन्द्र कुमार जी यशलहा, मानटाउन, सवाईमाधोपुर, चि. गजेद्र के 28.2.2002 को सम्पन्न विवाह के उपलक्ष्य में।

251/– श्री रतनलाल जी राजेन्द्र कुमार जी रजवाणा वाले, जयपुर, चि. प्रमोद के विवाहोपलक्ष्य में।

251/– श्री राजमल जी चन्द्रप्रकाश जी करेला वाले, सवाईमाधोपुर, चि. बिजेन्द्र के विवाहोपलक्ष्य में।

251/– श्री सूरजमल जी धर्मचन्द जी करेला वाले, सवाईमाधोपुर, चि. सुनिल के विवाहोपलक्ष्य में।

201/– श्री शान्तिलाल जी राजेन्द्र प्रसाद जी जैन, एण्डवा वाले, बजरिया, सवाईमाधोपुर, अपने पिताश्री रामगोपाल जी की पुण्यस्मृति में।

101/– श्री रामप्रसाद जी बाबूलाल जी, सुमेरगंजमण्डी, सप्रेम भेंट।

101/– श्री दिनेश दयाल जी जैन, अध्यापक फलोदी क्वारी, अपने सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में।

101/– श्री मोहनलाल जी ताराचन्द जी जैन शाह सवाईमाधोपुर, श्री ताराचन्द जी के सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में ।

101/– श्रीमान लड्डूलाल जी सुरेन्द्र कुमार जी 'चकेरीवाले' महावीर नगर, आलनपुर, चि. पदमकुमार के शुभ विवाह की खुशी में।

जीवदया हेतु साभार-प्राप्त

100/– श्री प्रिन्स संचेती चेरिटेबल ट्रस्ट, ब्यावर, श्री प्रिन्स जी संचेती सुपुत्र श्री इन्दरचन्द जी संचेती की द्वितीय पुण्य तिथि पर जीवदया हेतु भेंट।

100/– श्री मांगीलाल जी दिनेशकुमार जी नागौरी, पारसौली, चित्तौड़गढ, दिनेश कुमार जी की मातुश्री श्रीमती फूलबाई की पुण्यस्मृति पर जीवदया हेतु भेंट।

जह जह सुयमवगाहइ अइसयरसपसर संजुय उव्वं ।
तह तह पल्हाइ मुनी, नवनव सेवग सद्धाए ॥

अर्थात् - अतिशय प्रशान्त रस के संचार से युक्त ज्यों ज्यों नये शास्त्रों में मुनि अवगाहन-प्रवेश करता जाता है। त्यों-त्यों नये उत्कट मोक्ष भाव में श्रद्धा बढने से मुनि को आह्लाद उत्पन्न होता है।

सुत्रकृतांग से संकलित

With Best Compliments From :

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
© 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051

Rajendra Daga

JAI MAHAVEER JAI GURU HASTI

With Best Compliments From :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 5, CAR STREET, POONAMALLEE
CHENNAI-600 056
PHONE : 6272609

BANKERS : PHONE / 6272906

No. 5 A, CAR STREET,
POONAMALLEE
CHENNAI-600 056

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company With Fraternity Feel, Holding Hands With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

★ Bangalore ★ Coimbatore ★ Ernakulam ★
★ Kollidam ★ New Delhi ★

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

''आचार्य श्री हस्ती''

With Best Compliments From :

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2,CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है ,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।
- आचार्य श्री हस्ती

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

परंपरागत कलाकृती का
बेहतरीन अलंकार...

आधुनीक युगका
सुवर्ण श्रृंगार..!

हम पीढियों से दे रहे हैं
आपकी भावनाओं को शुद्ध, सच्चे व बेमिसाल आभूषणों की शक्ल.
आप बरसों से कर रहे हैं हमारे रिश्तों पर खरे मन से विश्वास...

A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854

मै. राजमल लखीचंद
(गोल्ड एम्पोरियम)
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव-४२५ ००१, (महाराष्ट्र) फोन : (०२५७) २२६६८१, ८२, ८३

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/2803/02

THE CLOSEST YOU CAN STAY TO KANDIVALI STATION.

Kalpataru Vatika-Phase II, is an imposing 14 storeyed residential tower that is far away from the hustle and bustle, yet near enough to the station.

It features 2 wings each having 4 apartments per floor of 2 BHK. It offers superior quality amenities (already developed) within the complex such as lush landscaped garden, swimming pool, club house with gymnasium, steam and sauna.

While Kalpataru Vatika-Phase I is already complete, with 4 wings of 7 storeys each, Kalpataru Vatika-Phase II is well under construction.

For further details or for a site visit, call Sangeeta or Rajeev at 282 2679/282 2888.

KALPA-TARU

Site address: Akurli Road, Opposite ESIS Hospital, Kandivali (East). Tel: 887 1911.
Kalpataru Group of Companies: 111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021. Fax: 204 1548 / 288 4778.
E-mail: sales@kalpataru.com or visit us at www.kalpataru.com

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।